वर्ष 24, अंक 265, पृष्ठ 08, मूल्य: 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 2 अप्रैल 2025 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

वक्फ बिल पर मोदी सरकार का समर्थन करने को कैसे राजी हुए चंद्रबाबू नायडू?

नई दिल्ली

केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि लोकसभा की कार्य मंत्रणा समिति (बीएसी), जिसमें अध्यक्ष ओम बिरला की अध्यक्षता में सभी प्रमुख दलों के नेता शामिल हैं, ने आठ घंटे की बहस पर सहमति व्यक्त की है, जिसे सदन की राय जानने के बाद बढ़ाया जा सकता है।

वक्फ संशोधन विधेयक, 2024 ने बुधवार को लोकसभा में हंगामे का मंच तैयार कर दिया है। भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने इसे चर्चा और पारित करने के लिए सदन में पेश करने की तैयारी में है, जबकि विपक्ष के लगातार हंगामे के बीच मंगलवार को इंडिया ब्लॉक की पार्टियों ने प्रस्तावित कानून को असंवैधानिक बताते हुए सदन से वॉकआउट कर दिया। इंडिया ब्लॉक की पार्टियों ने पहले से ही वक्फ को लेकर सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है।

केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि लोकसभा की कार्य मंत्रणा समिति (बीएसी), जिसमें अध्यक्ष ओम बिरला की अध्यक्षता में सभी प्रमुख दलों के नेता शामिल हैं, ने आठ घंटे की बहस पर सहमति व्यक्त की है, जिसे सदन की राय जानने के बाद बढ़ाया जा सकता है। बैठक के दौरान सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच बिल को लेकर तीखी बहस के शुरूआती

संकेत मिले, क्योंकि कांग्रेस और कई अन्य भारतीय ब्लॉक के सदस्यों ने सरकार पर उनकी आवाज दबाने का आरोप लगाते हुए सदन से वॉकआउट कर दिया। हालांकि, राजनीतिक तनाव और बहस की लंबाई के कारण नतीजे पर असर पड़ने की संभावना नहीं है, क्योंकि सत्तारूढ़ भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के पास लोकसभा में मजबूत बहुमत है।

आपको बता कें कि कानून बनने के लिए, वक्फ संशोधन विधेयक को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित होने से पहले लोकसभा और फिर राज्यसभा में पारित होना चाहिए। फिलहाल एनडीए के पास सदन में 293 सीटें हैं, जिसमें वर्तमान में 542 सांसद हैं।

भाजपा अक्सर स्वतंत्र सदस्यों और छोटी पार्टियों से समर्थन हासिल करने में सफल रही है। भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए को लोकसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त है, जहाँ विधेयक पारित करने के लिए 272 मतों की आवश्यकता होती है। एनडीए को समर्थन देने वाले 293 सांसदों में से भाजपा के 240 सदस्य हैं, उसके बाद तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के 16, जनता दल (यूनाइटेड) के 12, शिवसेना के सात, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के पाँच, तथा राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी), जनता दल-सेक्युलर (जेडीएस), जन सेना पार्टी (जेएसपी) तथा सात अन्य के दो-दो सदस्य हैं। लोकसभा की कुल सदस्य संख्या 542 है।

नीतीश-नायडू पर सबकी नजर

भाजपा को अपने सहयोगियों से पूरा समर्थन मिलने का भरोसा है, क्योंकि संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) ने उनकी चिंताओं का समाधान कर दिया है। इसी तरह, नीतीश कुमार की जेडीयू ने भी विधेयक के लिए अपने समर्थन का संकेत दिया है, वरिष्ठ नेता केसी त्यागी ने कहा कि पार्टी ने केंद्र के साथ अपनी चिंताओं को साझा किया है और उन्हें उम्मीद है कि उनका समाधान किया जाएगा। विपक्षी दलों ने इस विधेयक का कड़ा विरोध किया है और इसे असंवैधानिक तथा मुस्लिम समुदाय के हितों के लिए हानिकारक बताया है। कई प्रमुख मुस्लिम संगठन इस विधेयक के खिलाफ सक्रिय रूप से समर्थन जुटा रहे हैं।

केंद्र की एनडीए सरकार की प्रमुख सहयोगी चंद्रबाबू नायडू की तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) ने वक्फ (संशोधन) विधेयक को समर्थन देने की घोषणा की है, जिससे इस विधेयक पर कई दिनों से चल रही अटकलों का अंत हो गया है। टीडीपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रेम कुमार जैन ने कहा, "पूरा मुस्लिम समुदाय वक्फ संशोधन विधेयक के पेश होने का इंतजार कर रहा है।

हमारी पार्टी इसका समर्थन करेगी। चंद्रबाबू नायडू पहले ही कह चुके हैं कि हम मुस्लिम समुदाय के हितों के लिए काम करेंगे। कल विधेयक पेश किया जाएगा, उसके बाद ही हम इस पर कोई टिप्पणी करेंगे। मैं आपको भरोसा दिलाता हूं कि चंद्रबाबू नायडू मुसलमानों के पक्ष में हैं।"

पंजाब मुख्यमंत्री का मिशन रोजगार जारी, अब तक युवाओं को 55,000 से अधिक सरकारी नौकरियां दी

चंडीगढ़: मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार ने 'मिशन रोजगार' को जारी रखते हुए अपने 36 महीने के कार्यकाल के दौरान युवाओं को 55,000 से अधिक सरकारी नौकरियां देकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। आज यहां 700 से अधिक शिक्षकों को नियुक्ति पत्र सौंपने के अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने इस ऐतिहासिक मौके पर नव-नियुक्त शिक्षकों को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि वे अपनी ड्यूटी पूरी मेहनत से निभाएंगे। उन्होंने कहा कि यह नौकरी शिक्षकों की कड़ी

मेहनत और समर्पण का फल है, क्योंकि उनकी सरकार युवाओं को पारदर्शी तरीके से नौकरियां दे रही है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य में शिक्षा क्रांति का युग शुरू हो चुका है, क्योंकि स्कूलों के बुनियादी ढांचे का कायाकल्प किया जा रहा है।

संविधान को चुनौती दे रही है भाजपा: अखिलेश

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उससे जुड़े संगठन भारतीय संविधान को चुनौती दे रहे हैं। अखिलेश यादव ने मंगलवार को जारी बयान में कहा कि शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने संविधान सम्मत कानूनराज का सपना देखा था। बाबा साहब अम्बेडकर ने संविधान में एक नए भारत की कल्पना की, सामाजिक न्याय की प्रेरणा दी ।

जलवायु परिवर्तन और न्यायिक सुधार, संसद में क्यों उठे ये दोनों मुद्दे

नई दिल्ली

देश में किसानों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार की ओर से प्रतिबद्धता जताते हुए कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को कहा कि आम की ऐसी किस्म विकसित की जा रही हैं, जिन पर जलवायु परिवर्तन का कोई असर नहीं पड़ेगा।

संसद का बजट सत्र चल रहा है। हाल के दिनों में हमने देखा कि किस तरीके से संसद के दोनों सदनों में अलग-अलग मुद्दे उठे हैं। आज भी संसद के दोनों सदनों में कई मुद्दों पर चर्चा हुई है। इसी कड़ी में आज हम आपको जलवायु परिवर्तन और न्यायिक सुधारों के बारे में बताने जा रहे हैं कि दोनों ही मुद्दे को आज संसद में उठाया गया है। तो चलिए हम आपको इन दोनों ही मुद्दों पर आसान भाषा में पूरी जानकारी देते हैं।

देश में किसानों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार की ओर से प्रतिबद्धता जताते हुए कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को कहा कि आम की ऐसी किस्म विकसित की जा रही हैं, जिन पर जलवायु परिवर्तन का कोई असर नहीं पड़ेगा। चौहान ने लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान कहा कि देश में किसानों के सामने अनेक चुनौतियों के साथ ही जलवायु परिवर्तन का संकट भी है और इस बार के बजट में कृषि क्षेत्र के लिए 1,37,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का बजट इन्हीं संकटों से निपटने के लिए पारित किया गया है।

वंदना कटारिया ने अंतरराष्ट्रीय हॉकी को कहा अलविदा

दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी की दिग्गज खिलाड़ी वंदना कटारिया ने आधिकारिक रूप से अंतरराष्ट्रीय हॉकी से संन्यास ले लिया हैं।

फरवरी 2025 में भुवनेश्वर में एफआईएच प्रो लीग के दौरान भारत के लिए अपना आखिरी मैच खेलने वाली वंदना कटारिया ने संन्यास की घोषणा की है। इसके साथ उनके 15 साल से अधिक लंबे असाधारण करियर का अंत हो गया। वंदना ने कहा कि यह फैसला आसान नहीं था, लेकिन मुझे पता है कि यह सही समय है। हॉकी मेरी जिंदगी रही है और भारतीय जर्सी पहनना सबसे बड़ा सम्मान था। हर यात्रा का अंत होता है और मैं गर्व, आभार और खेल के लिए प्यार के साथ संन्यास ले रही हूं। भारतीय हॉकी अच्छे हाथों में है और मैं हमेशा इसकी सबसे बड़ी समर्थक रहूंगी। इसके साथ ही उन्होंने कहा, मैं अपने कोचों, साथियों, सपोर्ट स्टाफ, हॉकी इंडिया, अपने परिवार और सभी फैंस का धन्यवाद करना चाहती हूं जिन्होंने मुझे वर्षों तक समर्थन दिया। हर उत्साहवर्धन, हर संदेश, हर प्रोत्साहन शब्द मेरे लिए बहुत मायने रखते थे।

दिल्ली में सेना के कमांडर्स का सम्मेलन, सुरक्षा स्थिति की होगी समीक्षा

नई दिल्ली। भारतीय सेना के कमांडर्स देश की सुरक्षा स्थिति की समीक्षा करेंगे। सुरक्षा आकलनों साथ ही साथ सुरक्षा के क्षेत्र में उभरती चुनौतियों से निपटने के तौर तरीकों पर भी विचार किया जाएगा। इसके लिए सेना के कमांडरों का सम्मेलन नई दिल्ली में शुरू हो गया है।

रक्षा मंत्रालय के मुताबिक सैन्य कमांडर्स का यह सम्मेलन 1 अप्रैल से शुरू हुआ है और यह 4 अप्रैल तक जारी रहेगा। सम्मेलन में भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारी समग्र सुरक्षा स्थिति की समीक्षा करेंगे। यह कमांडर्स सम्मेलन उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए प्रमुख परिचालन प्राथमिकताओं पर विचार-विमर्श करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह कमांडर्स सत्र की अध्यक्षता करेंगे और मुख्य भाषण देंगे। इस सत्र में भारतीय सेना में 'सुधारों के वर्ष' पर एक प्रस्तुति भी शामिल होगी। कमांडर्स सम्मेलन में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) द्वारा सेना के वरिष्ठ नेतृत्व को भी संबोधित किया जाएगा। सम्मेलन में नीति आयोग के सीईओ द्वारा 'सक्षम एवं सशक्त भारत' के निर्माण में सशस्त्र बलों की परिकल्पित भूमिका पर एक व्याख्यान भी दिया जाएगा। भारतीय सेना के तकनीकी रूप से सक्षम अधिकारी यहां विशेषज्ञों के साथ गहन विचार-विमर्श में भी शामिल होंगे। भविष्य के लिए तैयार सेना के लक्ष्य के अनुरूप ये वरिष्ठ पदानुक्रम अधिकारी प्रभावी निर्णय लेने के लिए नई पद्धतियों की शुरूआत के लिए भी चर्चा करेंगे।

दिल्ली दंगों में भूमिका को लेकर होगी जांच, आप बोली- क्या वह मंत्री बनने के लायक हैं?

कपिल मिश्रा को लगा बड़ा झटका

नई दिल्ली

अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट वैभव चौरसिया ने फैसला सुनाते हुए कहा कि पहली घटना के संबंध में आगे की जांच शुरू की जाए क्योंकि शिकायतकर्ता ने संज्ञेय अपराध का खुलासा किया है। कपिल मिश्रा के खिलाफ हम आगे की जांच का निर्देश दे रहे हैं क्योंकि हमारा प्रथम दृष्टया मानना ??है कि यह संज्ञेय अपराध है।

दिल्ली की एक अदालत ने मंगलवार को दिल्ली पुलिस को 2020 के उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगों में कथित संलिप्तता को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता कपिल मिश्रा के खिलाफ आगे की जांच करने का आदेश दिया। यह मामला यमुना विहार निवासी मोहम्मद इलियास द्वारा अगस्त 2024 में दायर एक याचिका से संबंधित है, जिसमें दयालपुर पुलिस स्टेशन के तत्कालीन स्टेशन हाउस ऑफिसर (एसएचओ) मिश्रा और तीन भाजपा नेताओं मुस्तफाबाद विधायक मोहन सिंह बिष्ट और पूर्व विधायक जगदीश प्रधान और सतपाल सांसद सहित पांच अन्य के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की गई थी।

मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने क्या कहा

अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट वैभव चौरसिया ने फैसला सुनाते हुए कहा कि पहली घटना के संबंध में आगे की जांच शुरू की जाए क्योंकि शिकायतकर्ता ने संज्ञेय अपराध का खुलासा किया है। कपिल मिश्रा के खिलाफ हम आगे की जांच का निर्देश दे रहे हैं क्योंकि हमारा प्रथम दृष्टया मानना ??है कि यह संज्ञेय अपराध है। कपिल मिश्रा को इलाके में देखा गया था। इलियास का प्रतिनिधित्व कर रहे अधिवक्ता महमूद प्राचा ने आरोप लगाया कि 23 फरवरी, 2020 को उन्होंने मिश्रा और उनके सहयोगियों को कर्दमपुरी में एक सड़क को अवरुद्ध करते और रेहड़ी-पटरी वालों की गाड़ियों को नष्ट करते देखा।

फरवरी में, दिल्ली पुलिस ने अदालत को बताया कि जांच में मिश्रा को गलत तरीके से फंसाने की साजिश का पता चला है। कोर्ट के आदेश पर आप नेता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि कपिल मिश्रा ने दिल्ली में किस तरह दंगे भड़काए, यह तो सभी ने देखा।

किताब लेकर भागती बच्ची, वो वीडियो जिसने सुप्रीम कोर्ट को भी हिलाकर रख दिया

नई दिल्ली

न्यायमूर्ति ए.एस. ओका और न्यायमूर्ति भुयान की पीठ ने उत्तर प्रदेश में ध्वस्तीकरण के तरीके पर गहरी चिंता व्यक्त की। पीठ ने नगर निगम को आदेश दिया कि वह अदालत में आने वाले प्रत्येक घर के मालिक को 10 लाख रुपए का मुआवजा दे, जिसमें एक वकील, एक प्रोफेसर और दो महिलाएँ शामिल हैं, जिनके घर इस अभियान में ध्वस्त कर दिए गए थे। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार

पर कड़ा प्रहार करते हुए 2021 के ध्वस्तीकरण अभियान को 'अमानवीय और अवैध' करार दिया। सुनवाई के दौरान, अदालत ने एक वायरल वीडियो पर ध्यान दिया, जिसमें अंबेडकर नगर में एक आठ वर्षीय लड़की अपनी किताबें पकड़कर भागती हुई दिखाई दे रही है, जबकि एक बुलडोजर झुग्गियों को गिरा रहा है। दिवंगत गैंगस्टर-राजनेता अतीक अहमद के भूखंड के झूठे आधार पर घरों को गिराने के लिए यूपी सरकार और प्रयागराज के नागरिक अधिकारियों की खिंचाई करते हुए, न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां ने कहा कि एक वीडियो है जिसमें एक बुलडोजर द्वारा छोटी झोपड़ियों को ध्वस्त किया जा रहा है, और एक छोटी लड़की अपनी किताबें लेकर भाग रही है।

पुंछ में पाकिस्तान की नापाक हरकत! भारतीय सेना ने समेट दिया

पुंछ

पाकिस्तानी सेना के चार से पांच घुसपैठिए मारे गए हैं, हालांकि अभी तक इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। रुक-रुक कर गोलीबारी जारी है और कृष्णा घाटी इलाके में भारतीय सेना पूरी तरह से तैनात है।

जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले के कृष्णा घाटी इलाके में पाकिस्तानी सेना की घुसपैठ की कोशिश को सफलतापूर्वक नाकाम कर दिया गया। पाकिस्तानी सेना और घुसपैठियों ने गोलीबारी की, जिसके बाद भारतीय सेना ने भी जवाबी कार्रवाई की। सूत्रों के मुताबिक, पाकिस्तानी सेना के चार से पांच घुसपैठिए मारे गए हैं, हालांकि अभी तक इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। रुक-रुक कर गोलीबारी जारी है और कृष्णा घाटी इलाके में भारतीय सेना पूरी तरह से तैनात है।

कठुआ में फिर से मुठभेड़ शुरू हुई इससे पहले, जम्मू-कश्मीर के कठुआ में सोमवार रात को तलाशी अभियान के दौरान पुलिस की एक टीम पर आतंकवादियों की गोलीबारी के बाद आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच फिर से मुठभेड़ शुरू हो गई थी। एक अधिकारी के अनुसार, रामकोट बेल्ट के पंजतीर्थी इलाके में अभी भी ऑपरेशन जारी है, क्योंकि बताया जा रहा है कि तीन आतंकवादी फंसे हुए हैं। पिछले आठ दिनों में यह इस तरह की तीसरी मुठभेड़ है।

किसान कल्याण मोदी सरकार की गारंटी

न्यायिक सुधारों की राज्यसभा में उठी मांग

नई दिल्ली

समाजवादी पार्टी (सपा), तृणमूल कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दलों के सांसदों ने मंगलवार को लोकसभा में शून्यकाल के दौरान कुछ मुद्दों को लेकर हंगामा किया, जिसके कारण सदन की कार्यवाही अपराह्न दो बजे तक के लिए स्थगित करनी पड़ी। सदन में प्रश्नकाल समाप्त होते ही अध्यक्ष ओम बिरला ने विभिन्न विपक्षी सदस्यों के कार्य स्थगन नोटिस की सूचना दी।

बजट सत्र के अंतिम चार दिन बचे है। इसके हंगामेदार रहने की उम्मीद है। इसका बड़ा कारण यह है कि सरकार बुधवार को वक्फ संशोधन विधेयक को पारित कराने की तैयारी कर रही है। दूसरी ओर प्रतिद्वंद्वी दलों का कड़ा विरोध है। आज ही लोकसभा में शून्यकाल के दौरान विपक्षी सदस्यों का हंगामा देखने को मिला। लोकसभा में तटीय नौवहन विधेयक, 2024 पर चर्चा हुई। राज्यसभा में विपक्ष के नेता खरगे ने जनगणना व जातिगत जनगणना जल्दी कराने की मांग की।

लोकसभा की कार्यवाही

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को इस बात पर जोर दिया कि मोदी सरकार कृषि आय बढ़ाने और किसानों को अंतरराष्ट्रीय उर्वरक कीमतों में बढ़ोतरी से बचाने के लिए प्रतिबद्ध है। लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान बोलते हुए उन्होंने कहा, "हमारा लक्ष्य कृषि आय बढ़ाना है और हम इस लक्ष्य को हासिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। किसान कल्याण मोदी सरकार की गारंटी है।"

समाजवादी पार्टी (सपा), तृणमूल कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दलों के सांसदों ने मंगलवार को लोकसभा में शून्यकाल के दौरान कुछ मुद्दों को लेकर हंगामा किया, जिसके कारण सदन की कार्यवाही अपराह्न दो बजे तक के लिए स्थगित करनी पड़ी। सदन में प्रश्नकाल समाप्त होते ही अध्यक्ष ओम बिरला ने विभिन्न विपक्षी सदस्यों के कार्य स्थगन नोटिस की सूचना दी। इसी दौरान सपा, तृणमूल कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के सदस्य कुछ मुद्दे को लेकर नारेबाजी करने लगे। कुछ सपा सदस्यों के हाथों में तख्तियां भी थीं। अध्यक्ष बिरला ने सदस्यों से तख्ती और पोस्टर नहीं दिखाने का आग्रह करते हुए कहा, ह्यह्यअगर आप तख्ती लेकर आएंगे तो सदन नहीं चलेगा। मैं शून्यकाल में आपको सभी मुद्दों पर बोलने की अनुमति दूंगा।ह्वह्व सपा के सदस्य अपने नेता अखिलेश यादव को बोलने देने की मांग कर रहे थे। इस दौरान कुछ सदस्य आसन के समीप आ गए।

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने मंगलवार को लोकसभा में कहा कि भारत की टैरिफ (प्रशुल्क) नीति का उद्देश्य व्यापार को विनियमित करना, घरेलू उद्योगों की रक्षा करना और आयातित तथा निर्यातित वस्तुओं पर करों के माध्यम से राजस्व उत्पन्न करना है।

जेई व लाइनमैन के साठगांठ से हो रही अवैध वसूली, उपभोक्ता परेशान

● विवादों में रहे भारतगंज जेई, उपभोक्ताओं पर रौब झाड़ते हुए की मनमानी चेकिंग

अखंड भारत सन्देश

माण्डा। यमुनापार क्षेत्र के माण्डा रोड विद्युत सब-स्टेशन में तैनात जेई व लाइनमैनों द्वारा की जा रही अवैध वसूली से उपभोक्ताओं की कमर टुट गयी है। उपभोक्तओ ने आरोप लगाया है कि प्रचंड गर्मी में के समय जो चेकिंग की जा रही है उससे अधिकारी अपनी जेबें भरने का काम करते हैं। जेई प्राईवेट कर्मचारियों के साथ मिलकर लोगों के घरों में घुसकर व प्रतिष्ठानों का वीडियो बना रहे है और बाद में सीधे साधे गरीब उपभोक्ताओं से वीडियो डिलीट करने के नाम पर अवैध वसूली करते हैं। धनराशि चुकाना उनकी मजबूरी बन गयी है। गरीब उपभोक्ता सुविधा शुल्क के अभाव में अंधेरे में गुजारा करने को विवश हैं। हालात यह है कि जेई व लाइनमैनों की मनमानी के चलते कभी-कभी पूरा मुहल्ला ही अंधेरे में डूबा रहता है। लगातार विवादों में रहे भारतगंज के जेई गणेश यादव आए दिन नगर पंचायत भारतगंज में उपभोक्ताओं के साथ अभद्र व्यवहार के चलते हमेशा सुर्खिया बटोरने में लगे रहते। बेचारे उपभोक्ता अपना बिजली बिल सही करवाने के लिए ये सब सुनना उपभोक्ताओं के लिए आदत बन चुकी है। भारतगंज जेई गणेश यादव के कार्य प्रणाली से हर कोई परेशान हो गया है। जिससे लोगों में काफी आक्रोश व्याप्त है। वहीं मंगलवार को मांडा क्षेत्र में आए मांडा रोड जेई राकेश गुप्ता,व हमेशा विवादों में रहे भारतगंज के जेई गणेश यादव ने निरीक्षण के दौरान कइयों उपभोक्ताओं पर रौब झड़ते हुए उनके घरों की मनमानी तरीके से चेकिंग की। जिससे उपभोक्ताओं में काफी नाराजगी रही। उपभोक्ताओं ने सम्बन्धित अधिकारियो से भारतगंज जेई गणेश यादव को हटवाने की मांग करते हुए कहा कि बिजली कर्मचारियों द्वारा उपभोक्ताओं का हनन किया जा रहा है। माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ग्रामीण क्षेत्रों में बाइस घण्टे बिजली आपूर्ति के साथ अगर उपभोक्ताओं के साथ गलत व्यवहार की गई तो बिजली कर्मचारियों के खिलाफ की कार्यवाही की जाएगी।

उपभोक्ता का कहना

स्थानीय निवासी जय शंकर प्रजापति ने बिजली कर्मचारियों पर आरोप लगाते हुए कहा है कि बीते जनवरी माह में मीटर जल गया था। कई बार शिकायत करने के बावजूद ठीक नही किया गया। जिससे बिजली कर्मचारियों का लापरवाही चरम पर है। घर में तीन तीन कनेक्शन होने के बावजूद उपभोक्ताओं के साथ कोई रियायत नहीं बरती जा रही है। और तो और भारतगंज के जेई गणेश यादव उपभोक्ताओं के प्रति कार्य शैली को लेकर काफी नाराजगी जताई उनके इस दुर्व्यहार से मोहल्ले के उपभोक्ता परेशान हैं।

रामायतन परिवार का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 4 को

करछना। हिंदू नव वर्ष एवं नवरात्र सप्तमी के अवसर पर आगामी 4 अप्रैल को रामायतन परिवार द्वारा क्षेत्र के करछना,हिंदूपुर स्थित अनघ मंडपम् में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। संस्थान के सचिव कवि संजय पांडेय सरस एवं प्रचार समिति के अध्यक्ष रिंकू सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि कवि सम्मेलन के पूर्व दोपहर 12 बजे से चर्चित भजन गायकों और लोक कलाकारों द्वारा भजन संगीत की प्रस्तुति होगी। उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में ग्राम न्यायालय के न्यायाधिकारी आदेश कुमार श्रीवास्तव समेत कई विशिष्ट अतिथिगण उपस्थित रहेंगे। अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में देश के चर्चित कवि राम भदावर, राधेश्याम भारती, कनक तिवारी, शैलेंद्र मधुर, मानक मुकेश, नीलम त्रिपाठी, राधा शुक्ला, नजर इलाहाबादी समेत स्थानीय कवि भी काव्य पाठ करेंगे। इस दौरान कवि कलाकारों समेत समाज में सराहनीय कार्य करने वाले पांच विशिष्ट लोगों को सम्मानित भी किया जाएगा। रामायतन परिवार ने क्षेत्रीय प्रबुद्ध जनों और काव्य प्रेमियों से उक्त कार्यक्रम में समय से पहुंच कर सफल बनाने की अपील की है।

न्यूज झरोखा

मऊआइमा में दूसरे दिन टर्र के मेले में रही भारी भीड

मऊआइमा। मऊआइमा के कस्बा में ईद के अवसर पर लग रहे टर्र के मेले में दूसरे दिन भी भारी भीड रही। कस्बा व दूर दूर से मेला देखने आए बच्चों पुरुषों, महिलाओं ने बड़े बड़े लगे झूले का आनन्द उठाए। वहीँ भीड को कंट्रोल करने के लिए काफी पुलिसकर्मी लगे रहे। हालांकि मेला देर रात तक पहले दिन और दूसरे दिन रात तक लगा रहा जहां बड़ी संख्या में लोग मेले का लुप्त उठाते देखे जा गए है।

मऊआइमा पुलिस ने दो वारंटियों के खिलाफ की विधिक कार्यवाही

मऊआइमा। न्यायालय से जारी वारंट पर मऊआइमा थाने के सब इंस्पेक्टर रामानु सिंह, आशुतोष, कांस्टेबल शिवकांत,हिमांशू यादव ने ग्राम नई बाजार निवासी मोहम्मद आरिफ पुत्र शौकत अली तथा ग्राम कटभरप्रमेजपुर निवासी किशोरी लाल पुत्र अमीर चन्द्र यादव को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही की है।

ऑटो ई- रिक्शा चालकों के खिलाफ चेकिंग अभियान चलाकर मचाया हड़कंप

मांडा। थाना क्षेत्र के अंतर्गत मंगलवार को भारतगंज पुलिस चौकी प्रभारी विनय सिंह तथा कांस्टेबल राजू यादव ने सड़को पर दौड़ रही अवैध तरीके ऑटो ई रिक्शा के खिलाफ चेकिंग अभियान चलाकर वाहन स्वामियों में हड़कंप मचा दिया। पुलिस ने मांडा क्षेत्र के प्रमुख मार्गों पर यातायात के नियमों का पालन न करने वाले 146 ई-रिक्शा और ऑटो के खिलाफ कार्रवाई की। जिसमे विभिन्न वाहनों के चालान किए। चौकी प्रभारी विनय सिंह ने बताया कि अधिकांश ऑटो में निर्धारित से अधिक सवारियां बैठी मिलीं। वहीं कई चालकों के पास ड्राइविंग लाइसेंस नहीं मिला। कई गलत दिशा में ऑटो और ई रिक्शा दौड़ाते मिले। कार्रवाई के साथ सभी को नियमों के प्रति जागरूक भी किया गया।

खेत में लगी आग दो बीघा फसल जलकर हुई राख

सहसों। थरवई थाना क्षेत्र के मेड़ुवा गांव में मंगलवार की दोपहर में गेहूं के खेत में आग लग गया। जिसमें करीब दो बीघा गेहूं की फसल जलकर राख हो गई। किसान? विक्रम सिंह, सियाराम पटेल आदि लोगों की भी फसल जल गई। जानकारी होने पर थरवई पुलिस एवं फायर ब्रिगेड की गाड़ी पहुंचकर किसी तरह आग पर काबू पाया। परंतु तब तक फसल जलकर राख हो चुकी थी। वहीं आग बुझाते समय किसान सुखराम की नातिन पूजा पटेल 14 वर्षीय भी खेत में लगी आग को देखने गई थी। जिसको एक सांप ने डस लिया। जिससे वह बेहोश हो गई। परिजनों में अफरा तहरी के साथ रोना पीटना मच गया। जिसका इलाज स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय प्रयागराज में चल रहा है। इसी प्रकार क्षेत्र के कसेरुआ खुर्द गांव के रामसूरत यादव बाबा का 10 बिस्वा गेहूं जल गया। जानकारी होने पर गांव के लोग आग बुझाने के लिए जुट गए। सूचना होने पर फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंचकर किसी तरह आग पर काबू पाया।

परशुराम जयंती को लेकर नवयुवक ब्राह्मण समाज की हुई बैठक

सहसों। नवयुवक ब्राह्मण समाज की एक आवश्यक बैठक केंद्रीय कार्यालय गारापुर में आयोजित बैठक में अध्यक्षता करते हुए नवयुवक ब्राह्मण समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संस्थापक लवकेश मिश्रा ने बताया कि आगामी 30 अप्रैल को होने वाले परशुराम जयंती को दिव्य और भव्य रूप से मनाने के लिए रूपरेखा तैयार की गई। जिसमें क्षेत्र के विशिष्ट ब्राह्मण शिरोमणियों को सम्मानित करने एवं परशुराम के बताए हुए आदर्शों पर चलने एवं आदि विषयों पर विस्तृत रूप से चर्चा करते हुए समाज को एक आदर्श समाज बनाने के लिए प्रेरित किया जा सके। इस अवसर पर मुख्य रूप से ब्राह्मण समाज के संरक्षक शारदा प्रसाद शुक्ला, सूर्यमणि पांडे, ब्रिजेश कुमार तिवारी, राजमणि शुक्ला, भुनेश शुक्ला, प्रमोद शुक्ला, अनुराग मिश्रा, विजय मिश्रा, संजय पांडेय, सूर्यमणि शुक्ला, रमाशंकर शुक्ला, डॉ एस के पांडेय, विजय तिवारी, किशन शुक्ला, प्रवेश शुक्ला सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

करोड़ों रुपए खर्च होने के बावजूद बूंद-बूंद पानी को तरस रहे लोग, जिम्मेदार मौन

● दूषित पानी पीकर लोग हो रहे बीमार

अखंड भारत सन्देश

मांडा। सरकार द्वारा स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति के लिए भारी- भरकम बजट पानी की तरह बहाया जा रहा है, लेकिन कार्यदायी संस्थाओं, ठेकेदारों और विभागीय जिम्मेदारों की अकर्मण्यता के कारण हजारों लोग स्वच्छ पेयजल की एक बूंद के लिए तरस गए हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल आपूर्ति योजना धरातल पर ध्वस्त हो गई और अब जल जीवन मिशन की परिकल्पना भी औंधे मुंह गिरती नजर आ रही है। विकास खंड मांडा उच्च प्राथमिक विद्यालय के समीप बनी लगभग साढ़े सात करोड़ की लागत से बनी पानी की टंकी अब लोगों के बीच में शो पीस बन कर रह गई है। सालों से बंद पड़ी टंकी लोगो के निगाह में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की दिखावा की जा रही है लेकिन अधिकारियों के साठ गांठ के चलते हजारों परिवारों को दूषित पानी पीने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। जिससे आए दिन मांडा सीएचसी में मरीजों की बाढ़ होती जा रही है। इस टंकी के द्वारा साफ पानी की आपूर्ति की जानी थी। लेकिन टंकी बनने के बाद बाजारों में बिछाई गईं मानक के अनुसार पाइप जगह जगह छतिग्रस्त हो गई थी। जिससे क्षेत्र कुछ समाज सेवियों द्वारा संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखकर अवगत भी कराया गया था। लेकिन आलसी अधिकारी ठंडे बस्ते में डालकर कुंभकरणी नींद में सो गए। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से भी शिकायत की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

कछुए की गति से हो रहे इस पेयजल आपूर्ति को लेकर ग्रामीणों की आंखे थक चुकी है। बहरहाल करोड़ों रूपयों की लागत से बनी इन खस्ताहाल पानी की टंकी का संचालन का जिम्मा ग्राम प्रधानों का है। लेकिन समस्यायों की जानकारी होने के बावजूद ग्राम प्रधान पल्ला झाड़ लेते हैं।

सीडीओ/आरएफसी प्रयागराज ने गेहूं क्रय केंद्र का फीता काटकर कि उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

जसरा। विकास खंड के नवीन मंडी स्थल जसरा व जारी में सीडीओ/आरएफसी प्रयागराज गौरव कुमार ने गेहूं क्रय केंद्र का फीता काटकर उद्घाटन किया। निरीक्षण के समय सम्भागीय खाद्य विपणन अधिकारी, जिला खाद्य विपणन अधिकारी, मंडी सचिव, क्षेत्रीय विपणन अधिकारी सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

मंडी सचिव जसरा नीरज नाथ द्वारा बताया गया कि सुबह 11 बजे से दोपहर दो बजे तक रैन्डम के आधार पर नीलामी की जाती है। उसी समय के आसपास में गेहूं का विक्रय होता है। आज की नीलामी (बोली) गेहूं के गुणवत्ता के आधार पर 2400 रूपए से 2450 रूपए प्रति क्विंटल तक लगाई गई। सम्भागीय खाद्य नियंत्रक द्वारा मंडी सचिव को निर्देशित किया गया कि जो बोली 2400 रूपए से कम पर लगती है,उसे गेहूं क्रय केंद्र पर तौल करा लिया जाए और किसानों का गेहूं क्रय कर किसानों के खाते में भुगतान करा दिया जाय। मंडी सचिव ने बताया कि प्रतिदिन चार से पांच सौ क्विन्टल की तौल कराई जा रही है। मंडी सचिव नीरज नाथ को निर्देशित किया गया कि मंडी में किसी भी स्थिति में 2445 रूपए से कम की खरीद न किया जाए। इस मौके पर धर्म वीर सिंह क्षेत्रीय विपणन अधिकारी जसरा, जीतेन्द्र प्रताप सिंह, लल्लू कुमार गुप्ता द्वारा तौल कराया गया। सीडीओ/आर एफसी गौरव कुमार ने क्रय केन्द्र प्रभारियों को निर्देशित किया गया कि किसानों से किसी भी प्रकार की सुविधा शुल्क की शिकायत नहीं मिलनी चाहिए। शिकायत मिलने पर केन्द्र प्रभारी के खिलाफ कार्रवाई के लिए तैयार रहें। इस मौके पर क्षेत्रीय विपणन अधिकारी धर्मवीर सिंह, जितेन्द्र प्रताप सिंह, लल्लू कुमार गुप्ता उपस्थित रहे।

टूट गई विकास की डोर आओ चले कांग्रेस की ओर : प्रो. अमरनाथ मिश्र

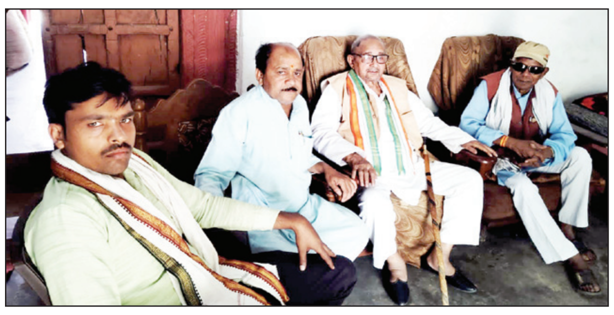

करछना। प्रयागराज कांग्रेस संगठन की मजबूती पर चर्चा करते हुए उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रयागराज के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ अमरनाथ मिश्र ने कहा कि कांग्रेस जनों को खद्दर व पुराने पोषाक को अपनाना होगा जिससे धूप व ठंड दोनों से बचत होती है डॉ अमरनाथ मिश्र ने कहा कि संगठन की मजबूती के लिए बूथ स्तर पर बैठक करके न्याय पंचायत कमेटी को सक्रिय करना होगा। उसके बाद ब्लॉक कमेटी हर न्याय पंचायत में बैठक करेगी। जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व जिलाध्यक्ष शिव विजय सिंह जी ने कहा कि कांग्रेस के संगठन की मजबूती के लिए उपर से लेकर नीचे तक पदाधिकारियों तथा कार्यकताओं में सक्रियता जरूरी है। तभी संगठन मजबूत होगा तभी पार्टी मजबूत होगी तथा कांग्रेस का हर एक कार्यकर्ता फिरका परस्त ताकतों का मुहतोड़ जवाब दे सकेगा। बैठक का संचालन उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य डॉ दिनेश कुमार सोनी ने किया संगठन की सक्रियता पर अपना वकतव्य देने वालों में सर्व श्री रंगराज सिंह पूर्व जिला उपाध्यक्ष नागेश पाण्डेय पूर्व जिला महासचिव विनय कृष्ण पाण्डेय आशीष कुमार मिश्र सुरेश शुक्ल अकबाल बहादुर कुशवाहा उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों के लिए यादगार विदाई समारोह आयोजित

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। नगर पंचायत स्थित कैम्ब्रिज हाईस्कूल एंड कॉलेज में मंगलवार को कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर कक्षा 11 के छात्रों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपने वरिष्ठ छात्रों को विदाई दी। कार्यक्रम की शुरूआत स्कूल प्रबंधक संतोष त्रिपाठी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। इसके बाद, कक्षा 11 की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर अपने सीनियर्स का हृदय से स्वागत एवं अभिनंदन किया। समारोह में विद्यार्थियों ने कविता पाठ, क्विज, नृत्य और नाट्य प्रस्तुतियां दीं। इसके साथ ही, छात्रों ने स्कूल में बिताए अपने यादगार पलों और अनुभवों को साझा किया, जिससे वातावरण भावुक हो गया।विद्यालय के प्रबंधक संतोष त्रिपाठी ने इस अवसर पर छात्रों को आशीर्वाद देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि विद्यालय ने अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण निष्ठा के साथ निभाने का प्रयास किया है और शिक्षक सदैव विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए तत्पर रहे हैं। उन्होंने छात्रों की उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि उनकी मेहनत और लगन उन्हें सफलता की ऊंचाइयों तक ले जाएगी।इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षकगण प्रशासनिक अधिकारी बालेंद्र पांडेय, मनी शंकर दुबे, सौरभ प्रकाश, धर्मराज कुशवाहा, पंकज मिश्रा, मनोज तिवारी, पंकज श्रीवास्तव, सुधीर नारंग, राजेश गोस्वामी, अखिलेश पांडे, दीपक केशरवानी, इमरान अहमद, अनुभव पांडेय, रीतू सुसारी, सिम्मी गुप्ता, रेखा सिंह, मीरा श्रीवास्तव, रीना गोस्वामी, पूनम द्विवेदी, मधु, सोमवती, उषा, प्रीती, वंदना, स्मिता, निहारिका, अंजू गुप्ता आदि उपस्थित रहे। सभी शिक्षकों ने छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं और उनकी सफलता की कामना की।

रामनवमी पर्व पर भव्य शोभायात्रा जंघई बाजार में

जंघई। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी विश्व हिंदू परिषद प्रतापपुर प्रखंड द्वारा रामनवमी के अवसर पर 6 अप्रैल रविवार को 3 बजे से श्रीराम जानकी मंदिर जंघई प्रांगण से भव्य शोभायात्रा पूरे जंघई बाजार में निकाली जाएगी। जो कि पूरे नगर का परिक्रमा करते हुए मंदिर प्रांगण में संपन्न होगी शोभायात्रा प्रारंभ होने के पूर्व पूजन अर्चन किया जाएगा तत्पश्चात डीजे ढोल नगाड़ों के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। यह जानकारी विश्व हिंदू परिषद प्रखंड मंत्री एडवोकेट किशन पाठक ने दिया है।

बाइक की भिड़ंत में दो युवक गंभीर रूप से घायल

फूलपुर। बाजार से घर वापस जा रहे बाइक सवार दो युवकों की सामने से आ रही बाइक से जोरदार भिड़ंत हो गई जिससे बाइकसवार दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर जुटे ग्रामीणों की मदद से घायलों को सीएचसी फूलपुर में भर्ती कराया गया जहां गंभीरावस्था के चलते चिकित्सकों ने लालबहादुर यादव को एसआरएन के लिए रेफर कर दिया। वहीं दूसरे युवक अनिल गौतम को एक निजी चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। फूलपुर थाना क्षेत्र के इफको पुलिस चौकी अंतर्गत वीरकाजी गांव निवासी अनिल गौतम गांव के ही लालबहादुर यादव के साथ मंगलवार को एक ही बाइक से शाम करीब चार बजे बाबूगंज की तरफ से वापस अपने घर जा रहा था। अभी वह इफको पुलिस चौकी के नजदीक इफको गेट के सामने पहुंचा ही था की सामने से आ रही बाइक में जोरदार भिड़ंत हो गई। जिससे दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों युवकों को घायलावस्था में सीएचसी फूलपुर में भर्ती कराया गया जहां चिकित्सकों ने लालबहादुर को एस आर एन के लिए रेफर कर दिया वहीं दूसरे युवक का एक निजी चिकित्सालय में इलाज चल रहा है।

सेवानिवृत्त एसीपी संत लाल सरोज को दी गई गरिमामयी विदाई

यह विदाई का क्षण समर्पण, सम्मान और भावनाओं से ओत-प्रोत : डॉ. वाचस्पति

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। बारा एसीपी के पद से सेवानिवृत्त हुए संत लाल सरोज के सम्मान में शंकरगढ़ थाना परिसर में एक भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के सैकड़ों लोगों ने उनकी निष्ठा, ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता की सराहना करते हुए उनके योगदान को याद किया।

विदाई समारोह की भव्य व्यवस्था शंकरगढ़ थाने के एसओ ओम प्रकाश की ओर से की गई थी, जिसमें बारा सर्किल के सभी इंस्पेक्टर, सभी चौकी प्रभारी और बड़ी संख्या में स्थानीय लोग शामिल हुए। समारोह के दौरान एसीपी संत लाल सरोज का फूल-मालाओं और स्मृति चिन्ह के साथ भव्य स्वागत किया गया।

मुख्य अतिथि बारा विधायक डॉ. वाचस्पति ने एसीपी संत लाल सरोज के कार्यकाल की प्रशंसा करते हुए कहा,संत लाल सरोज ने अपने पूरे कार्यकाल में अनुशासन, ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता की मिसाल पेश की। उन्होंने कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए जो कार्य किए, वे सराहनीय हैं। उन्होंने आगे कहा,मैं उनकी दीघार्यु और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ। उनकी कार्यशैली और योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।

भावुक एसीपी संत लाल सरोज ने अपने विदाई संदेश में सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा पुलिस सेवा में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा को प्राथमिकता दी। इस अवसर पर ब्रिजेशानंद जी महाराज, शंकरगढ़ एसओ ओम प्रकाश, बारा इंस्पेक्टर तुषार त्यागी, लालापुर एसओ अजय मिश्रा,एस आई राजेश सचान, शंकरगढ़ से एसआई वीरेंद्र सिंह, एसआई शिव कुमार, एसआई के के पांडेय,संतोष तिवारी,किसान नेता दीपक तिवारी, डॉ अभिषेक सिंह, डॉ. विनोद त्रिपाठी, विधायक प्रतिनिधि फूलचंद्र पटेल, श्यामू निषाद, विधायक मीडिया प्रभारी नीरज केसरवानी, अखिलेश पटेल, सुजीत केसरवानी, सुरेश कुमार ओम शांति, आशीष पाल, दीपक तिवारी, राज कुमार पटेल, संदीप पटेल, रावेंद्र तिवारी, अरविंद केसरवानी, धीरेंद्र गुप्ता, धीरज वैश्य, पंकज गुप्ता, नीरज केसरवानी, आबिद अली, बंटी केसरवानी, राम जतन बंसल सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नगर पंचायत कोरांव में चौड़ी हुई सड़क दुकानदारों के कब्जे में

कोरांव। नगर पंचायत कोरांव में सड़कों पर निरंतर जाम की स्थिती बनी हुई है जिससे यातायात प्रभावित रहता है,इमरजेंसी वाहन भी जाम की भेंट चढ़ रहे हैं। दरअसल जिस उद्देश्य से सरकार ने आवागमन सुचारु रूप से चालू रखने के लिए सड़कों का चौड़ीकरण किया वह उद्देश्य पूरा नहीं हो सका। कोरांव में मुख्य स्टेट हाइवे की सड़क पहले से भी तंग बना दी गई। और दोनों पटरियों पर दुकानदारों द्वार दुकान का सामान, शाइन बोर्ड और वाहन खड़ा कर के अतिक्रमण कर लिया है जिससे वाहनों के आवागम में ज्यादा असुविधा उत्पन्न हो रही है। नगर पंचायत और स्थानीय प्रशाशन द्वारा जब तक उक्त मार्गों की नालियों और पटरियों से अतिक्रमण जबरजस्ती नहीं हटाए जाते तब तक आवागमन सुलभ नहीं हो सकता। पीस कमेटी को बैठक में भी कई बार उक्त समस्या समाधान के लिए प्रस्ताव रखा गया किंतु कोई अमल नहीं किया गया। जिससे आवागमन कोरांव नगर की स्थिति खराब होती जा रही है। आम नागरिकों ने प्रशाशन का ध्यान कोरांव की जाम की समस्या निदान के लिए त्वरित कार्यवाही कर सड़क की नाली और पटरियों तक अतिक्रमण खाली कराए जाने की मांग की है।

वरिष्ठ अधिकारियों ने मुख्यमंत्री के प्रस्तावित श्रृंगवेरपुर धाम के भ्रमण कार्यक्रम के दृष्टिगत की जा रही तैयारियों का लिया जायजा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दिनांक 03 अप्रैल, 2025 को श्रृंगवेरपुर धाम प्रयागराज के प्रस्तावित भ्रमण कार्यक्रम के दृष्टिगत पुलिस आयुक्त तरूण गाबा, मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत, जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार माँदड़ के द्वारा मंगलवार को कार्यक्रम स्थल पर की जा रही तैयारियों का स्थलीय निरीक्षण कर जायजा लिया गया। उन्होंने निषादराज पार्क, हेलीपैड, जनसभा स्थल, प्रदर्शनी स्थल, ओडीओपी स्टॉल एवं पार्किंग व अन्य स्थानों का भ्रमण कर निरीक्षण किया एवं सभी सम्बंधित अधिकारियों को

श्रृंगवेरपुर धाम में तैयारियों का जायजा लेते वरिष्ठ अधिकारी

आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कार्यक्रम स्थल, हेलीपैड व अन्य स्थलों पर साफ-सफाई, भीड़ प्रबंधन, यातायात, पार्किंग, सुरक्षा व्यवस्था सहित अन्य व्यवस्थाओं को समय से सुनिश्चित कराये के निर्देश दिए है। वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा कार्यक्रम स्थल पर आने वाले लोगो के आने और जाने के मार्ग की जानकारी ली गयी और उनके बैठने की व्यवस्था, पेयजल और मोबाइल टॉयलेट की समुचित व्यवस्था रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर आने वाले वाहनों को निर्धारित रूट चार्ट के अनुसार ही आवागमन सुनिश्चित करने और पार्किंग मैनेजमेंट की बेहतर व्यवस्था करने के लिए कहा है। वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा सभी व्यवस्थाओं को चाक-चौबंद बनाने के लिए निर्देशित किया गया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, डीसीपी गंगानगर कुलदीप सिंह गुनावत सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

कठौली के गेट नंबर 26 सी पर फुट ओवरब्रिज कार्य शुरू किए जाने हेतु सांसद ने रेलमंत्री को लिखा पत्र

अखंड भारत संदेश

मेजा। कठौली स्थित रेलवे क्रासिंग 26 सी पर आरओबी/आरयूबी फुट ओवरब्रिज बनाए जाने हेतु प्रयागराज के सांसद कुंवर उज्जवल रमण सिंह ने रेलमंत्री को पत्र लिखकर अविलंब कार्य शुरू कराने का अनुरोध किया है।

उल्लेखनीय है कि कठौली गांव के पूर्व प्रधान हरिशंकर शर्मा के नाम से संदर्भित पत्र में दर्शित ग्रामीणों एवं पढ़ने वाले छात्र छात्राओं के आवागमन हेतु पूरी तरह से बंद कर दिए गए उक्त क्रासिंग पर फ्लाई ओवर अथवा फुट ओवरब्रिज बनाए जाने की मांग की गई थी। जिसके मद्देनजर सांसद उज्जवल रमण सिंह ने रेलमंत्री को पत्र लिखकर फुट ओवरब्रिज बनाने की मांग किया था। बता दे कि सांसद प्रयागराज की मांग पर रेलमंत्री द्वारा संबंधित विभाग को निर्देशित भी किया गया था किंतु कार्य शुरू न होने पर सांसद उज्जवल रमण सिंह ने पुनः रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव को इस आशय से पत्र लिखा है कि पूर्व के आदेश के बाद भी अभी तक संबंधित अधिकारियों द्वारा कार्य शुरू नहीं किया गया है जिससे आवागमन में स्कूली बच्चों तथा ग्रामीणों को काफी परेशानी हो रही है। आवागमन के लिहाज से सांसद ने अविलंब कार्य शुरू किए जाने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करने का अनुरोध किया है जिससे आवागमन में परेशानी न हो।

न्यूज झरोखा

नैनी में शराब की दुकान खोलने का स्थानीय लोगों ने किया विरोध, पार्षद व स्थानीय लोगों ने थाने पहुंचकर दर्ज कराया विरोध

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र के शंकरढाल पर अंग्रेजी शराब व बीयर की दुकान का आबकारी लाइसेंस हुआ। दुकान खुलने का पार्षद व स्थानीय लोगों ने विरोध किया। हंगामे की सूचना पर नैनी कस्बा चौकी इंचार्ज विपिन कुमार वर्मा फोर्स के साथ पहुंचे किसी तरीके से सभी लोगों को समझ कर शांत कर दिए। जिसके बाद सभी को नैनी कोतवाली बुलाया गया। स्थानीय लोगों का आरोप है कि शराब कि दुकान का लाइसेंस स्वदेशी कॉटन मिल का है, लेकिन दुकान शंकरढाल पर खोली जा रही है। दुकान के 100 मीटर के भीतर स्कूल भी है। जिसका इससे गलत प्रभाव पड़ेगा। मोहल्ले के लोगों ने इसका जमकर विरोध किया। उनका कहना है जिस एरिया में दुकान एलाट हुई है वहीं दुकान खोली जाए। दुकान से कुछ दूर पर ही संगम माडर्न इंटरमीडिएट स्कूल है। जहां पर छात्राएं भी पढ़ती हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि दुकान खुलने से आए दिन शराबी छात्राओं से छींटाकशी करेंगे। विरोध करने वालों में स्कूल प्रबंधक शशि शर्मा लालू, पार्षद व व्यापार मंडल अध्यक्ष राकेश जायसवाल, संजय गुप्ता, ननकू पांडेय, पप्पू शर्मा, दीपांशु शर्मा, पंकज मिश्रा, अनिल केसरवानी, महेंद्र केसरवानी बबलू नागिना, कृष्णा केसरवानी, राजीव वर्मा गुडविल, धर्मराज पटेल, सुनील शर्मा, पिंटू जैन समेत अन्य लोग मौजूद थे।

सरायममरेज ईदगाह में देश के अमन-चैन की दुआएं मांगी

जंघई। सरायममरेज में ईद का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। समाजसेवी माज रहमान ने बताया कि सरायममरेज मस्जिद में ईद की नमाज अदा की गई इस दौरान नमाजियों ने देश में अमन-चैन के साथ भाईचारे की दुआ मांगी। सोमवार की सुबह से ही मुस्लिम बहुल इलाकों में चहल पहल रही सुबह मस्जिदों में ईद की नमाज अदा करने के लिए नामाजियों की काफी भीड़ रही। नमाज अदा करने के बाद लोगों ने एक दूसरे के गले मिलकर ईद की बधाई दी ईद को लेकर खासकर बच्चों मे काफी उत्साह देखने को मिला। सरायममरेज मस्जिद में नमाज अदा करने के बाद काफी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग जुटे जहां एक दूसरे को गले लगाकर ईद की बधाई दी। ईद की नमाज अदा करने के बाद एक दूसरे को लच्छा एवं सेवईयां खिलाकर ईद की खुशी मनाई। सरायममरेज एसएचओ योगेश प्रताप सिंह द्वारा ईद को लेकर सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम किया गया था एहतियात के तौर पर विभिन्न चौक-चौराहों एवं ग्रामीण इलाकों के सभी मस्जिदों के पास पुलिस बल की तैनाती की गई थी। इस अवसर पर शोएब, हमजा, फरहान, अरसिल, अफरोज, अदनान, कासिफ सेख, आमिर, दिलशाद, अल्फाज, मेराज, सद्दाम, फहीम, मुर्शिद, कासिफ इदरीसी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

खिड़की तोड़कर प्राथमिक विद्यालय जगबंधनपुर में हुई चोरी

सहसों। थाना सराय इनायत के पुलिस चौकी सहसों अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय जगबंधनपुर में सोमवार की रात अज्ञात चोरों ने विद्यालय के कार्यालय एवं रसोई की खिड़की तोड़कर उसमें रखा हजारों रुपए का सारा सामान चोर उठा ले गए। मंगलवार सुबह जब प्रधानाध्यापिका सहित अन्य शिक्षक पहुंचे तो ताला टूटा हुआ था। तत्काल इसकी सूचना उन्होंने ग्राम प्रधान एवं पुलिस को दी। प्रधानाध्यापिका प्रमिला सरोज सहित अन्य शिक्षक ने जांच पड़ताल किया तो पता चला कि रसोई में रखा दो सिलेंडर, तीन भगोना, चार बाल्टी तथा बच्चों के खाना खाने की सत्तर थाली, फचास गिलास सहित आदि आवश्यक सामग्री उठा ले गए। जिसकी सूचना प्रधानाध्यापक प्रमिला सरोज एवं ग्राम प्रधान सुमन देवी ने सराय इनायत थाने में जाकर लिखित तहरीर देते हुए अज्ञात चोरों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

गीता एक धर्म शास्त्र है : स्वामी अड़गड़ानंद

प्रयागराज। यथार्थ गीता के प्रणेता स्वामी श्री अड़गड़ानंद महाराज सोमवार को श्रृंगवेरपुर आश्रम पहुंचे। उनके दर्शन के लिए बड़ी संख्या में भक्तगण पहले से ही आश्रम में मौजूद थे। मंगलवार सुबह भक्तों को प्रवचन करते हुए उन्होंने कहा कि गीता एक धर्म शास्त्र है। इसका अध्ययन सभी को करना चाहिए। इसके बताए मार्ग पर चल कर मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर जाएगा। उन्होंने कहा कि सदगुरु के प्रति पूरी तरह से समर्पित होकर, जो उनके बताए अनुसार भजन करेगा। ज्यो ज्यों उनके बताए रास्ते पर चलेगा, तो एक न एक दिन दिन उसे ईश्वरीय राह मिल जाएगी। भगवान की तरफ बढ़ने का मार्गदर्शन प्राप्त हो जाएगा। ईश्वर का साक्षात्कार के साथ ही उसमें विलय हो जाएगा। इसी के साथ मनुष्य आवागमन से मुक्ति पा जाएगा। इसी को मोक्ष कहते हैं। इससे पूर्व स्वामी जी के परम शिष्य लाले बाबा ने कहा कि यथार्थ गीता जन-जन तक पहुंचनी चाहिए। गीता जिस दिन घर-घर पहुंच जाएगी। गीता के अनुसार लोग चलने लगेंगे, तो सामाजिक कुरूतियों से लोग छुटकारा पा जाएंगे। जात पात का बंधन समाप्त हो जाएगा। इस अवसर पर आश्रम के महंत बृज बिहारी महाराज, संतोष बाबा, जगं बहादुर महाराज, आशीष बाबा, शिवानंद बाबा, फक्कड़ बाबा, एसपी सिंह ऊर्फ दरोगा आदि उपस्थित रहे।

9वीं की स्टूडेंट से रेप,स्कूल की जगह होटल ले गया

बोला- जुबान खोली तो तेरे भाई को मार डालूंगा

अखंड भारत संदेश

हंडिया प्रयागराज । प्रयागराज में 9वीं की स्टूडेंट से रेप किया गया। परिजनों का आरोप है कि ई-रिक्शा चलाने वाला आमिर खान बेटी को स्कूल से लाता और ले जाता था। उसी ने रेप किया है। वह बेटी को स्कूल की जगह होटल ले गया। वहां मुंह में कपड़ा ठूंसकर वारदात की। इसके बाद आमिर खान बेटी को अपने घर ले गया। उसके घर वालों ने भी उसका साथ दिया। बेटी से उसने कहा- अगर किसी से कुछ बोला, तो तेरे भाई को जान से मार डालूंगा, लाश भी देखना नसीब नहीं होगा। इसके बाद बेटी किसी तरह उनके चंगुल से भागकर 29 मार्च को घर आई। पहले वह चुप रही, बाद में घर वालों को पूरी बात

बताई।

रेप का पता चलते ही घर वाले बेटी को थाने लेकर पहुंचे। 30 मार्च को FIR कराई। मंगलवार को पुलिस ने पांचों आरोपियों आमिर खान, उसकी मां आसाया उर्फ नफीसा, पिता हारून, भाई शाहरुख और होटल संचालक आजाद बिंद को गिरफ्तार कर लिया। घटना हंडिया इलाके की है।

मां ने FIR में बताया- मेरी बेटी 9वीं की छात्रा है। गांव का आमिर खान रोज बेटी को स्कूल लाता और ले जाता है। 28 मार्च को भी वह रोज की तरह बेटी को स्कूल ले गया था। लेकिन, वह स्कूल ले जाने के बजाय बेटी को एक होटल में ले गया।

अउढ बोले-आरोपियों को अरेस्ट कर लिया गया है

ACP हंडिया ने बताया- मां की शिकायत पर आरोपी समेत 5 लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। आमिर खान रेप करने के बाद नाबालिग लड़की को अपने घर में रखे था। जब उसकी मां बेटी के बारे में पूछने गई, तो आरोपी के मां, बाप और भाई ने मना कर दिया। मां को अपने घर से भगा दिया। जब बाद में नाबालिग लड़की वापस घर आई, तो उसने पूरी बात बताई। इसलिए आरोपी के साथ उसके मां-बाप और भाई को भी गिरफ्तार किया गया है। होटल के संचालक को बैजनाथ उर्फ आजाद बिंद को भी गिरफ्तार किया गया है। उसने अपने होटल में उसे घंटों तक रुकवाया था।

बेटी ने उसे टोका कि कहां ले जा रहे हो? इस पर आमिर खान ने कहा कि तुम चुप रहो। फिर बेटी ने इसका विरोध किया, तो बोला कि जहां ले चल रहा हूं, वहां चलो। इसके बाद वह बेटी को एक होटल में ले गया। वहां उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया।

इसके बाद उसने बेटी से दरिंदगी की। धमकी दी कि किसी से कुछ कहोगी, तो तेरे घर वाले और भाई को मार डालूंगा। मैं बहुत खतरनाक आदमी हूं। इसके बाद आमिर खान मेरी बेटी को अपने घर ले गया। वहीं, बजरंग दल के गंगापार जिलाध्यक्ष पवन पांडेय ने कहा- आरोपी पर पॉक्सो एक्ट के तहत कार्रवाई की जाए। ऐसी घटनाओं को बजरंग दल बर्दाश्त नहीं करेगा। आरोपी को जमानत न मिले, इसके लिए बजरंग दल आगे आएगा।

हमारा प्रयास बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए है संकल्पित : अमरेश तिवारी

मेजा पब्लिक स्कूल में शिक्षारत छात्र छात्राएं का सत्र परिमाण हुआ घोषित,स्कूल के डायरेक्टर ने टॉप पांच बच्चों को पुरस्कार देकर किया सम्मानित

मेजा। मेजा पब्लिक स्कूल में शिक्षारत छात्र छात्राओं के स्कूल सत्र का परिणाम मंगलवार को घोषित किया गया। इस दौरान एक कार्यक्रम आयोजित कर सभी कक्षाओं के पांच टॉप बच्चों को स्कूल के डायरेक्टर अमरेश तिवारी द्वारा पुरस्कार देकर जहां सम्मानित किया गया वहीं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हुए कहा कि हमारा प्रयास बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए संकल्पित है। श्री तिवारी ने आगे कहा कि हमारे संकल्प का परिणाम है कि आज मेजा पब्लिक स्कूल के पढ़े हुए होनहार छात्र छात्राओं का नवोदय,सैनिक स्कूल,जेई मेंस तथा नीट में चयन हो रहा है। इतना ही नहीं स्कूल के डायरेक्टर अमरेश तिवारी ने यह भी बताया कि स्कूल टॉप करने वाले छात्र आहिल अंसारी की पूरे सत्र की फीस माफ कर दी गई है। इसके अलावा कक्षा 6 में स्कूल की छात्रा सौम्या सिंह प्रथम, शुभांशु मिश्रा द्वितीय तथा आदर्श श्रीवास्तव तृतीय स्थान प्राप्त कर स्कूल का नाम रोशन किया है। इस मौके पर स्कूल के शिक्षक सुभाष पांडेय,ओपी मिश्रा,रजनीश तिवारी, ओएस मिश्रा,राजन दुबे आकाश गोस्वामी,सुशील प्रजापति, शिक्षिकाएं श्वेता पांडेय,सच्ची पांडेय, नीशू पटेल,आभा मिश्रा,आकांक्षा मिश्रा,चारुल तिवारी,शालिनी मौर्या,अंकिता तिवारी तथा विजय लक्ष्मी आदि के अलावा अभिभावक एवं स्कूल के अन्य स्टाफ के लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

नगर निगम नैनी में बनाएगा 1.3 हेक्टेयर में सुपर-स्पेशलिटी अस्पताल

अस्पताल के इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर दिल्ली के अशोका होटल में हुई स्टेक होल्डर्स मीटिंग

● पीपीपी मॉडल पर आधुनिक सुविधाओं और चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ होगा संचालन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज के नैनी में प्रयागराज नगर निगम अत्याधुनिक सुपर-स्पेशलिटी अस्पताल बनाने जा रहा है। यह अस्पताल 1.3 हेक्टेयर क्षेत्र में बनेगा और इससे क्षेत्रीय स्वास्थ्य सुविधा का बुनियादी ढांचा मजबूत होगा। इसे लेकर नगर आयुक्त श्री चंद्र मोहन गर्ग की अध्यक्षता में दिल्ली स्थित अशोका होटल में स्टेक होल्डर्स सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें अस्पताल की स्थापना और इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर चर्चा की गई। बैठक में प्रमुख कंपनियां अपोलो, अर्न्स्ट एंड यंग , एपीक्स, रीजेंसी, एवीएमसी, पॉपुलर,

बैठक में उपस्थित लोग

एमईबीएस, ऑक्टावो सॉल्युशन, विनायक और टीआरएस के मालिक, प्रसिद्ध चिकित्सा सलाहकारों और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपर्स सहित प्रमुख स्टेकहोल्डर्स शामिल थे। बैठक में अस्पताल के विकास, निर्माण, संचालन, लीज की अवधि, संभावित विस्तार योजनाओं और राजस्व मॉडल पर चर्चा की गई। इसके अलावा वित्तीय और शासन मॉडल, सार्वजनिक-निजी साझेदारी , चरणबद्ध इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार और विविध निवेश रणनीतियों पर बात हुई। प्रयागराज नगर निगम के अधिकारियों ने इस सुपर-स्पेशलिटी अस्पताल के स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करने की संभावानाओं को बताया। यह भी बताया कि प्रस्तावित अस्पताल में अत्याधुनिक चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ ही उच्चतम तकनीक और विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाएं प्रदान की जाएंगी।

नगर आयुक्त चंद्र मोहन गर्ग ने नगर निगम के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कहा, यह पहल प्रयागराज में स्वास्थ्य सेवा की पहुंच को सुदृढ़ करने और चिकित्सा सेवाओं के मानक को बढ़ाने के हमारे प्रयासों में एक महत्वपूर्ण क्षण का प्रतिनिधित्व करती है। हम अस्पताल के विकास और परिचालन रोडमैप में सुधार करने के लिए एक पारदर्शी, बहु-हितधारक दृष्टिकोण के लिए प्रतिबद्ध हैं।बैठक में परियोजना को अंतिम रूप देने और नीति सुधार के लिए व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की गई। अधिकारियों ने बताया कि अब अगली बैठक में रणनीतिक कार्यान्वयन विधियों और वित्तीय संरचनाओं पर विस्तृत चर्चा की जाएगी। नगर निगम का यह महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट प्रयागराज के स्वास्थ्य तंत्र को पुनः स्वरूपित करने का कार्य करेगा, जिससे एक मजबूत चिकित्सा अवसंरचना तैयार होगी, जो प्रमुख स्वास्थ्य संस्थानों और निवेशकों को आकर्षित करने के साथ-साथ स्थानीय लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करेगी।

कुलपति कार्यालय का घेराव कर शिक्षकों ने विभाग बंद करने का किया विरोध

शुआट्स सोसायटी से जुड़े शिक्षकों के विरोध को लेकर नदारत रहे प्रशासनिक अधिकारी

नैनी। नैनी में सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा बीते 28 मार्च को विवि में संचालित दस विभागों को बंद करने के नोटिस को लेकर मंगलवार को शुआट्स सोसायटी से जुड़े शिक्षकों ने कुलपति कार्यालय में प्रदर्शन कर अपना विरोध जताया। पूर्व से तय विरोध को लेकर विवि प्रशासन द्वारा इसकी सूचना पुलिस को दी गई थी। वहीं शिक्षकों ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन करते हुए विवि प्रशासन द्वारा तय निर्णय को वापस लेने की मांग की गई। बता दे कि विवि प्रशासन ने एक स्कूल, एक अनुभाग सहित दस विभागों को बंद करने का नोटिस 28 मार्च को जारी की गई। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि एक जुलाई को विभाग में संचालित कोर्स बंद करने के साथ ही इसमें कार्यरत 53 शिक्षकों के सेवा समाप्त कर दी जाएगी। शनिवार, रविवार को विवि बंद था और सोमवार को ईद का अवकाश था। मंगलवार को विवि खुला तो शुआट्स सोसायटी से जुड़े शिक्षक विरोध स्वरूप कुलपति कार्यालय पहुंच गए। उनके साथ कुछ छात्र थे जो बंद होने वाले विभाग में शिक्षारत है। शिक्षकों के विरोध की जानकारी पूर्व होने के कारण कार्यालय के साथ सभी अधिकारी अपने कार्यालय से नदारत थे। यही स्थिति सभी प्रशासनिक कार्यालय चाहे वह रजिस्ट्रार ऑफिस हो या निदेशक प्रशासन कार्यालय हो,कोई भी जिम्मेवार अपनी कुर्सी पर उपस्थित नहीं मिला। शिक्षकों के साथ ही साथ विद्यार्थियों में विवि के निर्णय को लेकर आक्रोश एवं संशय है। बता दे कि शुआट्स ने आर्थिक तंगी का हवाला देते हुए विगत शुक्रवार को ईद की छुट्टी से ठीक पूर्व 10 विभागों को बंद करने का तुगलकी फरमान जारी करते हुए 53 शिक्षकों की सेवा समाप्त करने की घोषणा की और तीन महीने का नोटिस दे दिया और साथ ही साथ उसे विश्विद्यालय की वेबसाइट पर भी अपलोड कर दिया। विद्यार्थियों को नोटिस के माध्यम से बताया गया है कि उन्हें अन्य विभागों के शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाएगा और डिग्री पूरी कराई जाएगी। छात्रों के बीच भरी असमंजस है कि ऐसा कैसे संभव है। विश्विद्यालय खुलने के बाद जब पीड़ित शिक्षक जिनका 16-26 महीने से सैलरी बकाया है, जब कुलपति कार्यालय पहुंचे तो वहां कोई नहीं मिला। विश्विद्यालय परिसर में संशय एवं अविश्वास का माहौल व्याप्त है।

यूनाइटेड विश्वविद्यालय ने 'लिट फॉर लाइफ' साहित्यिक क्लब का किया उद्घाटन

प्रयागराज। यूनाइटेड विश्वविद्यालय, प्रयागराज के अनुप्रयुक्त विज्ञान और मानविकी विभाग के तत्वावधान में 'लिट फॉर लाइफः ए लिटरेरी क्लब ऑफ यूनाइटेड यूनिवर्सिटी' का शुभारंभ किया गया। लिटरेरी क्लब का उद्घाटन दिप प्रज्ज्वलनकर एवं माँ सरस्वती को पुष्प अर्पितकर किया गया। उद्घाटन के दौरान अपने संबोधन में असिस्टेंट एकेडमिक डीन, डॉ. रोशनी श्रीवास्तव ने कहा कि विभागाध्यक्ष डॉ गीतिका पांडेय के दिशानिर्देशन में डॉ कुँवर शेखर गुप्ता एवं जॉली सेनगुप्ता के साझा प्रयास ने एक ऐसा मंच तैयार किया है जो रचनात्मकता, सामुदायिक भावना और साहित्यिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करेगा, और विश्वविद्यालय के उद्देश्य की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करेगा। उन्होंने क्लब के सभी पदाधिकारी और सदस्यगण को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में ऐसे क्लब विद्यार्थियों की छिपी प्रतिभाओं को निखारने में मदद करेंगे। उन्होंने यह

भी आश्वासन दिया कि विश्वविद्यालय, क्लब को हर संभव सहायता प्रदान करेगा ताकि ये छात्र साहित्यिक गतिविधियों में विश्वविद्यालय के बाहर भी अपना नाम रोशन कर सकें।

अनुप्रयुक्त विज्ञान एवं मानविकी विभाग की विभागाध्यक्ष, डॉ. गीतिका पांडेय ने छात्रों के कौशल विकास पर जोर देते हुए कहा कि यह क्लब छात्रों को पाठ्यक्रम से आगे बढ़कर अपने कौशल को निखारने का अवसर देगा। उन्होंने यह भी कहा कि विभाग हरसंभव सहायता के लिए तत्पर रहेगा और वे चाहती हैं कि क्लब के सभी सदस्य साहित्यिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लें। उन्होंने क्लब के माध्यम से सृजनात्मक वर्कशॉप, सेमिनार, गेस्ट लेक्चर और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया।

क्लब के संस्थापक, सहायक प्राध्यापक डॉ. कुँवर शेखर गुप्ता ने क्लब के उद्देश्यों और गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि क्लब छात्रों के कौशल, गुणवत्ता और साहित्यिक सोच को प्रोत्साहित करेगा। साथ ही, हर माह सेमिनार, कार्यशालाएँ, करियर काउंसलिंग, और अन्य गतिविधियों का आयोजन करता रहेगा। उन्होंने कहा कि ये सभी कार्यक्रम छात्रों की नियमित पढ़ाई को बाधित किए बिना आयोजित किए जाएंगे और छात्रों को साहित्यिक गतिविधियों में विश्वविद्यालय परिसर के बाहर भाग लेने के लिए प्रेरित करेंगे। क्लब की सह-संस्थापक, श्रीमती जॉली सेनगुप्ता ने कहा कि क्लब का उद्देश्य न केवल छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाना है, बल्कि उनकी रचनात्मकता को भी नई ऊंचाइयों तक ले जाना है।

क्लब के पदाधिकारी एवं उनकी भूमिकाएँ:

क्लब का नेतृत्व अध्यक्ष प्रखर गंगवार करेंगे, जबकि उपाध्यक्ष असरा फातिमा को बनाया गया, सचिव आलोक सिंह, ज्वाइंट सेक्रेटरी अनन्या मिश्रा, तथा कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी बारिया वकील को दी गयी। तनिश्का रूबल को डायरेक्टर ऑफ क्रिएटिविटी, अलकाम खान को सोशल मीडिया हेड तो अंशु कुमारी पाल को डायरेक्टर ऑफ मीडिया मैनेजमेंट, विशाल कुमार एवं सृष्टि को क्लब एडिटर्स की जिम्मेदारी दी गई। विवेक यादव और अमितांशु मिश्रा को डायरेक्टर ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, संगीता त्रिपाठी व एकता पाठक को क्लब का एग्जेक्युटिव मेंबर्स बनाया गया। क्लब के सभी पदाधिकारियों को डॉ. कुँवर शेखर गुप्ता ने परिचित कराया और उसके बाद सभी पदाधिकारियों व सदस्यों ने क्लब की गरिमा और मयार्दा बनाए रखने के लिए शपथ ग्रहण किया।

कार्यक्रम का संचालन क्लब की उपाध्यक्ष असरा फातिमा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन आयुषी सिंह ने प्रस्तुत किया। इस दौरान डॉ. ऋतु पांडेय, डॉ. प्रसून जोशी, डॉ. रामजी मिश्रा, डॉ. आनंद त्रिपाठी, नमिता श्रीवास्तव, पल्लवी सक्सेना, डॉ. अमृता राज, कुलदीप सिंह, शुभम चौरसिया, और मिर्जा हैदर रजा आदि प्राध्यापकों ने क्लब के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को शुभकामना प्रेषित किया। इस दौरान स्नातक अंग्रेजी साहित्य ऑनर्स प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के सभी छात्र- छात्राएं उपस्थित रहें।

बीआरसी सुखपालनगर में स्कूल चलो अभियान की रैली का हुआ शुभारंभ

● डिजिटल लैब और स्मार्ट क्लास का किया गया उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बी0आर0सी0 सुखपाल नगर में स्कूल चलो अभियान की रैली का शुभारंभ विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य, विधायक विश्वनाथगंज जीत लाल पटेल व जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी द्वारा दीप प्रज्वलित कर तथा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। स्कूल चलो अभियान के शुभारंभ के अवसर पर मुख्यमंत्री द्वारा जनपद बरेली से स्कूल चलो अभियान व संचारी रोग नियंत्रण अभियान के शुभारंभ कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया जिसे उपस्थित जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों व छात्र-छात्राओं ने आत्मसात किया। बच्चों द्वारा स्कूल चलो अभियान की रैली निकाली गई। इस दौरान अतिथियों द्वारा स्पेस लैब का निरीक्षण किया गया, जिलाधिकारी ने कहा कि इसी तरह सभी ब्लाकों में स्पेस लैब की स्थापना की जाये और बच्चों का विजिट कराया जाये। इस दौरान विधायक सदर ने फीता काटकर पीएम श्री विद्यालय सुखपालनगर के डिजिटल लैब और स्मार्ट क्लास का उद्घाटन किया। पीएम श्री सुखपाल नगर विद्यालय के बच्चों को निशुल्क पाठ्यपुस्तक कॉपी पेन अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया।

इस अवसर पर विधायक सदर ने कहा कि मै भी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ा हू, हमारे समय में सुविधाओं का अभाव था आज सभी विद्यालयों में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध है, जनपद के प्राथमिक विद्यालयों के बच्चे विभिन्न परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं यह जनपद के लिए गौरव का विषय है। वर्तमान जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के अथक प्रयासों से

विद्यालय के बच्चों को वितरित किया गया पाठ्य सामग्री साथ में अतिथिगण

प्राथमिक शिक्षा जनपद में नित नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर रहा है। उन्होने सभी शिक्षकगणों से कहा कि आप लोग अपने-अपने विद्यालयों में बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा और संस्कार दें और बच्चों को मेहनत से पढ़ायें। शिक्षा से हम अपने सपनों को साकार कर सकते हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने अध्यापकों से कहा कि यह पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों का प्रतिफल है कि इस जन्म में आप सब गुरु बने हैं तो आपकी जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है कि बच्चों को अच्छे शिक्षा प्रदान करें। जिलाधिकारी ने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में सेवा, सुरक्षा और सुशासन के साथ-साथ विभिन्न विभागीय कार्यक्रमों और लोक कल्याणकारी नीतियों के माध्यम से आम जानमानस को लाभ प्राप्त हो रहा है और धरातल स्तर पर किस पारदर्शिता के साथ इसका क्रियान्वयन हो रहा है इसके हम सभी साक्षी है। शिक्षा हमें अच्छा व संस्कारवान नागरिक तथा समाजसेवी बनाती है। शिक्षा के माध्यम से हम अपना सर्वांगीण विकास कर सकते है और अपने समाज और राष्ट्र को आगे बढ़ा सकते है। इस अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र सिंह ने सभी आये हुये अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस दौरान प्रमुख रूप से सभी खंड शिक्षा अधिकारी, डीसी प्रशिक्षण योगेंद्र सिंह, डीसी निर्माण प्रदीप यादव सहित आबिद, रामकुमार सिंह, सुशील सिंह, मंजू सिंह, धर्मेंद्र ओझा आदि उपस्थित रहे।

जबरिया दीवार ढ़हाने का आरोप, सीओ को दी गई तहरीर

लालगंज। जमीनी विवाद को लेकर आरोपियों द्वारा निर्माण कार्य मे तोड़फोड़ तथा गाली-गलौज को लेकर पीड़ित ने सीओ को शिकायती पत्र दिया है। लालगंज कोतवाली के मधुकरपुर निवासी राजनाथ शर्मा पुत्र रघुनंदन प्रसाद ने सीओ को दिये गये शिकायती पत्र में कहा है कि पहली अप्रैल को दिन में एक बजे विपक्षियों ने उसकी चहरदीवारी व पिलर में तोडफोड की। मना करने पर आरोपियो ने गाली देते हुए मारपीट का प्रयास किया। शोरगुल सुनकर गांव के लोग दौड़े तब विपक्षी जानलेवा धमकी देते चले गये। पीड़ित ने कोतवाली पुलिस को फोन कर घटना की जानकारी दी। पुलिस ने कार्रवाई नही की तो पीड़ित ने सीओ रामसूरत सोनकर को शिकायती पत्र दिया है।

न्यूज झरोखा

जिला अधिकारी ने किया बाबा बेलखरनाथ धाम में दर्शन पूजन

बेलखरनाथ धाम। जिलाधिकारी ने मंगलवार को पौराणिक स्थल बाबा बेलखरनाथ धाम में भगवान शिव का दर्शन पूजन किया।इस दौरान कंधई व दिलीपपुर पुलिस मौजूद रही। जिला अधिकारी शिव सहाय अवस्थी मंगलवार सुबह दस बजे अचानक बाबा बेलखरनाथ धाम पहुंचे जहां मंदिर के मुख्य पुजारी विश्वनाथ गिरी ने उन्हें दर्शन पूजन कराया तथा बाबा के शिव लिंग स्थापना के विषय में जानकारी दी।इस दौरान डीएम ने मंदिर के परिसर में बन रहे शनिदेव मंदिर निर्माण कार्य की जानकारी ली। जिला अधिकारी के साथ दिलीपपुर व कंधई पुलिस मौजूद रही।

अन्तःकरण की शुद्धता के लिए प्रभु की आराधना जरूरी : शांडिल्य महाराज

लालगंज। सांगीपुर के जूही शुकुलपुर गांव में हो रही श्रीमदभागवत कथा में मंगलवार को श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी दिखी। कथाव्यास आचार्य सुभाष शांडिल्य जी ने कहा कि श्रीमदभागवत मानव जीवन में अन्तःकरण की शुद्धता प्रदान किया करता है। उन्होने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी समस्त लीलाओं में संसार को मानवता के प्रति सजग और समर्पित रहने की प्रेरणा दी है। उन्होनें भक्त प्रहलाद, ध्रुव व अजामिल तथा भगवान नरसिंह से जुड़े प्रसंगों की मार्मिक व्याख्या करते हुए कहा कि निष्ठा से ईश्वर के प्रति समर्पण ही भक्ति है। उन्होनें कहा कि जब जब धरती पर अधर्मियों का अत्याचार बढ़ा तब तब श्रीहरि ने धरा पर अवतार लेकर भक्ति और धर्म की रक्षा की। उन्होनें कहा कि सदाचारी मनुष्य को ईश्वर की कृपा अनवरत प्राप्त हुआ करती है। कथा के दौरान भजन व संकीर्तन में भी श्रद्धालुओं को आस्था के गोते लगाते देखा गया। कथा के संयोजक सतीशचंद्र शुक्ल व मनीष कुमार शुक्ल ने व्यासपीठ का पूजन अर्चन किया। इस मौके पर फूलचंद्र पाण्डेय, पं. जगदम्बा प्रसाद त्रिपाठी मनीषी, पं. कैलाशपति मिश्र, डा. केके मिश्र, लालजी शुक्ल, डॉ. प्रशान्त शुक्ल, संजय शुक्ल, विवेक शुक्ल, अरविंद मिश्र, देव नारायण मिश्र, डॉ. अमिताभ शुक्ल, पवन मिश्र प्रखर, अजीत मिश्र, रामबोध शुक्ल, योगेन्द्र पाण्डेय, अजय शुक्ल, जयप्रकाश पाण्डेय, स्वामीनाथ पाण्डेय, अवधेश शुक्ल, सुरेश मिश्र, राजू पयासी, गौतम मिश्र, रामचंद्र पाण्डेय आदि रहे।

आग लगने से गेहूं की फसल जली

पट्टी। तहसील के दूलापुर गांव निवासी शिव प्रसाद मिश्र एवं कमलेश कुमार तिवारी के गेहूं के खेत के ऊपर से गुजरी विद्युत लाइन में मंगलवार दोपहर लगभग साढ़े 2 बजे शार्ट सर्किट से उठी चिंगारी से गेहूं के खेत में आग लग गई। ग्रामीणों द्वारा सबमर्सिबल पंप एवं इंडिया मार्का हैंडपंप से आग पर काबू पाये जाने से पहले ही शिव प्रसाद मिश्र का 12 बिश्वा तथा कमलेश तिवारी का 8 बिश्वा गेहूं की पकी फसल जलकर राख हो गई । मामले में ग्राम प्रधान पति श्याम लाल विश्वकर्मा शाम करीब 5 बजे लेखपाल एवं एसडीएम पट्टी को सूचना देकर किसान के गेहूं फसल की क्षति का मुआयना कर कार्रवाई की मांग की है।

विवाहिता से मार-पीट के मामले में चार पर केस

पट्टी। विवाहिता को ससुराली जनों ने मार-पीट कर घायल कर दिया था। जिसमें विवाहिता ने सास ननद देवर ससुर के खिलाफ प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की थी। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के सरसतपुर गांव की रहने वाली रंजू देवी ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया था कि दस दिन पूर्व ससुराल पक्ष के लोग उसे लाठी डंडों से मार-पीट कर घायल कर दिए थे, पुलिस ने प्रार्थना पत्र के आधार पर सास शिवकली, ननद प्रभा, देवर नवीन, व ससुर अमृतलाल, के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज करते हुए पुलिस अग्रिम कार्रवाई जुटी हुई है।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण व दस्तक अभियान का किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद में 01 से 30 अप्रैल तक संचालित विशेष संचारी रोग नियत्रण अभियान एवं 10 से 30 अप्रैल तक संचालित किये जाने वाले दस्तक अभियान का शुभारम्भ जिला चिकित्सालय परिसर से विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य व विधायक विश्वनाथगंज जीतलाल पटेल ने किया एवं रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य ने विशेष सवारी रोग नियंत्रण अभियान के शुभारम्भ अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि विगत वर्षों से चलाये जा रहे इस महत्वपूर्ण अभियान के कारण कई संचारी रोगों जैसे जेई व एआईएस का सफाया हो रहा है। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देते हुए दिशा-निर्देश के अनुसार अभियान संचालित किया जाये। इस दौरान घर-घर जाने वाली आशा बहनें लोगो को इसके प्रति जागरूक करें। इस अवसर पर विधायक विश्वनाथगंज जीतलाल पटेल ने कहा कि इस अभियान में सभी विभागों की

रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते विधायक सदर व विधायक विश्वनाथगंज

भूमिका महत्वपूर्ण है, उनके द्वारा अपने-अपने कार्य अच्छी तरह से सम्पादित किये जाये जिससे संचारी रोगों पर नियंत्रण किया जा सके। दस्तक के दौरान आशाएं लोगो को जागरूक करें तथा दी जाने वाली सेवाएं प्रदान करें। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० ए०एन० प्रसाद ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि सभी विभागों द्वारा किये जाने वाले दैनिक कार्यो का माइकोप्लान तैयार है जिसके अनुसार कार्य होगा और उन कार्यों की मानीटरिंग भी करायी जायेगी। शुभारम्भ के अवसर पर नगरीय क्षेत्र की आशाओं एवं विभागीय कर्मचारियों द्वारा जनजागरूकता के लिये एक रैली भी निकाली गयी। रैली में लोगों को अपने घर में एवं आस-पास साफ-सफाई रखने, सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करने, फुल आस्तीन के कपडे पहनने, आस-पास जल जमाव न होने देने, खिडकियों एवं रोशनदान में जाली लगवाने, छत की टंकियों की नियमित सफाई करने, सुअर बाडो को आबादी से दूर बनवाने आदि उपायों के द्वारा मच्छरों एवं संचारी रोगो से बचाव हेतु संदेश प्रसारित किया गया। इस अवसर पर जिला विद्यालय निरीक्षक के प्रतिनिधि विन्ध्याचल सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी श्रीकान्त दर्वे, समस्त अपर/ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी, सहायक मलेरिया अधिकारी, इपीडेमियोलॉजिस्ट, मलेरिया निरीक्षक एवं विभाग के सभी अधिकारी/ कर्मचारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा० आर०बी० यादव डी०पी०एम० द्वारा किया गया।

स्वस्थ व्यवहार अपनाना है, संचारी रोग को हराना है

बेलखरनाथ धाम। सीएचसी बाबा बेलखरनाथ धाम द्वारा संचारी रोग नियंत्रण के तहत जन जागरूकता रैली निकालकर ग्रामीणों को बीमारी से बचने की सलाह दी गई रैली में श्स्वस्थ व्यवहार अपनाना है, संचारी रोग को हराना है के स्लोगन से लोगों को जागरूक किया गया।

रैली को डिप्टी सीएमओ डाक्टर ए एन राय ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सीएचसी से शीतलागंज, जगदीशगढ़, करनपुर खूंझी, दीवानगंज तक रैली निकाली गई रैली के माध्यम से ग्रामीणों को गर्मी तथा बरसात में होने वाली बीमारी डेंगू दिमागी बुखार चिकनगुनिया मलेरिया जैसी घातक बीमारी से बचाव के लिए जागरूक

किया गया।इस दौरान अधीक्षक डाक्टर आरिफ हुसैन, ब्लाक कार्यक्रम प्रबंधक लोकेश कुमार श्रीवास्तव, डाक्टर अभिजीत सिंह, डाक्टर विपिन पाल, बीसीपीएम रेखा सरोज, संजय पटेल, विवेक दुबे सहित तमाम एएनएम संगनी आशा मौजूद रही।

अमृत सरोवरो व पोखरों में पूर्ण रूप से पानी भराना सुनिश्चित करें : डीएम

● जिलाधिकारी ने पेयजल की समस्याओं को लेकर अधिकारियों के साथ की बैठक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने कैम्प कार्यालय के सभागार में पेयजल की समस्याओं के दृष्टिगत अधिकारियों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने कहा कि ग्रीष्म ऋतु की शुरूआत हो गयी है और जनपद का वाटर लेवल नीचे जा रहा है जिसको लेकर अधिकारियों निर्देशित करते हुये कहा कि जो भी हैण्डपम्प खराब हो गये है और जो भी रिबोर होने वाले है उन स्थानों को चिन्हित कर समस्त खण्ड विकास अधिकारी व ईओ अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को लगाकर 15 से 20 दिन में अभियान चलाकर जो भी हैण्डपम्प रिबोर योग्य है उन्हें रिबोर कराया जाये और जो भी हैण्डपम्प मरम्मत योग्य है

बैठक में अधिकारियों को निर्देश देते जिलाधिकारी

उनकी मरम्मत करायी जाये और इन सभी की रिपोर्ट जिला विकास अधिकारी को उपलब्ध करायें। पेयजल के दृष्टिगत प्रधानों का भी सहयोग लिया जाये। शहरी क्षेत्रों में जितने भी हैण्डपम्प रिबोर होने की स्थिति में है उन्हें तत्काल संज्ञान में लेकर रिबोर कराया जाये। उन्होने कहा जनपद में जो भी अमृत सरोवर व पोखर है यदि उनमें पानी नही हैं तो विभिन्न जल श्रोतो जैसे नहर, सरकारी नलकूप, माइनर, प्राइवेट आदि के माध्यम से अमृत सरोवरों में पानी पूर्ण तरीके से भराना सुनिश्चित करें जिससे जनपद के पशु-पक्षियों को पानी की सुविधा उपलब्ध हो सके। उन्होने कहा कि जनपद में जो भी गौशालायें है उनमें हैण्डपम्प या नलकूप चालू स्थिति में रहे और गोवंशों को आसानी से पानी मिल सके इसके लिये जो भी पानी के माध्यम से उनमें पानी भरा रहे। उन्होने सम्बन्धित अधिकारियों को कड़े निर्देश देते हुये कहा कि यदि किसी भी दशा में प्यास की वजह किसी पशु की मृत्यु होती है तो सम्बन्धित के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जायेगी। सड़कों के किनारे जो भी गड्ढे है उसमें भी पानी भरवाने की कार्यवाही की जाये। जल निगम के अधिशासी अभियन्ता को निर्देशित किया कि जनपद में जो भी पेयजल योजनायें संचालित है उनकी प्रगति रिपोर्ट उपलब्ध करायें। बैठक में अधिशासी अभियन्ता जल निगम ने बताया कि पानी की जांच हेतु लैब बनाया गया है जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जहां भी दूषितध्खारे पानी की समस्या है वहां के दूषित पानी की टेस्टिंग कराकर रिपोर्ट उपलब्ध करायें। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से कहा है कि यदि पानी की जांच किसी को करानी हो तो जल निगम कार्यालय व दिग्विजय सिंह के मोबाइल नम्बर-9169048466 पर सम्पर्क कर सकते है। उन्होने कहा कि खण्ड विकास अधिकारियों व ईओ को निर्देशित किया कि किसी भी दशा में हीटवेव से मृत्यु न होने पाये इसका विशेष ध्यान रखा जाये, हीटवेव से बचाव हेतु लोगों को जागरूक किया जाये। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा, परियोजना निदेशक डीआरडीए दयाराम यादव व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

कार चालक के खिलाफ केस दर्ज

पट्टी। पट्टी खास निवासी अजय कुमार गुप्ता बीते 21 मार्च सायं लगभग साढ़े तीन बजे बाइक से पट्टी चिलबिला मुख्य मार्ग पर बनी तेरहमील की तरफ जा रहे थे। रास्ते में तरदहा पेट्रोल पंप के पास पीछे से आए कार चालक ने उसकी बाइक में टक्कर मार दिया था। जिससे वह बाइक सहित सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गये थे। स्थानीय लोगों की मदद से स्वजन द्वारा उसे उपचार के लिए सीएचसी पट्टी ले जाया गया वहां से गंभीर हालत को देखते हुए डॉ ने राजा प्रताप बहादुर अस्पताल रेफर कर दिया था। तीन दिन उपचार के बाद भी हालत में सुधार नहीं होने पर बेहतर उपचार के लिए स्वजन द्वारा निजी अस्पताल ले जाया गया वहां अजय कुमार का उपचार चल रहा है। मामले में कंधई पुलिस ने अजय के भाई विजय कुमार गुप्ता की तहरीर पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी।एसओ कंधई अवन कुमार दीक्षित ने बताया कि विजय कुमार की तहरीर पर कार चालक के खिलाफ लापरवाही से गाड़ी चलाने सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज कर जांच की जा रही है।

वाटर एटीएम व इंडिया मार्का खराब होने से हो रही पेयजल की समस्या

पट्टी। वाटर एटीएम व इंडियामार्का खराब होने से तहसील व कोतवाली के आस-पास पेयजल की समस्या उत्पन्न हो गई है। मार्च में ही तेज गर्मी का एहसास शुरू हो गया है गला प्यास से सूखने लगा है।

पट्टी तहसील व कोतवाली के आस-पास पेयजल की घोर समस्या उत्पन्न हो गई है। तहसील के आस-पास लगे वाटर एटीएम ठीक सामने लगा इंडियामार्का कोतवाली के समीप लगा हैंडपंप पानी की किल्लत हो गई है। प्रतिदिन सैकड़ो की संख्या में फरियादी तहसील व कोतवाली पहुंचते हैं। कोतवाली गेट के बगल बने नल से आस-पास के दुकानदारों के साथ फरियादी भी अपनी प्यास बुझाते है। वहीं आस-पास के व्यापारियों को काफी दूर से पानी लाना पड़ रहा है। इस संबंध में रविवार की शाम आस-पास के लोगों से बात की गई तो उन्होंने इस समस्या के विषय में जानकारी उपलब्ध कराई। इस संबंध में नगर पंचायत अध्यक्ष अशोक जयसवाल से बात की गई तो उन्होंने बताया कि 15 अप्रैल तक वाटर एटीएम ठीक करा दिया जाएगा। इंडिया मार्का हैण्डपम्प को कई बार दुरुस्त कराने का प्रयास किया गया पर दूसरा रिबोर कराना पड़ेगा। जल्द ही वहां से आसपास ही कहीं दूसरी जगह उसे शिफ्ट कर दिया जाएगा।

विद्यालय व बस्ती के समीप शराब का ठेका खोलें जाने को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश

बेलखरनाथ धाम। सरकार की गाइड लाइन को दरकिनार कर दूसरे गांव के नाम से आवंटित देशी शराब का ठेका अन्यत्र गांव में खोले जाने की शिकायत ग्राम प्रधान सहित दर्जनों ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री सहित उच्च अधिकारियों से की है। कंधई थाना क्षेत्र के शीतलागंज बाजार में देशी शराब के ठेके का आवंटन हुआ है। लेकिन ठेकेदार शराब की दुकान मोलानी गांव के समीप बीआरसी केंद्र व प्राथमिक विद्यालय के पास तथा बस्ती के करीब खोल रहा है।जिसकी शिकायत रुदापुर, दूलापुर व मोलानी गांव के ग्राम प्रधान सीमा विश्वकर्मा, राहुल मिश्रा, शिव प्रसाद मिश्र, श्याम निरंजन तिवारी, रोहित मिश्र, गायत्री देवी, ओमप्रकाश मिश्र, जुम्मन, जय प्रकाश, बृज नारायण आदि ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री जनसुनवाई पोर्टल व डीएम से शिकायत करते हुये मोलानी गांव से ठेका हटाकर शीतलागंज में खोलें जाने की मांग की है। डीएम ने मामले की जांच जिला आबकारी अधिकारी को दी है।

विद्यालय में प्रथम दिन रहा उत्सव का माहौल

पट्टी। आसपुर देवसरा क्षेत्र के अमरगढ़ बाजार स्थित गीता देवी कान्वेंट स्कूल में वर्ष से प्रथम दिन बच्चों पर पुष्प वर्षा एवं सुंदरकांड का आयोजन किया गया। आयोजन में बच्चे, अध्यापक के साथ साथ अभिभावक भी उपस्थित रहते हैं। विद्यालय प्रबंधक शिवकुमार सेठ ने बताया कि योगी सरकार के मंशा अनुसार विद्यालय में बच्चों पर पुष्प वर्षा के साथ ही सुन्दर कांड का आयोजन किया गया। जिसमें प्रधानाचार्या अदिती यादव, शिक्षिका काजल सरोज, सुंदरी यादव, नेहा मौर्य, बबली यादव, खुशी मौर्य व सुदीप बारी के साथ क्षेत्र के पंडित विंदेश्वरी शर्मा, बच्चा गुरु, कबीर सरोज, संजू श्रीवास्तव, जवाहर बिंद, अध्यापकगण, अभिभावक व छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट व तोड़फोड़ का केस

लालगंज। कोतवाली पुलिस ने चार आरोपियो के खिलाफ मारपीट व गालीगलौज तथा तोडफोड का केस दर्ज किया है। लालगंज के पूरे जोधा निवासी रमाकांत यादव पुत्र रामअधार ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती उन्तीस मार्च को शाम साढे सात बजे विपक्षी उसके दरवाजे पर आ धमके। विपक्षियों हरिशंकर उर्फ तूफान पुत्र गौरीशंकर, सुधा तथा सुमन व हरिशंकर की मां गालीगलौज करने लगी। मना करने पर आरोपियों ने मारपीट शुरू कर दी। शोर मचाने पर आरोपियों ने उसकी दीवार गिरा दिया। लोगों को जुटता देख आरोपी जानलेवा धमकी देते चले गये। तहरीर के आधार पर पुलिस ने सोमवार की रात हरिशंकर समेत चार आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

तीर्थस्थलियों में अयोध्या का मान मस्तिष्क जैसा : स्वामी सम्पूर्णानंद

लालगंज। गौखाड़ी डगरारा में प्रभु प्रेम आश्रम महादेव धाम में हो रही श्रीराम कथा भक्ति ज्ञान यज्ञ में मंगलवार को स्वामी सम्पूर्णानंद जी महराज ने कहा कि अयोध्या समस्त तीर्थस्थलियों की मस्तक है। उन्होने कहा कि भगवान श्रीराम को अयोध्या का हर वासी इसलिए सदैव प्रिय रहा क्योंकि अयोध्या राज्य नीति और धर्म की मयार्दा का प्रतीक है। स्वामी सम्पूर्णानंद जी ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने मां कौशिल्या की प्रथम वंदना भी इसलिए किया क्योंकि मां कौशिल्या सूर्य का प्रतिनिधित्व किया करती हैं। उन्होने बताया कि लक्ष्मण जी तथा भरत व शत्रुघ्न ने प्रभु श्रीराम की इच्छाओं का सदैव आदर करते हुए रामराज्य की परिकल्पना को साकार बनाया। उन्होनें कहा कि ज्ञान का कभी जीवन में अभिमान नहीं होना चाहिए। ज्ञान का अभिमान परमात्मा की प्राप्ति का सबसे बड़ा बाधक है। उन्होनें कहा कि ज्ञान सदैव विनयशीलता का बोधक है। कथा में व्यासपीठ से श्रीरामचरितमानस की चैपाईयों का उदाहरण रखते हुए स्वामी सम्पूर्णानंद जी ने प्रभु श्रीराम की महिमा का गुणगान किया। भजन व संगीत पर भी श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। संयोजन समाजसेवी धर्मेन्द्र प्रताप सिंह चैहान ने व्यासपीठ का पूजन अर्चन किया। इस मौके पर आचार्य धीरेन्द्रपाल त्रिपाठी, पूर्व प्रधान राजू पाण्डेय, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, विपिन पाण्डेय, रवीन्द्र गुप्ता, रामजी जायसवाल, बृजेश सिंह, पप्पू तिवारी, आचार्य हरिशंकर मिश्र, उमेशपाल मिश्र, कमलाकांत पाण्डेय, लालजी गुप्ता, कलेश्वर सिंह, चंद्रधर ओझा, पप्पू सिंह, हरेन्द्र सिंह, आलोक सिंह, हरिशरण सिंह आदि रहे।

शराब ठेके को लेकर महिलाओं ने खोला मोर्चा

शराब ठेके को लेकर आक्रोशित महिलाएं

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना कोतवाली देहात के मोहनगंज बाजार पूरे खुसई की महिलाओं ने शासन प्रशासन को शिकायती पत्र देकर न्याय की गुहार लगायी है। ग्रामीण महिलाओं का कहना कि शराब का ठेका पुरानी जगह से हटा कर कुलदेवी चबूतरे के समीप खोले जाने से ग्रामीणों में आक्रोश है। गांव में ठेका खोले जाने से महिलाओं को घर से निकलना मुश्किल हो जाएगा। महिलाओं की माने तो उनके द्वारा आबकारी विभाग से लेकर जिले के आला अधिकारियों को लिखित शिकायत की गई। जहां मामले पर शासन प्रशासन ग्रामीणों को गुमराह कर चुप्पी साधे बैठा है। वहीं शराब व्यवसायी शराब ठेका खोलने पर अड़ा है। जिसे लेकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश व्याप्त है।

खड़ी ट्रक में घुसी सीएनजी ऑटो चार घायल एक की मौत

सीएनजी ऑटो चालक की उजागर हुई बड़ी लापरवाही

महेवाघाट कौशाम्बी। महेवाघाट कोतवाली के टिकरा गांव के पास मंगलवार की शाम 4:00 बजे एक खड़े ट्रक में सवारी से भरी सीएनजी ऑटो जा घुसी हादसे में पांच लोग घायल हो गए हैं जिनमें इलाज के दौरान एक व्यक्ति की मौत हो गई है दुर्घटना के बाद मौके पर आसपास के लोग पहुंचे मामले की सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी गई मौके पर पहुंची एंबुलेंस ने सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया है। जानकारी के मुताबिक ऑटो चालक अतीक अहमद 25 वर्ष निवासी मनमऊ कोतवाली मंझनपुर सीएनजी ऑटो में मंझनपुर से सवारी लेकर महेवा घाट होते हुए बांदा जा रहा था जैसे ही ऑटो चालक महेवा घाट थाना क्षेत्र के टिकरा गांव के पास पहुंचा सड़क किनारे खड़े ट्रक से सीएनजी ऑटो चालक टकरा गया हादसे के बाद मौके पर चीख पुकार मच गई दुर्घटना देखकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे मामले की सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी गई और घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया इस हादसे में सीएनजी ऑटो चालक अतीक सहित पीछे बैठी सवारी दयाल उम्र 55 वर्ष निवासी अतरौली जिला बांदा आरती उम्र 25 वर्ष नीरज उम्र 32 वर्ष निवासी जिला बांदा शिवदयाल उम्र 70 वर्ष पुत्र कायदे निवासी अतरौली अतर्रा जनपद बांदा सभी लोग बुरी तरह से घायल हो गए हैं आसपास के मौजूद लोगों ने ऑटो में फंसे सभी घायलों को बाहर निकल कर एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल में भर्ती कराया जहां शिवदयाल की इलाज के दौरान मृत्यु हो गई जैसे ही जानकारी परिजनों को चली तो कोहराम मच गया वहीं घटना को अंजाम के बाद मौके से ट्रक सहित चालक फरार हो गया मृतक के शव को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

खिलाड़ियों को मेडल पहनाकर खंड शिक्षा अधिकारी कड़ा ने किया पुरस्कृत

राज्यस्तर पर हैंडबॉल में गोल्ड मेडल जीतकर लाने वाले खिलाड़ी हुए सम्मानित

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी परिषदीय स्कूलों की राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए कड़ा की टीम जनपद का प्रतिनिधित्व कर जिला व्यायाम शिक्षक राजीव सिंह के निर्देशन में हैंड बाल में गोल्ड मेडल जीती थी। जिस पर मंगलवार को खंड शिक्षा अधिकारी कड़ा नीरज कुमार उमराव ने सभी खिलाड़ियों व कोच को मेडल पहनाकर व उपहार देकर सम्मानित किया। साथ ही कहा कि बच्चों के अंदर खेल की अनेक प्रतिभाएं है जिन्हें और तराशने की आवश्यकता है। यही खिलाड़ी आगे चलकर राष्ट्रीय खेलों में प्रतिभाग कर क्षेत्र का नाम रोशन करेंगे। इस अवसर शिक्षक धनंजय साहू ने टीम को पांच सौ एक रुपए का नगद पुरस्कार प्रदान कर उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में अफरोज आलम,अरुण मिश्रा, जैनेंद्र वर्मा, जुबैर अहमद, दीपक माले, मारुतिनंदन त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

कंपोजिट विद्यालय परसरा में मनाया गया प्रवेश उत्सव

भरवारी कौशाम्बी कंपोजिट विद्यालय परसरा में नए सत्र के प्रथम दिन 01 अप्रैल को प्रवेश उत्सव मनाया गया बच्चों को तिलक लगाकर उनका स्वागत किया गया जिसके अंतर्गत कक्षा एक में कुल 14 नामांकन किया गया सर्वप्रथम सभी बच्चों को टीका लगाया गया सभी नवीन नामांकित बच्चों को विद्यालय की तरफ से एक किट प्रदान किया गया जिसमें तीन कॉपियां किताबें पेंसिल रबर इरेजर कलर वह चॉकलेट का पैकेट प्रोत्साहन के रूप में अभिभावकों के समक्ष प्रदान किया गया इस अवसर पर प्रधानाध्यापक रविंद्र मिश्रा सहायक अध्यापिका नीतू सक्सेना सरिता चौधरी जिमी आदि शिक्षिकाएं व अभिभावक उपस्थित रहे सुचित्रा विश्वकर्मा आदि शिक्षक मौजूद रहे।

तिलक रोली लगाकर कंपोजिट विद्यालय में बच्चों को दिया गया प्रवेश

कोखराज कौशांबी सिराथू तहसील क्षेत्र के कशिया पश्चिम कम्पोजिट विद्यालय में 1 अप्रैल नए वर्ष पर बच्चों को प्रवेश महोत्सव मनाया गया बच्चों को तिलक और रोली लगाकर स्वागत किया गया इस मौके पर सिराथू खण्ड विकास अधिकारी भावेश शुक्ला ग्राम विकास अधिकारी बुद्ध प्रकाश गौतम प्रधानाचार्य सचिन ओझा पुष्पा सिंह, अनीता पाण्डेय, ज्योति राज, नितेश जायसवाल, विकाश चन्द्र केशरवानी, आलोक कुमार पटेल,नीरज कुमार, प्रेम प्रकाश सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

प्राथमिक विद्यालय हिसामपुर परसखी में जागरूकता रैली निकालकर नामांकन के लिए दिया संदेश

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी एक अप्रैल से जनपद के विभिन्न स्कूलों ने नया प्रवेश सत्र प्रारम्भ हो गया है। ऐसे में मंगलवार को कड़ा ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय हिसामपुर परसखी में स्कूली छात्रों व शिक्षकों ने शिक्षा की अलख जगाने को लेकर एक जागरूकता रैली सुबह 10 बजे स्कूल प्रांगण से निकाली गयी। जिसमें स्कूली बच्चों ने हाथों में शिक्षा की अलख जगाने का स्लोगन लिखा बैनर व पोस्टर लेकर पूरे गाँव में भ्रमण करते नजर आये। और लोगों को जागरूक करते हुए कहा कि "दीप से दीप जलायेंगे साक्षर देश बनायेंगे एक दो तीन चार, साक्षरता की जय जय कार "। "पापा सुन लो विनय हमारी, पढ़ने की अब उम्र है हमारी" जैसे नारे लगाते हुए ग्रामीण अभिभावकों को जागरूक किया। पूरे गाँव में भ्रमण के बाद वापस स्कूल परिसर में शिक्षा साक्षरता रैली का समापन हुआ। इसके पहले स्कूल में आए हुए बच्चों को रोली चंदन का टीका लगाकर स्वागत किया गया।इस दौरान विद्यालय के प्रधानाध्यापक गुलाब सिंह ने कहा कि शिक्षा से साक्षर समाज की स्थापना की जा सकती है। और शिक्षित समाज से पूरे गाँव का विकास होता है। शिक्षा साक्षरता रैली में शिक्षक रामकृष्ण, रिया सेठी, बीरेंद्र कुमार सहित सभी टीचर स्टाफ व बच्चे मौजूद रहे।

सेवानिवृत शिक्षकों को बीआरसी कड़ा में दी गई भावपूर्ण विदाई

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हुए शिक्षकों को बी आर सी कड़ा में मंगलवार को ब्लॉक शिक्षक संघ की अगुवाई में खंड शिक्षा अधिकारी कड़ा नीरज कुमार उमराव की अध्यक्षता में एक विदाई कार्यक्रम आयोजित किया गया। ब्लाक के कंपोजिट विद्यालय गडरियन का पूरा में जरूरत शिक्षक बृजभूषण दिवाकर व कंपोजिट विद्यालय सैनी में कार्यरत शिक्षिका पुष्पा देवी 31 मार्च को विभाग से सेवानिवृत्त हो गए ब्लॉक के जूनियर व प्राथमिक संघ ने शिक्षकों के सेवानिवृत होने पर शिक्षकों को माला पहनाकर अंगवस्त्र, डायरी, पेन व उपहार देकर खंड शिक्षा अधिकारी ने सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि हमारे शिक्षक केवल विद्यालय से रिटायर हो रहे है विभाग व समाज में अपनी सेवाएं देते रहे। कार्यक्रम का संचालन मारुतिनंदन त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में पूर्व जिलाध्यक्ष मुलायम सिंह, ब्लाक अध्यक्ष अफरोज आलम व कोषाध्यक्ष विजय वर्मा, धनंजय साहू, संदीप त्रिपाठी, दीपक माले, संतोष कुमार, भरत लाल, अजय कुमार अरुण कुमार मिश्रा,मंत्री जैनेंद्र वर्मा, बी डी राना,सहित काफी शिक्षक मौजूद रहे।

रोली टीका चंदन लगाकर बच्चों का किया स्वागत

कौशाम्बी कंपोजिट विद्यालय पश्चिम शरीरा में नये शैक्षिक सत्र के प्रारम्भ के अवसर पर विद्यालय को विभिन्न फूल पत्ती, गुब्बारे एवं झंडियों से सजाया गया। प्रधानाध्यापक गुरुदयाल द्वारा रोली टीका चंदन लगाकर बच्चों का स्वागत किया गया।वरिष्ठ अध्यापक नितिन कुमार यादव ने पुष्प व माला से बच्चों का स्वागत किया।सहायक अध्यापक मुकेश कुमार ने बच्चों को टीका लगाकर उनका उत्साह वर्धन किया प्रधानाध्यापक द्वारा नव शैक्षिक सत्र पर बच्चों की उपस्थिति के संदर्भ में सामुदायिक सहभागिता पर चर्चा करते हुए बच्चो को नियमित विद्यालय भेजने पर जोर दिया गया। इस अवसर पर शैलेंद्र मिश्र, शीला, राजकुमारी, मीना, अर्चना आदि अनेक शिक्षक मौजूद रहे।

गायब दोनों बालक को पुलिस ने किया बरामद

कोखराज कौशांबी। प्रयागराज जनपद के नवाबगंज थाना क्षेत्र के मुबारकपुर गांव निवासी उमर पुत्र मोहम्मद राइस अपने साथी आला के साथ ईद के दिन अपने मामू के घर कोखराज थाना क्षेत्र के महमदपुर गांव निवासी मोहम्मद नौसेफ के घर आए थे मामू से मिलने के बाद दोनों युवक बाइक से अपने घर जा रहे थे लेकिन रहस्यमय परिस्थितियों में दोनों बालक लापता हो गए और उनका मोबाइल दूसरे युवक के पास पहुंच गया कुछ देर बाद दोनों का मोबाइल स्विच ऑफ हो गया मामू ने कोखराज पुलिस को दोनों बालकों के गायब होने की सूचना दी पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर बालकों की खोज शुरू की और सर्विलांस से उनके मोबाइल को ट्रेस शुरू किया पुलिस की जांच पड़ताल के बाद गायब हुए दोनों बालक अचानक प्रकट हो गए हैं बालक क्यों गायब हुए हैं किसकी साजिश थी और गायब करने के पीछे इन बालक और उनके परिवार रिश्तेदारों के क्या मंशा थी यह तमाम बातें बड़ी जांच का विषय है पुलिस ने बताया कि गायब दोनों बालकों को प्रयागराज जनपद के कौड़िहार से बरामद कर लिया गया है और परिजनों को सौंप दिया गया है पुलिस का कहना है कि बालको से पूछताछ की जा रही है।

धरना प्रदर्शन कर अटेवा कौशाम्बी ने मनाया काला दिवस

कौशाम्बी पुरानी पेंशन बहाली और एनपीएस यूपीएस और निजीकरण के समाप्ति के लिए मंगलवार को डायट मैदान से मंझनपुर चौराहे तक शिक्षक कर्मचारियों के द्वारा एनपीएस यूपीएस के विरोध में एक रैली निकाली गई और डीएम के माध्यम से प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया गया अटेवा के अध्यक्ष विजय कुमार बन्धु के आव्हान पर जिला संयोजक कुशल सिंह के नेतृत्व में धरना प्रदर्शन आयोजित हुआ ज्ञापन में कहा गया कि पूरे देश के शिक्षक कर्मचारियों द्वारा एनएमओपीएस के बैनर तले लंबे समय से पुरानी पेंशन बहाली और निजीकरण की समाप्ति की मांग उठाई जाती रही है आप में ऐसे मामलों में निर्णय लेने की अभूतपूर्व क्षमता है इसलिए देश का शिक्षक कर्मचारी आपसे यह उम्मीद करता है कि उनकी सामाजिक सुरक्षा पुरानी पेंशन बहाली का निर्णय लिया जाएगा देश का शिक्षक कर्मचारी एनपीएस के डंस को झेल रहा है। वक्ताओं ने कहा कि हाल में ही सरकार द्वारा यूनिफाइड पेंशन स्कीम यूपीएस देने का निर्णय लिया गया है इसके अंतर्गत जो प्रावधान सामने आए हैं इससे प्रतीत होता है कि यह एनपीएस से भी घातक सिद्ध होगा इससे देश के अर्ध सैनिक बल सहित शिक्षक कर्मचारी स्वयं को ठगा महसूस कर रहा है देश के करोड़ों युवा शिक्षक कर्मचारियों अधिकारियों के बुढ़ापे की लाठी पुरानी पेंशन है जिसके लिए लगातार देश भर के कर्मचारी अलग-अलग माध्यम से अपने हक की आवाज उठाते हैं एनपीएस यूपीएस के खिलाफ 01 अप्रैल 2025 को पूरे देश में काला दिवस मनाया गया तथा 1 मई 2025 को मजदूर दिवस पर शिक्षक कर्मचारी व अधिकारी ने जंतर मंतर पर विशाल प्रदर्शन करने का निर्णय लिया है शिक्षक और कर्मचारियों को अपने कार्यस्थल पर काली पट्टी बांधकर कार्य करना था। उसके पश्चात हर एक विभाग से सभी कर्मचारी एवं शिक्षक डायट मैदान पर एकत्रित हुए सफाई कर्मचारी संघ उद्यान विभाग के कर्मचारी लेखपाल संघ मलेरिया विभाग लोक निर्माण विभाग के कर्मचारी एवं अन्य विभाग के कर्मचारी संगठन ने अपना सहयोग दिया जिला सह संयोजक राजेंद्र सिंह नयन सिंह जिला मंत्री रमेश चंद्र सेन संगठन मंत्री विनोद यादव इकबाल अली जिला प्रवक्ता विकास पांडे आईटी सेल प्रभारी आशीष कुमार सिंह जिला मीडिया प्रभारी अंकित श्रीवास्तव फार्मासिस्ट संघ से रमेश सिंह ओम प्रकाश सिंह हनुमत सिंह भानु प्रताप सिंह सोनी केसरवानी रामू सिंह शैलेंद्र सिंह रवि शंकर दुबे अनीता केसरवानी राजेन्द्र सिंह अमित आदि लोग उपस्थित रहे।

मनमाने तरीके से गृहकर लगाए जाने पर नगर वासियों ने जताया विरोध

भरवारी बाजार के लोगों के साथ नगर पालिका की अध्यक्ष कर रही हैं मनमानी

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी कार्यालय द्वारा नगर वासियों के ऊपर मनमानी तरीके से गृहकर लगाया गया है। मनमाने तरीके से गृहकर लगाए जाने पर आक्रोषित डेढ़ दर्जन से अधिक नगर के लोगों ने अधिशाषी अधिकारी के समक्ष उपस्थित होकर विरोध दर्ज कराते हुए ज्ञापन सौंपकर आदेश को वापस लेने के लिए कहा गया। नगर वासियों का आरोप है कि नगर पालिका परिषद भरवारी द्वारा नोटिस जारी की गई है जिसमें मनमाने ढंग से गृहकर लगाया गया है। नोटिस में भवन का क्षेत्रफल व रेट नहीं दशार्या गया है, गृहकर में काफी असमानता भी है। उदाहरण के तौर पर वार्ड नं0 24 शहीद गुलाब सेन नगर (शिशु मन्दिर कॉलोनी) के निवासी ज्ञान प्रकाश द्विवेदी का मकान 1550 = 750 वर्ग फिट में बना है दो मंजिला होने के कारण कुल इनका क्षेत्रफल 1500 वर्गफिट होता है 60 पैसे वर्गफुट के हिसाब से कुल गृहकर 900 रु० होता है इनको 900 रु० गृहकर नोटिस जारी की गई है जो नियामनुसार सही है। इन्ही के सटे हुए दक्षिण में निखिल खरे पुत्र स्वं० राघवेन्द्र खरे का मकान है जिसका क्षेत्र 3050=1500 वर्ग फिट है। इनका भी दो मंजिला मकान बना हुआ है, जिसका कुल क्षेत्रफल 3000 वर्ग फिट बनता है 60 पैसे वर्गफिट की दर से इनका गृहकर 1800 रू० बनता है। लेकिन अब भरवारी नगर पालिका परिषद द्वारा गृहकर की नोटिस 7500 रु० जारी की गई जो मनमाने पन का प्रतीक है। ज्ञापन सौंपकर नगर वासियों ने अधिशाषी अधिकारी को चेताया कि यदि मनमाने तरीके से जारी किए गए आदेश को वापस नहीं लिया गया तो नगर वासियों के द्वारा भारी आंदोलन किया जाएगा।

अकूत संपत्ति के धनी बने दो दर्जन पंचायत सचिव जांच की मांग

कौशांबी। ग्राम पंचायत में विकास कार्यों का जिम्मा लिए दो दर्जन से अधिक पंचायत सचिव कुछ वर्षों के बीच में अकूत संपत्ति के धनी बन गए हैं भ्रष्टाचार की काली कमाई से एकत्रित किए गए धन से अपने जनपद के निवास स्थान के साथ-साथ इलाहाबाद जैसे शहरों में भी कई पंचायत सचिव के आलीशान कोठी बंगला बन गए हैं इतना ही नहीं भ्रष्टाचार में लिप्त पंचायत सचिव लग्जरी वाहनों समेत मोटे बैंक बैलेंस के मालिक बन चुके हैं मामूली वेतन पाने वाले पंचायत सचिव का रहन-सहन राजवाड़ा जैसे हो गया है लेकिन उसके बाद भी काली कमाई में मशगूल पंचायत सचिव के कारनामों की ओर शासन प्रशासन ने ध्यान नहीं दिया है जिससे कई पंचायत सचिव बेलगाम है मंझनपुर ब्लॉक सिराथू ब्लॉक और मूरतगंज ब्लॉक में तैनात कई पंचायत सचिव का रहन सहन नवाबों जैसे है कुछ वर्षों में पंचायत सचिव की बदली स्थिति के मामले में यदि भ्रष्टाचार निवारण संगठन से उनकी संपत्तियों की जांच कराई गई तो भ्रष्टाचार में लिप्त कई पंचायत सचिव के बड़े कारनामों का खुलासा होगा योगी सरकार के भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था में पंचायत सचिव को संरक्षण देकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाले उनसे हिस्सा वसूलने वाले ब्लॉक के अधिकारी और विकास भवन के अधिकारियों के भी भ्रष्टाचार के कारनामों का जांच के दौरान बड़ा खुलासा होगा।

स्कूटी सवार को डंपर ने मारी टक्कर गंभीर घायल

कोखराज कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के रोही चौराहे के पास तेज रफ्तार डंपर में स्कूटी सवार को टक्कर मार दिया है जिससे स्कूटी सवार सड़क पर गिर पड़ा और गंभीर घायल हो गया है आसपास के लोग मौके पर पहुंचे मामले की सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी गई है घायल स्कूटी सवार को इलाज के लिए 108 एंबुलेंस से नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां हालत गंभीर होने पर उसे प्रयागराज रेफर कर दिया गया है। जानकारी के मुताबिक नगर पालिका परिषद भरवारी के पुराना बस अड्डा निवासी पुरुषोत्तम लाल पुत्र मुन्नू लाल स्कूटी से मूरतगंज की ओर जा रहे थे जैसे ही वह रोही चौराहे के पास पहुंचे स्कूटी में डंपर ने टक्कर मार दिया जिससे स्कूटी सवार स्कूटी समेत सड़क गिर गए और घायल हो गए हैं सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल को 108 नंबर एंबुलेंस से इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया है जानकारी मिलते ही परिवार के लोग भी अस्पताल पहुंच गए हैं जहां हालत गंभीर होने पर परिजनों ने उन्हें इलाहाबाद के अस्पताल में इलाज कराने को लेकर चले गए हैं दुर्घटना के बाद डंपर चालक वाहन समेत मौके से फरार हो गया है पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर वाहन की तलाश कर रही है।

कार्यों में रूची न लेने पर कड़ा व सिराथू को छोडकर सभी बीडीओ का एक दिन का वेतन रोकने के दिए निर्देश

जिलाधिकारी ने की जिला शिक्षा एवं अनुश्रवण समिति/आपरेशन कायाकल्प की समीक्षा बैठक

कौशाम्बी जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी की अध्यक्षता में सम्राट उदयन सभागार में जिला शिक्षा एवं अनुश्रवण समिति/आपरेशन कायाकल्प की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने ऑपरेशन कायाकल्प की समीक्षा के दौरान सभी ई0ओ0 एवं खण्ड शिक्षाधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि कोई भी विद्यालय कायाकल्प से वंचित न रह जाय जो भी कार्य विद्यालयों में कार्य बचे है एक माह के अन्दर पूर्ण करने के दिए निर्देश। अपार इन्रोलमेन्ट का कार्य 70 प्रतिशत से नीचे न हो। सारे बी0ओ0 सुनिश्चित करेंगे। ब्लाकों में होने वाली टास्कफोर्स की बैठकों में ई0ओ0 एवं बी0ओ0 प्रतिभाग करेंगे। उन्होंने कहा कि गर्मी को देखते हुए हर स्कूल में पीने के पानी की व्यवस्था होनी चाहिये। अगर कही कमी आती है तो उसकी जिम्मेदारी बी0डी0ओ0 की होगी। किताबों का वितरण समय से सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा कि सर्घषशील व मध्यम प्राथमिक विद्यालयों का निरीक्षण जिला स्तरीय अधिकारियों, बी0ओ0 डायट मेंटर के द्वारा लगातार निरीक्षण कर उन्हें सक्षम बनाने का कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि जनपद के ईट भट्टों की जॉच करें व सुनिश्चित करें वहॉ कोई छोटा बच्चा या गर्भवती महिलायें काम तो नहीं कर रहीं है अगर ऐसा पाया जाता है तो इन भट्टों को बन्द करने की कार्यवाही श्रम प्रवर्तन अधिकारी के द्वारा की जाय। निरीक्षण का कार्य बी0डी0ओ0 द्वारा किया जायेंगा साथ ही ऐसे छोटे बच्चें ईट भट्टों पर पाये जाय तो उनको स्कूल भेजने का कार्य बी0ओ0 द्वारा किया जायेंगा। उन्होंने कार्यो में रूची न लेने पर कड़ा व सिराथू को छोडकर सभी बी0डी0ओ0 का एक दिन का वेतन रोकने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन विद्यालायों मे बाउड्रीवाल का कार्य नहीं पूरा है उसे एक माह के अन्दर पूर्ण करायें नहीं तो कठोर कार्यवाही की जायेंगी। उन्होंने कहा कि प्राथमिक, कम्पोजिट एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कराये जा रहें मरम्मत कार्यों का निरीक्षण करते हुए कार्यों को गुणवत्तापूर्ण एवं समयान्तर्गत पूर्ण करायें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि विद्यालयों में चल रहें निर्माण कार्य को इस माह तक अवश्य पूर्ण करा लिया जाय। उन्होंने उन्होंने कहा कि निरीक्षण के समय सभी विद्यालयों में दोनों टैबलेट का प्रयोग किया जा रहा है या नहीं, बच्चों को दीक्षा के कंटेंट दिखाए जा रहे हैं या नहीं, डिजिटल रजिस्टर के लिए प्रयोग किया जा रहा तो फंक्शनिंग में दोनों टैबलेट होने चाहिए एवं विद्यालय में मौजूद रहने चाहिए तथा इसका कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। बच्चों के हित को ध्यान में रखकर कार्य करें, बच्चों का हित सर्वोपरि है, बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ न करें। उन्होंने सभी खण्ड विकास अधिकारियों एवं खण्ड शिक्षाधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्र के सभी विद्यालयों का निरीक्षण कर छात्र-छात्राओं का अपार आईडी बनवाये जाने के निर्देश दियें। उन्होंने सभी खण्ड शिक्षाधिकारियों को निर्देशित किया कि विद्यालय के रजिस्टर को डिजिटल मेनटेन किया जाय, निरीक्षण के दौरान रजिस्टर डिजिटल मेनटेन न पाये जाने पर सम्बन्धित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेंगी। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अजीत कुमार श्रीवास्तव, जिला विकास अधिकारी सुखराज बन्धु, डायट प्राचार्य निधि शुक्ला एवं बेसिक शिक्षाधिकारी कमलेन्द्र कुमार कुशवाहा एवं सहित अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहें।

न्यूज झरोखा

विशेष संचारी रोग नियन्त्रण अभियान रैली को डीएम ने दिखाई हरी झण्डी

कौशाम्बी जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने विशेष संचारी रोग नियन्त्रण अभियान जन जागरूकता रैली को कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह रैली कलेक्ट्रेट परिसर से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र,मंझनपुर तक निकाली गयी। रैली में बेसिक शिक्षा विभाग की छात्र-छात्राओं, एवं आशा कार्यकत्री आदि सम्मिलित हुए। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अजीत कुमार श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार गौंड,मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 संजय कुमार, डॉ0 नीरज कुमार एम0ओ0आई0सी0मंझनपुर एवं जिला मलेरिया अधिकारी डॉ0 अनुपमा मिश्रा सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।जनपद में विशेष संचारी रोग नियन्त्रण अभियान 01 अप्रैल से 30अप्रैल 2025 तक संचालित किया जायेंगा, जिसके अन्तर्गत जनपदवासियों को मच्छरों एवं संक्रामक रोगों से बचाव के उपायों के विषय में जागरूक किया जायेंगा।

ओसा मंडी में संचालित गेहूँ क्रय केन्द्रों का एडीएम ने किया निरीक्षण

कौशाम्बी अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) द्वारा ओसा मंडी में संचालित गेहूँ क्रय केन्दों का निरीक्षण किया गया। खाद्य विभाग के क्रय केन्द्रों को छोड़कर किसी भी क्रय केन्द्र पर अभी गेहूँ की खरीद प्रारम्भ नही होने के कारण उनके द्वारा नाराजगी व्यक्त की गयी। सभी क्रय केन्द्र प्रभारियों को फटकार लगाते हुए सचेत किया गया कि खेतों में गेहूँ की कटाई प्रारम्भ हो गयी है अतः सभी केन्द्र प्रभारी कृषकों से सम्पर्क कर अधिक से अधिक मात्रा में गेहूँ की खरीद करना सुनिश्चित करें। मंडी समिति के क्रय केन्द्र प्रभारी दिलीप वर्मा को कड़े निर्देश दिये गये कि मंडी में आवक तथा बाजार भाव की सूचना प्रतिदिन उपलब्ध करायें। मंडी परिसर में क्रय केन्द्रों के आस-पास बिचौलियों की सक्रियता पाये जाने पर कठोर कार्यवाही की जायेगी। किसी भी दशा में डिस्ट्रेस सेल बर्दास्त नहीं किया जायेगा। उल्लेखनीय है कि ओसा मंडी में खाद्य विभाग के 02 तथा पी0सी0एफ0, पी0सी0यू0, नैफेड, मंडी परिषद एवं भा0खा0नि0 का 01-01 इस प्रकार कुल 07 क्रय केन्द्र स्थापित हैं। अभी तक खाद्य विभाग के प्रथम क्रय केन्द्र पर 82 कु0 तथा द्वितीय क्रय केन्द्र पर 55 कु0 गेहूँ की खरीद की गयी है। अपर जिलाधिकारी द्वारा सभी उपजिलाधिकारियों को पंजीकरण सत्यापन में भी तेजी लाने के निर्देश दिये गये हैं ताकि गेहूँ की खरीद प्रभावित न हो। निरीक्षण के समय जिला खाद्य विपणन अधिकारी, उपस्थित रहें।

सरकारी एवं निजी चालकों एवं परिचालकों का निःशुल्क नेत्र परीक्षण, ब्लड प्रेशर, शुगर की हुई जांच

कौशाम्बी सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी ने बताया है कि जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में जिलाधिकारी द्वारा दिये गये निदेर्शों के अनुपालन में 01अप्रैल को सैनी बस स्टैण्ड पर सड़क सुरक्षा एवं यातायात जागरूकता कार्यक्रम-2025 के तहत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के नेत्र परीक्षक के नेतृत्व में जनपद के समस्त सरकारी एवं निजी चालकों एवं परिचालकों का निःशुल्क नेत्र परीक्षण, ब्लड प्रेशर, शुगर की जांच की गयी। चालकों/परिचालकों को डॉक्टरों की टीम द्वारा निःशुल्क आई ड्राप एवं दवाओं का वितरण किया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कड़ा के नेत्र परीक्षण अधिकारी अखिलेश कुमार, एल0टी0 लैब टेक्नीशियन गुलबीर सिंह, सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी खुशबू गुप्ता के कुशल निर्देशन में 62 चालकों/परिचालकों का नेत्र व स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। एआरटीओ तारकेश्वर मल्ल एवं पीटीओ डॉ0 सन्तोष कुमार तिवारी द्वारा चालकों एवं परिचालकों को यातायात एवं सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी के साथ ही स्वास्थ्य विषय पर भी जानकारी दी गयी। एक अप्रैल 2025 से 30 अप्रैल 2025 के मध्य मुख्यमंत्री के निदेर्शों के क्रम में अवैध बस टैम्पो टैक्सी ई-रिक्शा के विरूद्ध प्रवर्तन कार्यवाही की जायेगी। सभी चालकों परिचालकों को अपने वाहन के समस्त वैध प्रपत्रों के साथ वाहन को संचालित करने के निर्देश दिये गये। कम उम्र के चालकों को वाहनों को संचालित न करने के निर्देश दिये गये। चालकों परिचालकों को परिवहन विभाग द्वारा पम्पलेट का वितरण किया गया। ताकि वह सड़क सुरक्षा के नियमों का अक्षरशः पालन कर सकें एवं हर सफर-सुरक्षित सफर को चरितार्थ करे

मंझनपुर नगर पालिका क्षेत्र के लोगों को जल निकासी की समस्या से जल्द मिलेगी राहत

कौशाम्बी। मंझनपुर नगर पालिका अध्यक्ष बीरेन्द्र कुमार सरोज (फौजी) द्वारा नगर क्षेत्र के लोगों की जन समस्याओं को देखते हुए प्रमुख रूप से जल निकासी के संबंध में मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ से मिलकर अवगत कराया गया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उनकी बातों को गंभीरता पूर्वक लिया जिसके फलस्वरूप मुख्यमंत्री के निर्देश के क्रम में शासन द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 में नगर पालिका परिषद मंझनपुर से सम्बन्धित परियोजना की मूल्यांकित लागत रूपया 3223.28 लाख की प्रशासनिक/वित्तीय स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त धनराशि 1128.15 लाख रुपए आवंटित किये जाने की स्वीकृति प्रदान की गयी है। उक्त आदेश के अनुपालन में राज्य मिशन निदेशक (एस0बी0एम0) राज्य मिशन निदेशालय उ0प्र0 द्वारा पत्र जारी करते हुए निकाय सीमा में स्वच्छ भारत मिशन-नगरीय 2.0 के अन्तर्गत नगर पालिका परिषद मंझनपुर के निर्माण कार्य हेतु प्रबंध निदेशक, उ0प्र0 जल निगम-नगरीय, उ0प्र0 व अधिशासी अभियन्ता, निर्माण खण्ड फतेहपुर को आदेश प्रदान किया गया है। उक्त निर्माण का कार्य पूर्ण हो जाने के उपरान्त नगर पालिका परिषद मंझनपुर सीमा के अर्न्तगत सभी नगर वासियों को जल निकासी की समस्या से निजात मिलेगी। जैसे ही निर्माण कार्य कराए जाने की जानकारी नगर वासियों को हुई तो नगर क्षेत्र के लोग मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ व नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अध्यक्ष बीरेन्द्र कुमार सरोज (फौजी) की भूरी-भूरी प्रसंशा कर रहे हैं।

स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय के ओपीडी संचालन के समय में हुआ परिवर्तन

कौशाम्बी प्रधानाचार्य स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय ने बताया है कि बढती हुई गर्मी एवं चिकित्सा महाविद्यालय में आने वाले मरीजों की सुविधा के दृष्टिगत स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय के ओ0पी0डी0 संचालन के समय में परिवर्तन करते हुए सयुंक्त जिला चिकित्सालय सम्बन्द्ध स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय में कार्यरत समस्त अधिकारियां एवं कर्मचारियों (नियमित/संविदा) को सूचित किया जाता है कि दिनांक 01.04.2025 से 30.09.2025 चिकित्सालय में ओ0पी0डी0 का संचालन प्रताः 8:00 बजे से 2:00 बजे तक किया जायेंगा अतः आप समस्त को निर्देशित किया जाता है कि उपरोक्त समय अनुसार ओ0पी0डी0 का संचालन सुनिश्चित करें। साथ ही चिकित्सा महाविद्यालय में तैनात समस्त चिकित्साधिकारियों पैरामेडिकल स्टाप/नर्सिंग स्टाप (नियमित/संविदा) को सचेत करते हुए निर्देशित किया जाता है कि वे चिकित्सालय में निर्धारित ड्रेस कोड का पालन करेंगे एवं अपने-अपने एपरन पर नेम प्लेट अवश्य लगायेंगे। उक्त आदेश का कडाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। एवं इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाय।

सम्पादकीय

सोनिया के उठाये मुद्दों पर ध्यान दे सरकार !

क्रांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष और राज्यसभा की सदस्य सोनिया गांधी ने एक लेख में केन्द्र सरकार की उसकी शिक्षा नीति को लेकर जमकर घेराबन्दी की है। उनका आरोप है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार बिना पर्याप्त विचार-विमर्श के और अपने राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने के मकसद से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 जनता पर थोप रही है। अंग्रेजी अखबार द हिंदू में प्रकाशित होने के बाद जमकर चर्चा में आये इस लेख में सोनिया गांधी ने इस बात की आलोचना की है कि भाजपा सरकार ने 'सी 3' (केंद्रीकरण- सेंट्रलाइजेशन, व्यावसायीकरण-कमर्शिलाइजेशन और सांप्रदायिकता- कम्युनलिज्म.) के अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने का साधन नई शिक्षा नीति (एनईपी) को बनाया है। इस लेख में वैसे तो कांग्रेस नेत्री ने अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे उठाये हैं परन्तु इसका मुख्य फोकस शिक्षा प्रणाली के वे आयाम हैं जो देश के लिये विनाशकारी साबित होंगे। उन्होंने एनईपी में अनेक खामियां गिनाते हुए कहा कि यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को पूरा करने के लिये बनाई गई है। शिक्षा किसी भी समाज के विकास की बुनियाद होती है। सोनियाजी के इस लेख में एनईपी से उत्पन्न होने वाले खतरे तथा उनकी चिंताएं साफ झलकती हैं जो इस बात का भी आभास कराती हैं कि इस शिक्षा प्रणाली की राह पर चलकर बनने वाला समाज व देश कैसा होगा। इस लेख में सरकार की शिक्षा के प्रति बरती जाने वाली उदासीनता तथा नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों से चल रही सरकार की सायास फैलाई जा रही बदइंतजामी के चलते बड़ी तादाद में बन्द होते स्कूल, सरकार के विचारों का समर्थन न करने वाले शिक्षाविदों तथा शिक्षकों के साथ होता भेदभावपूर्ण व्यवहार आदि की ओर तो ध्यान दिलाया ही गया है, सोनिया गांधी ने विस्तार से स्पष्ट किया है कि ' 3 सी' का एजेंडा मोदी सरकार किस प्रकार से लागू कर रही है और उसके दुष्परिणाम क्या हो रहे हैं। यही एक तरह से उनकी शिक्षा व्यवस्था की समीक्षा का निष्कर्ष है जो हर उस नागरिक को परेशान करने के लिये काफी होना चाहिये जो मुल्क की बेहतरी की सोचता हो। नई शिक्षा प्रणाली के नाम पर बच्चों को जिस प्रकार से ढाला जायेगा और उनके जो हालात होंगे, उसकी ओर साफ इशारा सोनिया गांधी के लेख में है। मुख्यतः जिस '3 सी' का उन्होंने अपने लेख में जिक्र किया है, उसके पहले 'सी' यानी केन्द्रीकरण के बारे में बात की जाये तो यह तो साफ है कि यह सरकार समाज के हर संसाधन व अवसरों पर एकाधिकार कर रही है। इनमें शिक्षा व्यवस्था भी है। लेख में कहा गया है कि वैसे तो शिक्षा समवर्ती सूची में शामिल है, यानी वह केन्द्र व राज्य दोनों का ही विषय है, लेकिन इस महत्वपूर्ण मसले पर केन्द्र सरकार न तो राज्यों से चर्चा करती है और न ही वह विशेषज्ञों से सलाह-मशविरा लेती है। वह इस मामले में अपनी मर्जी तो थोपती है बल्कि उसका रवैया 'धमकी भरा' भी होता है। उन्होंने इस मामले में तमिलनाडु के साथ केन्द्र द्वारा राज्यों पर हिन्दी को थोपने की कोशिशों की ओर भी ध्यान दिलाया है। दूसरे 'सी' यानी व्यवसायीकरण की बात करें तो यह पहले ही साफ दिख रहा है कि मोदी सरकार शिक्षा को इतनी महंगी कर देने पर आमादा है।

संघ-भाजपा में तालमेल से जुड़े सुखद संकेत

-ललित गर्ग-

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के 25 साल बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय के अंगने में पहुंचकर संघ के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार और दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) के स्मारक स्मृति मंदिर में श्रद्धांजलि दी, जिससे संघ एवं भाजपा के बीच एक नई तरह की ऊर्जामयी सोच एवं समझ विकसित हुई है। एक नई प्राणवान ऊर्जा का सूरज उगा है, नये संकल्पों को पंख लगे हैं। संघ के सौ वर्ष पूरे करने के ऐतिहासिक अवसर पर मोदी ने सही कहा कि संघ भारत की अमर संस्कृति का आधुनिक अक्षय वट है, जो निरंतर भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को ऊर्जा प्रदान कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने 34 मिनट की संबोधन में देश के इतिहास, भक्ति आंदोलन, इसमें संतों की भूमिका, संघ की निःस्वार्थ कार्य प्रणाली, देश के विकास, युवाओं में धर्म-संस्कृति, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, शिक्षा, भाषा और प्रयागराज महाकुंभ की चर्चा करते हुए जहां नये बन रहे भारत की बानगी प्रस्तुत की, वही संघ की उपयोगिता एवं महत्व को चार-चांद लगाये। प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी की संघ के मुख्यालय की इस पहली यात्रा के गहरे निहितार्थ भी हैं तो दूरगामी परिदृश्य भी है। जो इस बात का संकेत है कि पिछले आम चुनाव के दौरान संघ व भाजपा के रिश्तों में जिस खटास को अनुभव किया गया था, वह संवाद, समझ, सकारात्मक सोच व संपर्क से दूर कर ली गई है। जो इस बात का भी संकेत है कि आने वाले वक्त में भाजपा व सरकार के अहम फैसलों में संघ की भूमिका बढ़ेगी, जिससे देश हिन्दू राष्ट्र के रूप में सशक्त होते हुए विश्व गुरु बनने के अपने संकल्प को पूरा कर सकेगा। वसुधैव कुटुम्बकम के भारत के उद्घोष को अधिक सार्थक करते हुए दुनिया के लिये एक रोशनी बनेगा।

यह सर्वविदित है कि मोदी भी संघ की पृष्ठभूमि से आते हैं। साथ ही वे संघ की रीति-नीतियों से भली-भांति परिचित हैं। लेकिन पिछले आम चुनाव के दौरान भाजपा के कुछ वरिष्ठ नेताओं के कुछ अतिश्योक्तिपूर्ण एवं अहंकारी बयानों से भाजपा का कद संघ से बड़ा बताने की कोशिशें हुई थी, जिसके चलते संघ व भाजपा के रिश्तों में कुछ कसक एवं खटास देखी गई। जिसका असर लोकसभा चुनाव में चार सौ पार के लक्ष्य पर पड़ा, उसके मूल में संघ कार्यकताओं की उदासीनता रही है। बाद में दोनों के रिश्ते सामान्य होने के बाद हरियाणा, महाराष्ट,ज छत्तीसगढ़ एवं दिल्ली के विधानसभा चुनाव में भाजपा को जो आशातीत सफलता हाथ लगी, कहा जा रहा था कि उसमें संघ कार्यकताओं का समर्पण व सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण घटक रहा। अब संघ मुख्यालय में प्रधानमंत्री की यात्रा से यह तथ्य भी उजागर हुआ कि दोनों की रीतियों-नीतियों फिर से बेहतर तालमेल स्थापित हुआ है। इसका असर आने वाले दिनों में भाजपा अध्यक्ष के चुनाव में संघ की भूमिका को लेकर देखने को मिलेगा, ऐसा ही असर बदलते वक्त के साथ पार्टी के अन्य फैसलों पर भी नजर आ सकता है। आने वाले समय में भाजपा के लिये संघ का सहयोग पंजाब, केरल और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में अपनी जमीन मजबूत करने एवं जड़े जमाने में मील का पत्थर साबित होगा। इन राज्यों में संघ अपनी आधार भूमि को विस्तार दे रहा है। यानी दोनों अब सामंजस्य, सहयोग व सहजता के साथ आगे बढ़ेंगे। अर्थात भाजपा अब अपने वैचारिक एवं ऊर्जा स्रोत के साथ बेहतर तालमेल करके चलना चाहेगी। मोदी की नागपुर यात्रा के अनेक शुभ संकेत देखे जा रहे हैं, इसको औरंगजेब, राणा सांगा, संभल विवाद के बीच हिन्दुत्व की राजनीति को नई धार देने की कोई योजना के साथ जोड़कर भी देखा जा रहा है, नरेन्द्र मोदी और संघ प्रमुख मोहन भागवत की इस मुलाकात को 2029 के चुनावों की कोई नई पटकथा तैयार करने की पृष्ठभूमि में भी देखा जा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी के संघ मुख्यालय के दौरे पर जहां विपक्ष बौखला रहा है वहीं इस यात्रा ने संघ के भीतर भी कई लोगों को

सुखद आश्चर्य में डाल दिया है। मोदी दीक्षाभूमि भी गए, जहां डॉ. बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर ने 1956 में अपने हजारों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपनाया था। उन्होंने दीक्षाभूमि की सामाजिक न्याय और दलितों को सशक्त बनाने के प्रतीक के रूप में सराहना करते हुए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के सपनों के भारत को साकार करने के लिए और भी अधिक मेहनत करने की सरकार की प्रतिबद्धता दोहरा कर सबका दिल जीत लिया। मोदी की ओर से नागपुर में अपने संबोधन के दौरान संघ की भरपूर प्रशंसा को अपने वैचारिक मार्गदर्शक के प्रति भाजपा के रुख में आये बदलाव के रूप में देखा जा रहा है। मोदी ने संघ की ह्यराष्ट्र निर्माण और विकास में रचनात्मक भूमिकाह्व को रेखांकित करके अपनी ह्य2047 तक विकसित भारतह्व की योजनाओं में संघ की भूमिका के महत्व को भी दशार्या है। प्रधानमंत्री मोदी ने प्रयागराज में हाल ही में संपन्न महाकुंभ मेले में ह्लमहत्वपूर्ण भूमिकाह्व निभाने के लिए भी स्वयंसेवकों को श्रेय दिया था। इसके अलावा, हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा सरकारी कर्मचारियों पर आरएसएस द्वारा की जाने वाली सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने पर लगाए गए प्रतिबंध को भी हटा दिया गया था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने जीवन-संकल्पों एवं विचार-ऊर्जा के जिस आंगन में आठ वर्ष की आयु में कदम रख कर जीने की कला सीखी। उस संघ से संस्कार ग्रहण कर ही उनके दिल में राष्ट्रभक्ति की ज्योति प्रज्वलित हुई। उसी संघ के आंगन में नरेन्द्र मोदी के जाने पर अलग-अलग कयास लगाने एवं स्तरहीन राजनीति करने की जरूरत नहीं है। इस पर ज्यादा आश्चर्य भी जताने का कोई औचित्य इसलिये नहीं है कि कोई अपने घर, अपने संस्कार-भूमि एवं अपनी पवित्र पाठशाला में गया है। संघ उनकी राजनीति की आत्मा तो है ही, जीवन-संस्कारदाता भी है। उनका संघ से रिश्ता दशकों पुराना है। नरेन्द्र मोदी के साथ संघ भी हमेशा चट्टान की तरह खड़ा रहा है। खुद को संघ के प्रचारक मानने वाले मोदी समय-समय पर संघ की तारीफ करने में नहीं चूकते। हाल ही में तीन बड़े मौके आये जब मोदी ने अपने जीवन को सही मार्गदर्शन देने के लिए संघ का आभार जताया और इस सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन की भरपूर प्रशंसा की। प्रधानमंत्री ने नागपुर में भी संघ को एक ऐसे संगठन के रूप में संदर्भित किया जिसने ह्यसमर्पण और सेवा के उच्चतम सिद्धांतों को कायम रखा।ह्व

निश्चित ही संघ दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी गैर-राजनीतिक संगठन है। हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की रक्षा उसका मूल उद्देश्य है। संघ की स्थापना राष्ट्रवादी आंदोलन को एक मजबूत सांस्कृतिक आधार देने के लिए की गई थी। हमारी सदियों पुरानी प्राचीन सभ्यताएं जो धर्म, अहिंसा और भक्ति के सिद्धांतों पर आधारित थी उपनिवेशवाद के शोर में अपनी आवाज खो रही थी, हिन्दू समाज पर रह-रह की हमले हो रहे थे, हिन्दू एवं सनातन संस्कृति को सलक्ष्य कुचलने के प्रयास से हिन्दू समाज भयभीत था एवं लगातार कमजोर हो रहा था, इन जटिल स्थितियों में भारत के लोगों को एक सांस्कृतिक छत्र के नीचे एकजुट करने का प्रयास संघ ने प्रभावी ढंग किया और यह उन अभिजात्य लोगों को बहुत पसंद नहीं आया, जिन्होंने अपनी सांस्कृतिक पहचान को त्याग कर अपनी विदेशी शिक्षा और पश्चिमी मूल्यों के सम्पर्क में पश्चिम की नकल करने के पक्ष?में थे। इन्हीं भारत विरोधी लोगों ने संघ पर तरह-तरह के प्रतिबंध भी लगाये, लेकिन उनके आरोप पूरी तरह निराधार पाये गये।

संघ अपनी सकारात्मक सोच, सेवा एवं समर्पण के बल पर निरन्तर आगे बढ़ता रहा। संघ का एक ही भाव था कि बतौर राष्ट्र भारत पुनः सशक्त स्थिति में आए जहां वह दुनिया का मार्ग दर्शन कर सके लेकिन इसके लिए पहले भारतीय समाज का रूपांतरण होना जरूरी था। समाज के रूपांतरण के लिए?संघ ने दैनिक शाखाओं के जरिए व्यक्ति निर्माण का काम शुरू किया था। संघ के स्वयं सेवक एवं 40 से अधिक परियोजनाएं जीवन के हर क्षेत्र में सेवा करके मां भारती की सेवा कर रहे हैं। कौन नहीं जानता कि 1947 में संघ के स्वयंसेवकों ने कश्मीर सीमा पर बगैर किसी प्रशिक्षण के पाकिस्तान सेना की गतिविधियों पर नजर रखी थी और पाकिस्तान से जान बचाकर आए शरणार्थियों के लिए?शिविर लगाए, भोजन की व्यवस्था की थी। 1962 में भारत-चीन हमले के दौरान सैनिक आवाजाही मार्गों की यातायात व्यवस्था, रसद और आपूर्ति में मदद स्वयंसेवकों ने की थी। सेवा के साथ-साथ राष्ट्रीयता के मजबूत इरादों की तमाम चुनौतियों के बावजूद संघ लगातार विस्तार पाते हुए वृक्ष से वटवृक्ष बनने की ओर अग्रसर है।

पत्रकारिता में पहुंच बनाती 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता'

- डॉ. संतोष पाटीदार

'एआई' अपनाने में बाधाएं : प्रशिक्षण और नीतिगत समस्याओं के कारण 'एआई' की इस नई प्रौद्योगिकी या टेक्नालॉजी तक पहुंच आसान नहीं होती, फिर भी, 'एआई' को लेकर सभी में उत्साह है। सर्वेक्षण में करीब 13फीसदी पत्रकारों ने बताया कि उनके न्यूजरूम में 'एआई' नीति है, हालांकि इसे अपनाने में अन्य बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है। कई पत्रकारों ने 'एआई' उपकरणों तक सीमित पहुंच, उच्च लागत और प्रशिक्षण की कमी के साथ-साथ मार्गदर्शन की कमी जैसी बाधाओं की बात कही।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता' (एआई) दुनिया भर की दशा और दिशा बदल रही है। इसे लेकर एक अलग दुनिया के दावे किए जा रहे हैं। 'एआई' के चौंकाने वाले आविष्कारों की जानकारी और उनके उपयोग के साथ इसके खतरों के कहानी-किस्से भी मीडिया के माध्यम से दुनिया को सुनने मिल रहे हैं। ऐसे में पत्रकारिता इससे कैसे दूर रह सकती है? 'एआई' का चमत्कार और पराक्रम देखकर लगता है कि यह प्रौद्योगिकी हौले-हौले पत्रकारिता को भी बदल देगी। क्या वास्तव में पत्रकारिता के साथ ऐसा होगा? इसे लेकर जितने प्रयोग, चिंतन, बहस और चर्चा दुनिया के उत्तरी गोलार्ध के विकसित कहे जाने वाले देशों में है, उतने दक्षिण की आधी दुनिया के विकासशील देशों में शायद नहीं है।

'ग्लोबल साउथ' के पत्रकारों में 'एआई' को लेकर असमंजस है। प्रौद्योगिकी के प्रयोग से जुड़े जोखिम और दायित्व, मीडिया प्रबंधन में नीतिगत उदासीनता, महंगे उपकरण, प्रशिक्षण का अभाव जैसे कारण 'एआई' पत्रकारिता की राह में बाधक है। तकनीकी विकास के इस दौर में यह देखना दिलचस्प होगा कि आने वाले वर्षों में 'एआई' की दिशा बदलती है या नहीं और क्या 'ग्लोबल साउथ' या विकासशील देशों के पत्रकार भविष्य में अपने काम के लिए 'एआई' को एक संसाधन के रूप में अपनाएंगे या उससे जुड़े संभावित दायित्व और जोखिम के रूप में देखेंगे।

इस तकनीक को लेकर दुनिया भर में उत्सुकता तो बहुत है, लेकिन इसके प्रभाव के बारे में अधिकांश बहस या बातचीत विकसित देशों तक ही केंद्रित रही है। इस आधी दुनिया के दृष्टिकोण के आधार पर दुनिया भर में मान्यताएं बन रही हैं। इसके प्रयोग में वहां की पत्रकारिता भी प्रमुख रूप से आगे है। दुनिया में 'ग्लोबल साउथ' के देश कमजोर या बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के साथ विकसित हो रहे हैं। ऐसे देशों में 'एआई' को लेकर मीडिया के दृष्टिकोण पर एक अध्ययन किया गया है। 'ग्लोबल साउथ' में अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, एशिया आदि महाद्वीपों के देश शामिल हैं।

'थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन' (टीआरएफ) की एक रिपोर्ट, जो दुनिया के 70 से अधिक देशों के 200 से अधिक पत्रकारों के सर्वेक्षण के निष्कर्षों पर आधारित है, सामने आई है। इस रिपोर्ट के आधार पर अध्ययनकर्ता डमियन रेडक्लिप विस्तार से बताते हैं कि इस अध्ययन का उद्देश्य 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' की जानकारी और आशंका पर प्रकाश डालना है। रिपोर्ट में बताया गया है कि 'एआई' का उपयोग किस तरह किया जा रहा है, न्यूजरूम के सामने क्या-क्या अनोखी चुनौतियां हैं और पत्रकारों, न्यूजरूम के लीडरों, वित्तपोषकों और नीति-निमार्ताओं के लिए इसके क्या निहितार्थ हैं?

इस रिपोर्ट के कुछ निष्कर्ष हैंः 'एआई' को अपनाना व्यापक, लेकिन असमान है। सर्वेक्षण में 'एआई' प्रौद्योगिकी के लिए 'सतर्क 'आशावाद' पाया गया, एक ऐसी भावना जो शायद इस तथ्य को झुठलाती है कि वैश्विक-दक्षिण में 'एआई' को अपनाना महत्वपूर्ण है। 10 में से आठ से अधिक (81.7फीसदी) पत्रकार अपने काम में 'एआई' उपकरणों का उपयोग करते हैं। 81फीसदी उत्तरदाताओं ने कहा कि वे पहले से ही अपने काम में 'एआई' टूल का उपयोग करते हैं। इनमें से लगभग आधे (49.4फीसदी) लोग प्रतिदिन 'एआई' का उपयोग करते हैं, जो दशार्ता है कि कितनी जल्दी यह उनकी कार्य-संस्कृति का हिस्सा बन गया है।

पत्रकार मुख्य रूप से कंटेंट का प्रारूप तैयार करने और संपादन, ट्रांसक्रिप्शन, तथ्यों की जांच और शोध के लिए 'जनरेटिव एआई' का उपयोग कर रहे हैं। 'चैटजीपीटी,' 'ग्रामरली,' 'ओटर' और 'कैनवा' जैसे उपकरण कई पत्रकारों के लिए आवश्यक हो गए हैं, क्योंकि वे समय बचाने और दक्षता बढ़ाने की क्षमता रखते हैं, साथ ही उनके विचारों का दायरा और रचनात्मकता को बढ़ाते हैं। जैसा कि घाना के एक पत्रकार ने बताया, 'एआई ने मेरी पत्रकारिता को काफी हद तक बेहतर बनाया है। इसने मेरे शोध को सुव्यवस्थित किया है और मुझे जटिल डेटा का त्वरित और सटीक विश्लेषण करने में सक्षम बनाया है, विशेष रूप से 'एचआईवी' शोध और पर्यावरण रिपोर्टिंग जैसे क्षेत्रों में।'

'एआई' अपनाने में बाधाएं : प्रशिक्षण और नीतिगत समस्याओं के कारण 'एआई' की इस नई प्रौद्योगिकी या टेक्नालॉजी तक पहुंच आसान नहीं होती, फिर भी, 'एआई' को लेकर सभी में उत्साह है। सर्वेक्षण में करीब 13फीसदी पत्रकारों ने बताया कि उनके न्यूजरूम में 'एआई' नीति है, हालांकि इसे अपनाने में अन्य बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है। कई पत्रकारों ने 'एआई' उपकरणों तक सीमित पहुंच, उच्च लागत और प्रशिक्षण की कमी के साथ-साथ मार्गदर्शन की कमी जैसी बाधाओं की बात कही। कुछ लोगों के लिए, विशेष रूप से कम संसाधन वाले न्यूजरूम में, 'एआई' को अपनाना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। अक्सर ऐसा वित्तीय और तकनीकी बाधाओं के कारण होता है।

सर्वेक्षण में सबसे चौंकाने वाला तथ्य यह था कि लगभग 58फीसदी 'एआई' उपयोगकर्ता स्वयं-शिक्षित हैं, यानी खुद के प्रयास से इस विधा को सीख रहे हैं, उनके नियोक्ताओं से उन्हें कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिला है। यह निवेशकों के लिए एक अवसर प्रदान करता है। कई पत्रकारों ने 'एआई'-केंद्रित कार्यशालाओं, नैतिक दिशा-निदेर्शों और न्यूजरूम नीतियों की जरूरत की इच्छा जताई, जो उन्हें 'एआई' की क्षमता को जिम्मेदारी से प्रयोग करने में मदद कर सकती हैं। जैसा कि 'संयुक्त-अरब-अमीरात' के एक न्यूजरूम मैनेजर ने बताया कि दर्शकों के विश्वास को बनाए रखने के लिए नीतियां आवश्यक हैं, विशेष रूप से 'एआई'-जनरेटेड सामग्री के मामले में। न्यूजरूम में 'एआई' के उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक ढांचे, नियामक दिशा-निर्देश और पारदर्शिता जरुरी है। एशिया के पत्रकार मानते हैं कि 'एआई' पत्रकारिता के लिए बेहतर प्रौद्योगिकी है, लेकिन इसका उपयोग बहुत जिम्मेदारी से करना होगा।

भविष्य की ओर देखते हुए, विकासशील देशों के पत्रकार 'एआई' को एक ऐसे उपकरण के रूप में देखते हैं जो उनके काम को बेहतर बना सकता है - बशर्ते इसका उपयोग जिम्मेदारी से किया जाए। इस विरोधाभास को स्पष्ट करते हुए, भारत के एक पत्रकार ने कहा कि 'एआई' की गति, डेटा-विश्लेषण और दक्षता पत्रकारिता की पहुंच को बढ़ा सकते हैं, लेकिन यह गलत सूचना और पत्रकारिता की अखंडता के लिए जोखिम भरी चुनौतियां भी पेश करता है। विकासशील देशों में पत्रकारिता को लाभ पहुंचाने के लिए पत्रकारों, वित्तपोषकों, मीडिया विकास संगठनों और नीति निमार्ताओं को संयुक्त रूप से 'एआई' प्रौद्योगिकी को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ना होगा।

पत्रकारिता की विविध आवश्यकताओं के लिहाज से उपयुक्त 'एआई' उपकरण बनाने के लिए मीडिया संगठनों, डेवलपर्स और निवेशकों के बीच साझेदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पत्रकारिता में इस प्रौद्योगिकी की पहुंच समान रूप से होना चाहिए। यह सुनिश्चित करना कि 'एआई' के लाभ बड़े, संसाधनों वाले न्यूजरूम तक सीमित न हों। जैसे-जैसे 'एआई' को अपनाने की प्रक्रिया तेज होती जा रही है, पत्रकारों, न्यूजरूम और नीति निमार्ताओं को यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना होगा कि प्रौद्योगिकी पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों को कमजोर करने की बजाय मजबूत बनाए।

तकनीक के तनाव : मोबाइल पर जुआ ?

- भारत डोंगरा

नई तकनीक के आगमन से अनेक लाभ मिल सकते हैं, यदि समुचित सावधानियां न बरती जाएं तो कई तरह की गंभीर क्षति भी हो सकती है। मोबाइल फोन से बहुत सी सुविधाएं प्राप्त होती हैं, अनेक लाभ हैं, पर इसे कई तरह के जुए के खेल का माध्यम भी बनाया जा रहा है। ताश ही नहीं, लूडो और क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेलों को भी ऐसा रूप दिया जा रहा है जो जुए के विभिन्न रूप ही हैं।

डिजिटल इंडिया फाउंडेशन' की एक हाल की रिपार्ट के अनुसार भारत में 'आनलाईन गैंबलिंग' या जुआ बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। ऐसे डिजिटल प्लेटफार्म पर तीन महीनों में 160 करोड़ विजिट दर्ज किए गए हैं। सरकार द्वारा इसे रोकने या नियंत्रित करने के तमाम प्रयासों के बावजूद अनेक अवैध कारोबारी अपनी गतिविधियां इस दिशा में बढ़ा रहे हैं। इसका समाज, विशेषकर युवाओं और बच्चों पर बहुत प्रतिकूल असर पड़ा है।

'द लांसेट' पत्रिका में प्रकाशित रिचर्ड आरमिटेंड के अध्ययन के अनुसार, आनलाईन जुए का बच्चों के मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक स्वास्थ्य और स्कूली उपलब्धि पर बहुत प्रतिकूल असर पड़ता है। नतीजे में उनकी अनेक लतों में फंसने की संभावना बढ़ती है। नई तकनीक के आगमन से अनेक लाभ मिल सकते हैं, यदि समुचित सावधानियां न बरती जाएं तो कई तरह की गंभीर क्षति भी हो सकती है। मोबाइल फोन से बहुत सी सुविधाएं प्राप्त होती हैं, अनेक लाभ हैं, पर इसे कई तरह के जुए के खेल का माध्यम भी बनाया जा रहा है। ताश ही नहीं, लूडो और क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेलों को भी ऐसा रूप दिया जा रहा है जो जुए के विभिन्न रूप ही हैं।

इस नए तरह के जुए के जाल में अनेक किशोर व युवा फंसते चले जा रहे हैं। यहां तक कि दूर-दूर के गांवों में भी ऐसा हो रहा है। इस तरह के जुए में एक बार पैसे हारने के बाद इन किशोरों या युवकों में यह गहरी इच्छा रहती है कि कम-से-कम जो गंवाया है उतना तो वापस कर लिया जाए। इस उम्मीद में वे और पैसे लगाते हैं, पर प्रायः उनका घाटा बढ़ता ही जाता है। इस कारण वे बहुत तनावग्रस्त हो जाते हैं और कभी-कभी तो अपने घर-परिवार से ही कुछ पैसा इधर-उधर कर जुए में डुबोते हैं। कई बार तो बच्चे भी इस जाल में फंस जाते हैं। हालांकि इसके लिए एक खास आयु वर्ग को ही अनुमति दी जाती है, पर कई बार इसका उल्लंघन किसी-न-किसी तिकड़म से किया जाता है। इस कारण अनेक बच्चों का ध्यान न केवल अपनी पढ़ाई-लिखाई से हट जाता है, अपितु वे अनेक तरह के तनावों का शिकार भी हो जाते हैं और जो उम्र अच्छे जीवन के लिए तैयारी की होती है, उसी में वे बबार्दी की ओर बढ़ने लगते हैं। यदि उन पर शक कर घर-परिवार के बड़े लोग उन्हें रोकते हैं या कुछ कहते हैं तो किशोर बहुत जल्दी तनावग्रस्त हो जाते हैं व उल्टी-सीधी कहने लगते हैं। इस कारण अनेक माता-पिता बहुत परेशान रहते हैं। एक महिला ने तो यहां तक कहा कि अपने बड़े हो रहे बच्चे की इस लत से वह इतनी परेशान हो गई हैं कि उसने दस हजार रुपए का मोबाइल ही गुस्से में तोड़ दिया, पर बच्चे ने फिर भी पूरी तरह इस आदत को छोड़ा नहीं।

हाल ही में जब यह लेखक बुंदेलखंड क्षेत्र की अनेक महिलाओं से नशे को कम करने के उपायों पर बातचीत कर रहा था, तो उन्होंने कहा कि नशा करने का अभियान आप अवश्य चलाएं, पर उसके साथ जुए को कम करने के प्रयासों को भी जोड़ लीजिए। इस बारे में कुछ और पूछताछ करने पर पता चला कि कई बार जुए के खेल में झगड़े, गाली-गलौच, धमकियों की स्थिति भी आ जाती है। किसी गांव में बैठा अबोध किशोर इसके बारे में किसी को चाहे न बताए, पर अंदर-ही-अंदर उसके तनाव बढ़ते जाते हैं और उसे अन्य भीषण स्थिति की ओर भी ले जाते हैं। इस तरह के अनुभवों से गुजर चुके कुछ लोगों ने बताया कि शायद कुछ वयस्क लोग इस तरह की लत में अपना संतुलन बनाए रखते हों, पर जो किशोर व कच्ची उम्र के युवा हैं, उनका संतुलन प्रायः बिगड़ जाता है। इसके अतिरिक्त ऐसे अनुभवों से गुजर चुके कुछ व्यक्तियों का कहना है कि केवल जुए वाले 'ऑन लाइन' खेलों के कारण ही तनाव की समस्या नहीं है। कुछ ऐसे खेल भी हैं जो जुए से न जुड़े होने के बावजूद तनाव व हिंसा का कारण बनते हैं। इन खेलों में बुरी तरह लीन होने या लत पड़ने के कारण अनेक बच्चों व किशोरों के मस्तिष्क का संतुलन बिगड़ जाता है। इस बारे में कुछ महिलाओं ने बताया कि उन्होंने अपने आसपास ही यह होते हुए देखा है।

इसके अतिरिक्त कुछ लोगों ने यह शिकायत भी की है कि मोबाइल पर अश्लील चित्र या वीडियो बहुत अधिक देखने के कारण भी अनेक समस्याएं बढ़ रही हैं। बच्चे व किशोर अनेक तनावों व ऐसी सोच से त्रस्त हो रहे हैं, जिसे ठीक से समझने के लिए वे कच्ची उम्र में मानसिक व शारीरिक तौर पर तैयार ही नहीं हैं। इस कारण महिला-विरोधी यौन हिंसा दूर-दराज के गांवों में भी बढ़ सकती है। इस तरह की विभिन्न समस्याएं हाथ से बाहर निकल जाएं, इससे पहले इन्हें न्यूनतम करने की सभी संभावनाओं पर भली-भांति विचार करते हुए उचित उपाय निकालने चाहिए।

अखंड भारत संदेश
प्रयागराज, बुधवार
2. 04. 2025

जिले में स्वच्छता व शिक्षा की दिशा में भव्य अभियान का शुभारंभ

अभियान के शुभारम्भ में डीएम व सीडीओ

अभियान को हरी झंडी दिखाते अधिकारीगण

अभियान में शपथ लेते अधिकारीगण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एक अप्रैल को चित्रकूट जनपद में विशेष संचारी रोग नियंत्रण और स्कूल चलो अभियान का भव्य आयोजन किया गया। यह अभियान जिले के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे नगर पालिका क्षेत्र, ब्लॉक स्तर और विद्यालयों में आयोजित हुआ। इस मौके पर पूर्व सांसद भैरो प्रसाद मिश्रा, पूर्व राज्य मंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय, नगर पालिका अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता, कापरेटिव बैंक अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, और अन्य व्यक्तियों ने अभियान का शुभारंभ किया। अभियान के तहत सफाई, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण गतिविधियों का आयोजन किया गया।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान की शुरूआत 1 अप्रैल से 30 अप्रैल तक चलेगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य जिले में संचारी रोगों की रोकथाम करना है। नगर पालिका कार्यालय परिसर से सफाई कर्मियों और स्वास्थ्य कर्मियों की रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस रैली में अधिकारियों और कर्मचारियों ने संचारी रोगों के रोकथाम के लिए शपथ ली। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ भूपेश द्विवेदी ने बताया कि कीटनाशक दवाओं का छिड़काव, नालियों की सफाई और झाड़ियों की कटाई जैसे कार्य किए जाएंगे। साथ ही, पशुपालकों को जागरूक करने की भी योजना बनाई गई है। इस अभियान में डब्ल्यूएचओ और यूनीसेफ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों का सहयोग भी मिलेगा, जो इसकी गुणवत्ता को और बेहतर बनाने में मदद करेंगे।

स्कूल चलो अभियान

स्कूल चलो अभियान का आयोजन भी 1 अप्रैल को किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों का नामांकन बढ़ाना और उन्हें शिक्षा के प्रति जागरूक करना था। मंदाकिनी भवन कालूपुर में आयोजित कार्यक्रम में डीएम शिवशरणप्पा जी एन और अन्य अधिकारियों ने बच्चों को निरूशुल्क पाठ्य पुस्तकें वितरित कीं। जिलाधिकारी ने अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजकर उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दें। इस मौके पर जिले के एक लाख 22 हजार छात्र-छात्राओं के लिए शिक्षा सुविधाएं मुहैया कराने का भी संकल्प लिया गया।

दस्तक अभियान

यह 10 से 30 अप्रैल तक चलेगा, जिसमें आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता घर-घर जाकर बच्चों के स्वास्थ्य और कुपोषण की जानकारी एकत्र करेंगे। इसके अलावा, घर के सभी सदस्य का आभा आईडी बनवाने का कार्य भी किया जाएगा। मलेरिया नियंत्रण टीम शहरी क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार और एंटी-लार्वा स्प्रे का छिड़काव करेगी।

ब्लॉक स्तर

ब्लॉक स्तर मऊ, पहाडी, राजापुर व मानिकपुर पर भी स्कूल चलो और संचारी रोग अभियान की शुरूआत की गई। इस दौरान बच्चों को स्वच्छता और मच्छरों से फैलने वाले रोगों के बारे में जागरूक किया गया। साथ ही, बच्चों को निःशुल्क पुस्तकें वितरित की गईं और विद्यालय स्तर पर रैलियां आयोजित की गईं।

न्यूज झरोखा

मानव श्रँखला बनाकर जिलाधिकारी ने हरी झंडी दिखाकर सँचारी रोग नियंत्रण का किया आगाज

बाँदा। संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान का उद्घाटन जिलाधिकारी जे0 रीभा ने कलेक्ट्रेट परिसर में छात्रों, आशाओं तथा आंगनवाडी कार्यकत्री एवं समस्त स्टाफ की रैली को फीता काटकर एवं हरी झण्डी दिखाकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया यह अभियान 01 अप्रैल 2025 से 30 अप्रैल 2025 तक चलाया जायेगा जिलाधिकारी ने बताया कि संचारी रोग यथा मलेरिया, फाइलेरिया, डेगू, टी0बी0, कुष्ठ, डायरिया आदि वायरस या बैक्टीरिया के कारण होने वाली बीमारियॉ है। यह रोग मच्छर, मक्खी, पशुओ एवं गंदगी के कारण फैलते है। जिन स्थानों पर जल जमाव, गंदगी, एवं कूडा जमा रहता है एवं साफ पानी पीने की लिये उपलबध नहीं होता है ऐसे स्थानों पर संचारी रोग फैलने की सम्भावना अधिक होती है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डा0 विजेन्द्र सिंह द्वारा बताया गया कि संचारी रोगों से बचाव हेतु 13 सहयोगी विभागों द्वारा अभियान के अन्तर्गत समस्त जनमानस को रोगों से बचाव हेतु जागरूक करना, कूडा निस्तारण, नालियों की सफाई, स्वच्छ जल की उपलब्धता, खुले में शौच न करना, शौच के बाद व खाना खाने से पहले साबुन से हाथ धोना, जल जमाव की परिस्थिति को समाप्त करना, घरेलू पात्रों में एक सप्ताह से अधिक पानी एकत्रित न होने देना, नियमित साफ सफाई करना, घर वा घर के आस पास तथा नालियों से गंदगी एवं झाडी को हटाना, इण्डिया मार्का हैण्ड पम्प का पांनी पीने के लियें प्रयोग करना, यदि साफ पानी उपलब्ध न हो तो, पानी को उबालकर प्रयोग करने के बारे में जागरूक करना, प्रचार-प्रसार एवं व्यवहार परिवर्तन की गतिविधियां करना, शहरी क्षेत्रों में फॉगिंग करवाना, क्लोरिनेशन डेमों, पेयजल उबालना के विषय में जागरूक करना, कृंतक (चूहा, छछूदर) नियंत्रण के प्रभावी एवं सुरक्षित उपाय बताना, पॉच साल से कम उम्र के बच्चो वाले घरों में आशा द्वारा ओ0आर0एस0 एवं जिंक का वितरण करना आदि निरोधात्मक कार्यवाही की जायेंगी। दस्तक अभियान जो कि दिनांक 10.अप्रैल से 30.अप्रैल तक चलेगा, जिसमें घर-घर भ्रमण के दौरान आशा एवं आंगनवाडी कार्यकत्रियों द्वारा घरों पर स्टीकर लगाये जायेगें, क्षय रोग (टी0बी0) के रोगियों का चिन्हिकरण कर लाइन लिस्ट बनायेगी, घरों पर जाकर मच्छरों के पैदा होने वाली परिस्थितियों का निरीक्षण करना, बुखार के केस चिन्हित कर उनकी लाइन लिस्ट तैयार करना, बुखार के रोगियो को निकटतम चिकित्सालय पर सन्दर्भित करना, आई0 एल0 आई0 (इन्फ्लुएंजा लाई इलनेस) रोगियों एवं कुपोषित बच्चों की सूची बनायेगी साथ ही प्रत्येक घर पर जा कर समस्त जन मानस की आभा आई0डी0 बनाकर उपलब्ध करायेगी। एवं ओ0आर0एस0 तथा जिंक का वितरण करेंगी। कार्यक्रम में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 विजेन्द्र सिंह, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डा0 आर0एन0 प्रसाद, डा0 अजय कुमार, जिला कार्यक्रम अधिकारी (आई0सी0डी0एस0) दिलीप कुमार पाण्डेय, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अव्यक्तराम तिवारी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डा0 एस0के0 बैस, जिला मलेरिया अधिकारी श्रीमती पूजा अहिरवार, सहायक, मलेरिया अधिकारी बिजय बहादुर, बायोलॅजिस्ट अतुल कुमार, जिला वेक्टर जनित रोग सलाहकार प्रदीप कुमार, सीनियर एल0टी0 वृज विहारी, मलेरिया निरीक्षक राज कुमार, आनन्द कुमार मिर्श्रा, परीक्षित द्विवेदी, भानू प्रताप सिंह फाइलेरिया निरीक्षक गोपाल यादव, दिलीप कुमार, सूरज खिरिया एवं फाइलेरिया निरीक्षक एव समस्त मलेरिया स्टाफ, जिला समन्वयक नागेन्द्र सिंह जिला पंचायत राज अधिकारी कार्या0, एवं अर्बन आशाओं, आंगनवाडी कार्यकत्रियों तथा राजकीय इण्टर काजेल बांदा के छात्रों द्वारा रैली में प्रतिभाग किया गया।

सरकारी कर्मचारियों ने प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

बांदा। पुरानी पेंशन व्यवस्था बहाल कराने के लिए समय-समय पर सरकारी कर्मचारी अपना विरोध दर्ज कराते हुए सरकार के लिए चुनौती बन रहें हैं। इसको सरकार द्वारा नयी पेंशन योजना प्रारूप में कुछ बदलाव कर युपीएस का आप्शन कर्मचारियों को दिया गया लेकिन कर्मचारी ओपीएस बहाली के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। इसी क्रम में मंगलवार को लगभग दो सैकड़ा, शिक्षक, राजस्व व अन्य सरकारी कर्मचारीयों ने एक बाइक रैली निकाली। कर्मचारियों द्वारा रैली में हाथों में बेनर होर्डिंग पर ओल्ड पेंशन बहाल करो का स्लोगन लिखे लिए हुए जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर जमकर नारेबाजी की गई और अपनी मांगों का एक ज्ञापन प्रधानमंत्री के नाम पर एडीएम को सौंप दिया। ज्ञापन के माध्यम से बताया गया कि वर्तमान में लागू पेंशन योजना सरकारी कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर उसके जीवन यापन के लिए नाकाफी है। क्योंकि कर्मचारी अपने सेवाकाल में जीवन के महात्वपूर्ण समय को खपा देते हैं और बुढ़ापे में अपना जीवन यापन व परिवार का भरण-पोषण इस योजना से नहीं कर सकता है। क्योंकि पेंशन में मिलने वाली धनराशि से अपना खर्च नहीं उठा सकता। यदि हमारी मांग पर सरकार कोई कदम नहीं उठाती तो आगामी 1 मई को देश की राजधानी के जंतर-मंतर पर विशाल प्रदर्शन करने के लिए हम सभी कर्मचारी मौजूद रहेंगे।

श्रीराम कथा पर पूजा पाठ करते ट्रस्टी डॉ बीके जैन

रघुवीर मंदिर में नौ दिवसीय श्रीराम कथा के साथ अन्न सेवा जारी

चित्रकूट। जिले के रघुवीर मंदिर में 30 मार्च से 7 अप्रैल तक आयोजित नौ दिवसीय श्रीराम कथा एवं अन्न सेवा का कार्यक्रम धूमधाम से चल रहा है। इस आयोजन का शुभारंभ परमहंस संत रणछोड़दास महाराज के आशीर्वाद से हुआ। हर साल की तरह इस बार भी देशभर से श्रद्धालु, खासकर गुरुदेव के शिष्य परिवार के लोग, कथा सुनने के लिए चित्रकूट पहुंचे हैं। नवदिवसीय श्रीराम कथा के में आचार्य सुरेंद्र तिवारी ने श्री रामचरितमानस का संगीतमय पाठ किया जा रहा है, जबकि उमाशंकर व्यास ने शिव-सती प्रसंग की कथा सुनाई। इसके साथ ही, मंदिर परिसर में विभिन्न धार्मिक आयोजन व संतों द्वारा भंडारे का आयोजन भी किया जा रहा है, जिसमें हजारों लोग प्रतिदिन अन्न सेवा का लाभ ले रहे हैं। ट्रस्टी डॉ बीके जैन ने बताया कि इस उत्सव के में मंदिर को विशेष रूप से सजाया गया है और भगवान युगल सरकार का श्रृंगार किया जाता है। रामनवमी के दिन भगवान का भव्य जन्मोत्सव मनाया जाएगा, जिसकी पूरी तैयारी की जा चुकी है। इस अद्भुत आयोजन में भारी संख्या में श्रद्धालु एवं भक्त उपस्थित हैं।

एसडीएम ने क्राप कटिंग प्रयोग कर किया परीक्षण, परखी उत्पादन क्षमता

बाँदा। पैलानी तहसील अंतर्गत नरौली गांव निवासी रामबाबू पुत्र महेश के गाटा संख्या 142 में जिला सांख्यिकी विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़े एवं दिशा-निर्देशों के अनुरूप एसडीएम पैलानी शशिभूषण मिश्र ने मौके पर लेखपालों से फसल उत्पादन परीक्षण हेतु क्राप कटिंग का प्रयोग किया गया।मानक क्षेत्रफल 10 मीटर के समबाहु त्रिभुज के आकार पर कटिंग कराकर गेंहू का उत्पादन ट्रिंगल मापक के अनुसार 14.800 किलोग्राम पाया गया। एसडीएम पैलानी शशिभूषण मिश्र ने बताया कि प्रति हेक्टेयर में 36 कुंतल 9 किलो 400 ग्राम गेहूं निकला। इस दौरान लेखपाल बल्देव कुमार, बीमा फील्ड एक्जीक्यूटिव शिवकुमार प्रजापति, लेखपाल मनोज कुमार, प्रभात कुमार आदि मौजूद रहे।

नानाजी के सपनों पर भ्रष्टाचार की कालिख ग्रामोदय विश्वविद्यालय प्रशासन मौन

- कामदगिरि से लगाई न्याय की गुहार,
- हड़ताल व अराजकताः ग्रामोदय का असली चेहरा ?
- नशे में मदहोश प्रशासन, कर्मचारी भूखे मरने को मजबूर

कामदगिरी में परिक्रमा लगाते ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कर्मचारी

चित्रकूट। चित्रकूट के महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय में अराजकता अपने चरम पर है। जिस विश्वविद्यालय की नींव ग्राम्य विकास व सामाजिक उत्थान के संकल्प के साथ रखी गई थी, वहां आज कर्मचारी अपने हक के लिए 40 दिनों से भूख हड़ताल पर बैठे हैं, लेकिन प्रशासन के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही। तीन महीने से वेतन न मिलने की वजह से कर्मचारी कर्ज में डूब चुके हैं, घर चलाना मुश्किल हो गया है, लेकिन प्रशासन पद के गुमान में डूबे हुए हैं।

आखिर कब तक कर्मचारी यूं ही भूखे मरेंगे? जब शासन व विश्वविद्यालय प्रशासन से बार-बार गुहार लगाई गई, तब भी किसी ने सुध नहीं ली। हारकर कर्मचारियों ने कामदगिरि के दरबार में न्याय की गुहार लगाई। हनुमान चालीसा के सामूहिक पाठ के जरिए भगवान से प्रार्थना की कि शासन और प्रशासन को सद्बुद्धि मिले। क्या यह वही संस्थान है, जो कभी ग्रामीण विकास व उच्च शिक्षा के मूल्यों की बात करता था? आज उसी संस्थान में भ्रष्टाचार व संवेदनहीनता की दीवारें खड़ी हो चुकी हैं।

हद तो तब हो गई जब महिला कर्मचारियों ने महिला दिवस पर भी हड़ताल जारी रखी और होली का त्योहार भी मनाने से इंकार कर दिया, फिर भी प्रशासन की आंखें नहीं खुलीं। जब पत्रकारों ने विश्वविद्यालय प्रशासन से जवाब मांगने की कोशिश की, तो जिम्मेदार अधिकारी फोन तक उठाने को तैयार नहीं था। आखिर इस विश्वविद्यालय में यह तानाशाही कब तक चलेगी? कर्मचारी साफ कह चुके हैं कि वे बिना न्याय पाए पीछे नहीं हटेंगे। सवाल है कि क्या विश्वविद्यालय प्रशासन इस अन्याय को जारी रखेगा या फिर नानाजी देशमुख के ग्राम्य विकास के सपनों को भ्रष्टाचार की आग में झोंक देगा?

ब्लॉक स्तरीय स्कूल चलो व संचारी रोग अभियान का शुभारंभ

- सीएम योगी ने किया लाइव प्रसारण

स्कूल चलो अभियान में शामिल बच्चे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एक अप्रैल को ब्लॉक मऊ के उच्च प्राथमिक विद्यालय व प्राथमिक विद्यालय अहिरी में स्कूल चलो अभियान और संचारी रोग अभियान का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर खंड शिक्षा अधिकारी मऊ, कृष्ण दत्त पांडेय ने रैली का उद्घाटन किया। खंड शिक्षा अधिकारी ने अपने संबोधन में स्वच्छता व मच्छरों के माध्यम से फैलने वाले संचारी रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की बात की। बताया कि इस रैली का उद्देश्य बच्चों के माध्यम से जन समुदाय को भी जागरूक करना है ताकि संचारी रोगों की रोकथाम की जा सके। इसके बाद, कार्यक्रम में मौजूद अतिथियों का स्वागत विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष भवानी दीन व प्रधानाध्यापक शारदेंदु शुक्ला ने किया।

कार्यक्रम में नगर पंचायत मऊ के अध्यक्ष अमित द्विवेदी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया व मेधावी बच्चों को पुरस्कृत किया। बच्चों के प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखकर सभी अतिथि काफी प्रसन्न हुए। इसके बाद, नए सत्र में दाखिला लेने वाले बच्चों को पुस्तकों का वितरण किया गया। खंड शिक्षा अधिकारी मऊ ने लोगों से अपील की कि वे नए सत्र में ज्यादा से ज्यादा बच्चों का नामांकन कराएं। कार्यक्रम का लाइव प्रसारण सीएम योगी आदित्यनाथ ने बरेली से शुरू किए गए स्कूल चलो अभियान के तहत ब्लॉक स्तर पर उच्च प्राथमिक विद्यालय अहिरी में किया गया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षक संघ के वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष आलोक गर्ग, ग्राम प्रधान राम चरण व प्राथमिक विद्यालय अहिरी के समस्त स्टाफ के साथ-साथ बीआरसी के सहायक राकेश त्रिपाठी, विद्यालय स्टाफ सदस्य विद्याभूषण, शीतल सिंह, इन्दु गौतम, जितेंद्र सिंह व अन्य मौजूद रहे।

डीएम ने लू से बचाव को जारी किया कार्य योजना, विभागों को दी जिम्मेदारी

चित्रकूट। डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने उत्तर प्रदेश शासन के निर्देशों के अनुरूप लू (हीट वेव) से बचाव और राहत कार्यों के लिए एक व्यापक कार्य योजना तैयार करने के लिए संबंधित विभागों को जिम्मेदारी सौंपी है। सभी विभागों को निर्देशित किया कि अपनी-अपनी स्टैण्डर्ड आपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) तैयार करें व हीट वेव से बचाव की कार्य योजना शासन को भेजें।

इस योजना के तहत, जनपद, तहसील और ब्लॉक स्तर पर नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। अपर जिलाधिकारी (वि-रा) को जिले स्तर, उपजिलाधिकारियों को तहसील स्तर व खंड विकास अधिकारियों को ब्लॉक स्तर पर नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। स्वास्थ्य विभाग को विशेष रूप से लू-प्रकोप से बचाव के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने, ग्रामीण स्तर पर कार्यकताओं को अलर्ट जारी करने और अस्पतालों में हीट स्ट्रोक से प्रभावित व्यक्तियों के लिए वार्ड की व्यवस्था करने का निर्देश दिया गया है। इसके अलावा, शीतल पेयजल, ओआरएस और आवश्यक दवाओं का पर्याप्त स्टॉक रखने के लिए भी दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। परिवहन विभाग को बस स्टैंड और टैक्सी स्टैंड पर शीतल पेयजल, छाया और पंखों की व्यवस्था सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। पशुपालन विभाग को मवेशियों की सुरक्षा के लिए हीट वेव एक्शन प्लान तैयार करने, पशुओं के लिए पानी की व्यवस्था और टीकाकरण की नियमित निगरानी करने के निर्देश दिए गए हैं।

इसके अलावा, शिक्षा, वन, अग्निशमन, और पर्यटन विभाग को भी लू से बचाव के लिए आवश्यक उपायों को लागू करने के आदेश दिए गए हैं। सभी विभागों से कहा है कि वे अपने विभागवार कार्य योजनाओं को एक सप्ताह के भीतर आपदा प्रबंधन विभाग को उपलब्ध कराएं।

जिले के झारखंडी देवी मंदिर में महिला पुलिसकर्मी की लापरवाही

- श्रद्धालुओं में गुस्सा, कार्रवाई की मांग

बहस करते पुलिस व श्रद्धालु

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले के प्रसिद्ध झारखंडी देवी मंदिर में मंगलवार को एक महिला पुलिसकर्मी के लापरवाह व्यवहार ने मंदिर परिसर में हलचल मचा दी। महिला पुलिसकर्मी, जो मंदिर में तैनात थीं, अपनी ड्यूटी की जगह छोड़कर एकांत में बैठकर मोबाइल पर व्यस्त हो गईं। इस दौरान, मंदिर में बढ़ती भीड़ और श्रद्धालुओं के बीच होने वाली धक्का-मुक्की से स्थिति बिगड़ गई, लेकिन पुलिसकर्मी अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़े मोबाइल चलाती रहीं।

मंदिर में श्रद्धालुओं के बढ़ते गुस्से ने उसे और भी जटिल बना दिया। जब श्रद्धालुओं ने महिला पुलिसकर्मी से उनकी लापरवाही पर आपत्ति जताई, तो पुलिसकर्मी ने रौब दिखाते हुए शिकायत करने की धमकी दे डाली। एक अन्य दरोगा ने इस विवाद को सुलझाने की कोशिश की, लेकिन महिला पुलिसकर्मी का जवाब थाः बहस और विवाद। नतीजतन, मंदिर परिसर में स्थिति और भी तनावपूर्ण हो गई। इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, जिसमें महिला पुलिसकर्मी की लापरवाही और श्रद्धालुओं से उनकी बहस साफ दिख रही है। इस वीडियो ने ना केवल मंदिर के अधिकारियों को हैरान किया, बल्कि पूरी पुलिस विभाग की छवि को भी आघात पहुंचाया। मंदिर व्यवस्थापक ने महिला पुलिसकर्मी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। उनका कहना है कि पुलिसकर्मियों का मंदिर में तैनाती का मुख्य उद्देश्य सुरक्षा और व्यवस्था बनाए रखना है, न कि निजी कामों में लापरवाही करना। इसके अलावा, श्रद्धालुओं की सुरक्षा में ढिलाई से मंदिर की प्रतिष्ठा पर भी असर पड़ सकता है। मंदिर अधिकारियों ने इस घटना को बेहद गंभीरता से लिया है और इस पर जांच करने का निर्णय लिया है।

दो पहिया वाहनों मे हेलमेट व चार पहिया वाहनों में लगाये सीटबेल्ट : जिलाधिकारी

बाँदा। जिलाधिकारी जे0 रीभा की अध्यक्षता में कलेक्टेट सभागार में सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने पुलिस विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि कलेक्टेट, विकास भवन, पुलिस अधीक्षक कार्यालय में आने-जाने वाले समस्त लोगों की दो पहिया वाहन संचालन करने में हेलमेट का उपयोग करने हेतु सघन रूप से चेकिंग किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने परिवहन विभाग द्वारा व्यवसायिक वाहनों विशेषकर टैज्क्टर की ट्रालियों में अभियान चलाकर रिफलेक्टर टेप लगाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने मार्गवार हुई दुर्घटनाओं की समीक्षा करते हुए सड़क मार्ग में होने वाली दुर्घटनाओं की सूचना प्राप्त होने पर तत्काल चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराये जाने के निर्देश दिये तथा सड़क दुर्घटनाओं के कारणों के सम्बन्ध में भी विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिये। उन्होंने जाम की समस्या से निपटने के लिए तथा ई-रिक्शा के संचालन को व्यवस्थित रूप से करने के सम्बन्ध में ई-रिक्शा संचालन का वन वे रूट बनाये जाने के निर्देश दिये।

उन्होंने ओवरलोड वाहनों के विरूद्ध कडी कार्यवाही किये जाने हेतु पुलिस एवं परिवहन विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया तथा भारी वाहनों को चिन्हित करते हुए निर्धारित अवधि में ही संचालित किये जाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने सड़क किनारे खडे वाहनों में अन्य वाहनों के टकराने से होने वाली दुर्घटनाओं को दृष्टिगत रखते हुए लोगों में जागरूकता लाकर वाहनों का संचालन निर्धारित मार्गों पर गति धीमी रखने के लिए कार्यवाही करने हेतु सम्भागीय परिवहन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये। सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए पुलिस, परिवहन विभाग द्वारा जनपद के अधिक से अधिक विद्यालयों में बच्चों को सड़क सुरक्षा की जागरूकता के साथ यातायात प्रबन्धन का प्रशिक्षण भी दिलाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने पेट्रोल पम्प संचालकों को भी दो पहिया वाहन संचालन करने वालों को हेलमेट लगाने हेतु जागरूक किये जाने तथा सड़क पर स्टन्ट करने वालों, तेज गति से वाहन संचालित करने वालों एवं नशे का सेवन कर वाहन संचालन करने वालों के विरूद्ध भी कार्यवाही किये जाने के निर्देश पुलिस एवं परिवहन विभाग के अधिकारियों को दिये।

उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु एनएचएआई के अधिकारियों को बॉदा तिन्दवारी फतेहपुर मार्ग में सड़क पर गड्ढे होने पर सड़क की तत्काल मरम्मत कार्य पूर्ण कराये जाने के निर्देश एनएचआई के अधिकारी को दिये। उन्होंने भारी वाहनों को प्रतिबन्धित समय में शहर में प्रवेश करने की चेकिंग कराये जाने के भी निर्देश देते हुए इसका कडाई से अनुपालन सुनिश्चित किये जाने के निर्देश दिये।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी वेद प्रकाश मौर्य, अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 राजेश कुमार, एआरटीओ शंकर सिंह, मनोज कुमार पाण्डेय, अधिशाषी अभियंता, लोक निर्माण विभाग प्रान्तीय खण्ड, राजेश कुमार, अधिशाषी अभियंता लोक निर्माण विभाग निर्माण खण्ड-1, पीटीओ, सहित क्षेत्राधिकारी पुलिस, तथा सम्बन्धित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बरेठी में विशाल नेत्र परीक्षण एवं स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट जानकी कुंड के तत्वावधान में विकास पथ सेवा संस्थान ने सेवा भारती के सहयोग से बरेठी गांव में विशाल नेत्र परीक्षण, स्वास्थ्य शिविर एवं फ्रूट जूस वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एसपी अरुण कुमार सिंह रहे, जबकि अध्यक्षता समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया ने की।

शिविर में हंस फाउंडेशन की टीम ने ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया, वहीं जानकी कुंड नेत्र चिकित्सालय के सैकड़ों ग्रामीणों की नेत्र जांच की गई। जांच के बाद 150 नेत्र रोगियों को निःशुल्क चश्मे वितरित किए गए तथा 12 मोतियाबिंद रोगियों को ऑपरेशन को चिन्हित कर जानकी कुंड नेत्र चिकित्सालय भेजा गया। विकास पथ सेवा संस्थान ने डाबर इंडिया लिमिटेड के सहयोग से सभी को फ्रूट जूस,

नेत्र शिविर में चस्मा लगाती ग्रामीण व साथ में अधिकारीगण

आयुर्वेदिक हनीटस, शुगर फ्री खांसी औषधि एवं हाजमोला का वितरण किया। एसपी अरुण कुमार सिंह ने स्वयं स्वास्थ्य परीक्षण कराया व जनता से समय-समय पर स्वास्थ्य जांच कराने की अपील की। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के तैलीय चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन से हुआ। समाजसेवी सभासद शंकर प्रसाद यादव ने सभी अतिथियों को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र भेंट कर स्वागत किया।

मुख्य अतिथि अरुण कुमार सिंह ने कहा कि स्वास्थ्य जागरूकता और चिकित्सा सुविधाओं तक ग्रामीणों की पहुंच सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिकता है। वहीं समाज कल्याण अधिकारी भदौरिया ने कहा कि ऐसे प्रयासों से समाज में स्वास्थ्य सेवाएं अधिक प्रभावी होती हैं और एक स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में योगदान मिलता है। सभासद एवं समाजसेवी शंकर प्रसाद यादव ने सभी सहयोगी संस्थाओं का आभार व्यक्त किया और कहा कि भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम किए जाएंगे। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाध्यापक अशोक त्रिपाठी ने सभी अतिथियों व सहयोगी संस्थानों का धन्यवाद किया। संचालन डॉ. प्रभाकर सिंह ने किया, जिन्होंने संस्थान की अन्य स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों की जानकारी दी।

आगामी 10 मई को होगी राष्ट्रीय लोक अदालत

चित्रकूट। अपर जिला जज व सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीलू मेनवाल ने बताया कि माननीय उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के 27 मार्च को जारी पत्र के अनुसार, 10 मई को चित्रकूट के दीवानी न्यायालय, सभी राजस्व न्यायालय, बाह्य न्यायालय मऊ, और ग्राम न्यायालय मानिकपुर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इस लोक अदालत में विभिन्न प्रकार के मामलों का निस्तारण किया जाएगा।

भूकंप के बाद मलबे में कोई कितनी देर तक जिंदा रह सकता है

म्यांमार
म्यांमार में आए भूकंप की वजह से मरने वालों का आंकड़ा 2,000 पार कर चुका है. भूकंप के बाद मलबे में दबे लोगों के लिए जिंदा रहना कई चीजों पर निर्भर करता है. शुक्रवार को आए 7.7 तीव्रता के भूकंप के बाद म्यांमार और थाईलैंड में बचाव टीमें मलबे में दबे लोगों को ढूंढ रही हैं. म्यांमार में मरने वालों का आंकड़ा 2,000 पार कर चुका है. थाईलैंड में कम-से-कम 18 लोग मारे गए हैं. इसमें सभी मुख्य रूप से एक बड़े निर्माण स्थल पर मारे गए.

किसी भी भूकंप के बाद मलबे में दबे अधिकांश लोगों को 24 घंटों के अंदर बचा लिया जाता है. जानकारों का कहना है कि हर बीतते दिन के साथ बचने की संभावना कम होती जाती है. अधिकांश पीड़ित गिरते हुए पत्थरों और मलबे के अन्य टुकड़ों की वजह से या तो बुरी तरह घायल होते हैं या दबे हुए होते हैं.

सुरक्षित जगह पर होना जरूरी

ब्राउन यूनिवर्सिटी में जियोफिजिसिस्ट विक्टर साई ने ईमेल पर बताया कि दबे हुए लोगों के बचने की संभावना बढ़ जाती है अगर वो एक ऐसे इलाके में हों जहां कोई मलबा ना हो, जैसे किसी मजबूत टेबल के नीचे. इससे चोट लगने का खतरा कम हो जाता है और वो बचाए जाने तक सुरक्षित रूप से इंतजार कर सकते हैं. जानकार इसे 'बचने लायक खाली' जगह कहते हैं.

जॉर्ज वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी में एसोसिएट प्रोफेसर डॉक्टर जोसफ बारबरा का कहना है कि इमारत के ढह जाने की वजह से अगर आग, धुंआ या जहरीले केमिकल निकले हों तो इसे मलबे में फंसे लोगों के जिंदा रहने की संभावना कम हो जाती है. इसके अलावा, जैसे-जैसे दिन बीतते जाएंगे, सांस लेने के लिए हवा और पीने के लिए पानी का होना बेहद जरूरी है. बारबरा ने कहा, "आप बिना खाने के थोड़े समय तक जिंदा रह सकते हैं. बिना पानी के आप कम देर तक जिंदा रह पाएंगे."

जहां कोई फंसा हो, वहां का तापमान भी जिंदा रहने की संभावना पर असर डाल सकता है और मलबे के बाहर का तापमान बचाव मिशन को प्रभावित कर सकता है. म्यांमार में बिजली के कटने और कमजोर संचार व्यवस्था ने राहत कार्य को धीमा कर दिया है. कई लोग 40 डिग्री सेल्सियस से भी ज्यादा तापमान में, जिंदा बचने वालों को अपने हाथों से खोज रहे हैं. भारी मशीनों की कमी ने इन कोशिशों को धीमा कर दिया है. बारबरा कहती हैं कि बचने वालों के लिए मलबे से निकाले जाने से पहले जरूरी मेडिकल देखभाल मिलना जरूरी है. अगर ऐसा नहीं किया गया तो कुचली हुई मांसपेशियों से निकले टॉक्सिन के स्तर के बढ़ने की वजह से पीड़ित बचाए जाने के बाद शॉक में जा सकता है.

जापान में 2011 में आए भूकंप और सुनामी के बाद, एक किशोर लड़के और उसकी 80 साल की दादी को उनके ढह चुके घर के मलबे में नौ दिनों के बाद जिंदा पाया गया था. उसके एक साल पहले हैती के पोर्ट-ओ-प्रिंस में 16 साल की एक लड़की को भूकंप के मलबे से 15 दिनों के बाद बचाया गया था.

भूकंप के दौरान क्या करें

भूकंप के दौरान बचने के लिए सबसे अच्छे तरीके इस पर निर्भर करते हैं कि आप दुनिया के किस कोने में हैं. सक्रिय फॉल्ट लाइनों वाले इलाकों में इमारतें बनाने के नियमों को अक्सर भूकंप सहन करने के लिए डिजाइन किया जाता है।

राजनीतिक दलों में टकराव जारी, बीएनपी और जमात के बीच झड़प, कई घायल

ढाका। बांग्लादेश में दो प्रमुख राजनीतिक दलों - बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी और जमात-ए-इस्लामी के बीच हिंसक झड़प हुई जिसमें कई लोग घायल हो गए। संघर्ष के दौरान कुल चार दुकानों में तोड़फोड़ की गई, पांच मोटरसाइकिलों और एक वैन को आग लगा दी गई।

स्थानीय मीडिया के अनुसार, राजशाही के बाघा उपजिला के बाउसा यूनियन में यह संघर्ष हुआ। इसका कारण कमजोर समूह विकास (वीजीडी) कार्ड वितरित करने में कथित भ्रष्टाचार का मुद्दा था।

स्थानीय प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हिंसा तब शुरू हुई जब बीएनपी की स्टूडेंट विंग, 'छात्र दल' के कार्यकताओं ने कथित तौर पर जमात की छात्र शाखा, 'इस्लामी छात्र शिबिर' पर हमला किया। जवाबी कार्रवाई में शिबिर कार्यकताओं ने बाद में बीएनपी कार्यकताओं पर हमला किया।

बांग्लादेश के प्रमुख अखबार 'द डेली स्टार' की रिपोर्ट के अनुसार, इन घटनाओं के बाद बीएनपी समर्थकों ने कथित तौर पर दुकानों में तोड़फोड़ की और जमात समर्थकों के वाहनों को आग लगा दी।

बीएनपी और जमात दोनों ने ही झड़प की शुरूआत के लिए एक-दूसरे को दोषी ठहराया।

बाघा उपजिला क्षेत्र के बसुआ यूनियन में वीजीडी कार्ड के कथित दुरुपयोग को लेकर पहले हुए विवाद के बाद दोनों पक्षों के बीच यह झड़प हुई।

हाल ही में पुलिस की मध्यस्थता से दोनों दलों के बीच हुए समझौते के बाद, जमात ने दावा किया कि बीएनपी समर्थकों ने उनके सदस्यों को निशाना बनाया, जिसमें 30 मार्च को एक छात्र नेता की हत्या का प्रयास भी शामिल है।

इसके अलावा, जमात ने अपने कार्यकताओं के घरों और व्यवसायों पर हमलों की रिपोर्ट की। उन्होंने न्याय की मांग की और अधिकारियों से जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने अपील की।

हालांकि, बीएनपी नेता रेजाउल ने जमात के आरोपों का खंडन करते हुए दावा किया कि उनके छात्र दल के नेता राजीब अहमद इफ्तार के बाद चाय पी रहे थे, तभी शिबिर कार्यकताओं के एक समूह ने उन पर अकारण हमला कर दिया। उन्होंने कहा, "राजीब का फिलहाल राजशाही मेडिकल कॉलेज अस्पताल में गंभीर हालत में इलाज चल रहा है। अभी तक कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की गई है। राजीब के ठीक होने के बाद हम आगे की कार्रवाई करेंगे।"

यूक्रेन संघर्ष-विराम वार्ता पर पुतिन से 'बहुत नाराज' ट्रंप

अमेरिका
अमेरिकी प्रसारक एनबीसी के मुताबिक, राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने कहा कि वह यूक्रेन संघर्ष-विराम वार्ता को लेकर रूसी राष्ट्रपति पुतिन से "बहुत नाराज" हैं और उन्होंने रूसी तेल पर सेकेंडरी टैरिफ लगाने की धमकी दी है.

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने 30 मार्च (रविवार) को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के प्रति नाराजगी जाहिर की. उन्होंने चेतावनी दी कि अगर अमेरिका और रूस यूक्रेन में लड़ाई रोकने के लिए किसी समझौते पर नहीं पहुंचे तो वह रूसी तेल पर सेकेंडरी टैरिफ (अतिरिक्त आर्थिक पाबंदियां) लगाएंगे. यह टिप्पणियां ऐसे समय में में आई हैं जब अमेरिका, सऊदी अरब की मेजबानी में यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध खत्म करने के लिए कोशिशें कर रहा है.

पुतिन से क्यों 'नाराज' हैं ट्रंप

अमेरिकी न्यूज चैनल एनबीसी की पत्रकार क्रिस्टन वेलकर ने कहा कि ट्रंप ने उन्हें फोन पर दिए एक विशेष साक्षात्कार में रूसी राष्ट्राध्यक्ष के प्रति अपनी निराशा व्यक्त की.

ट्रंप ने कहा, "अगर रूस और मैं, यूक्रेन में खूनखराबा रोकने के लिए कोई समझौता करने में असमर्थ रहते हैं।

अमेरिका ने तिब्बत में प्रवेश को लेकर चीनी अधिकारियों पर वीजा प्रतिबंध लगाया : रुबियो

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा कि अमेरिका ने विदेशियों को तिब्बत में प्रवेश की अनुमति देने के लिए जिम्मेदार चीनी अधिकारियों पर वीजा प्रतिबंध लगा दिया है।

रुबियो ने कहा कि अतिरिक्त वीजा प्रतिबंध इसलिए लगाए जा रहे हैं क्योंकि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अमेरिकी राजनयिकों, पत्रकारों और अन्य अंतर्राष्ट्रीय पर्यवेक्षकों को तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) और चीन के अन्य तिब्बती क्षेत्रों में प्रवेश देने से इनकार कर दिया है

जबकि चीनी राजनयिकों और पत्रकारों को अमेरिका में व्यापक पहुंच प्राप्त है। रुबियो ने एक बयान में कहा कि पारस्परिकता की यह कमी अस्वीकार्य है। उन्होंने चीन के नेतृत्व से दृष्टिकोण में अंतर को समाप्त करने तथा राजनयिकों को चीन के निर्दिष्ट क्षेत्रों तक पहुंच की अनुमति प्रदान करने का आह्वान किया।

हालांकि विदेश मंत्री ने यह नहीं बताया कि प्रतिबंध वास्तव में किसके खिलाफ लगाए गए हैं। परंपरागत रूप से, विदेश विभाग इसे सार्वजनिक नहीं करता है, बल्कि वीजा के बारे में जानकारी की आंतरिक प्रकृति पर बल देता है। लगभग 500 वर्षों तक मंगोल जुंगर खानते द्वारा शासित होने के बाद, तिब्बत 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में चीन के किंग राजवंश के नियंत्रण में आया।

म्यांमार में आए घातक भूकंप के कारण एक सप्ताह का राष्ट्रीय शोक घोषित

मांडले। म्यांमार के राज्य प्रशासन परिषद के अध्यक्ष वरिष्ठ जनरल मिन आंग ह्लाइंग ने सोमवार को 28 मार्च को देश में आए 7.7 तीव्रता के भूकंप के बाद एक सप्ताह के शोक की घोषणा की।

भूकंप से हुई क्षति और जानमाल के नुकसान के प्रति सहानुभूति जताते हुए 31 मार्च से 6 अप्रैल तक की अवधि को राष्ट्रीय शोक दिवस घोषित किया गया है। उन्होंने कहा कि इस दौरान राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा।

समाचार एजेंसी श?िन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, रविवार को म्यांमार की राज्य प्रशासन परिषद के अनुसार, इस भीषण भूकंप में लगभग 1,700 लोग मारे गए, 3,400 घायल हुए और 300 लोग लापता हैं।

म्यांमार के मौसम विज्ञान और जल विज्ञान

विभाग ने बताया कि सोमवार सुबह तक 2.8 से 7.5 तीव्रता के 36 झटके महसूस किए गए हैं। शुक्रवार को म्यांमार के मांडले क्षेत्र में 7.7 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया, जिसके कुछ मिनट बाद 6.4 तीव्रता का भूकंप आया, जिससे कई देशों में भारी जनहानि और क्षति हुई।

भूकंप का केंद्र मांडले से केवल 20 किमी दूर था, जो देश का दूसरा सबसे बड़ा शहर है और इसकी आबादी 1.5 मिलियन है। प्रतिक्रिया में, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन समिति ने सागाइंग क्षेत्र, मांडले क्षेत्र, मैगवे क्षेत्र, शान राज्य के उत्तर पूर्वी भाग, ने पी ताव की राजधानी और बागो क्षेत्र में आपातकाल की स्थिति घोषित कर दी।

बचाव अभियान अभी भी जारी है, जबकि प्रभावित आबादी की गंभीर जरूरतों को पूरा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय राहत प्रयासों को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है।

दक्षिण में मांडले और यांगून को जोड़ने वाली कई प्रमुख सड़कें क्षतिग्रस्त या अवरुद्ध हो गईं,

जबकि मांडले और ने पी ताव में एयरपोर्ट को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया। वहीं, सभी उड़ानें रद्द कर दी गईं।

चीन में कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मानक लागू होंगे

बीजिंग। चीन में 1 अप्रैल से कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मानक लागू होने वाले हैं। डेटा सुरक्षा प्रौद्योगिकी में इंटरनेट प्लेटफॉर्म और उत्पाद सेवा में व्यक्तिगत जानकारी के प्रसंस्करण के बारे में नियम में राष्ट्रीय मानक निर्धारित किया गया है। इसमें इंटरनेट प्लेटफॉर्म और उत्पाद सेवा में व्यक्तिगत जानकारी के प्रसंस्करण के नियम की बुनियादी मांग, संकलन प्रक्रिया, नियम की विषय-वस्तु, प्रकाशन के तरीके और विवाद के समाधान व निपटारे आदि शामिल हैं। मानक के लागू होने से इंटरनेट यूजर्स की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा में मदद मिलेगी और व्यक्तिगत जानकारी से जुड़े प्रौद्योगिकी उत्पादों

व परामर्श सेवाओं का स्वस्थ और व्यवस्थित विकास किया जाएगा। नेटवर्क सुरक्षा प्रौद्योगिकी में स्मार्ट डोर लॉक नेटवर्क सुरक्षा तकनीकी निर्देश के राष्ट्रीय मानक में स्मार्ट डोर लॉक के लिए नेटवर्क सुरक्षा तकनीकी की आवश्यकता, सुरक्षा स्तर के वर्गीकरण और मूल्यांकन के तरीके को निर्धारित किया गया। इससे दूरस्थ नेटवर्क हमलों की रोकथाम, यूजर्स की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा और मकानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में समर्थन किया जाएगा।

वर्ष 2025 चीनी इंटरनेट मीडिया मंच उद्घाटित

बीजिंग। चीन के राष्ट्रीय साइबरस्पेस प्रशासन, चाइना मीडिया ग्रुप (सीएमजी) और क्वांगशी च्वांग स्वायत्त प्रदेश के साइबरस्पेस समिति के संयुक्त तत्वावधान में वर्ष 2025 चीनी इंटरनेट मीडिया मंच क्वांगशी च्वांग स्वायत्त प्रदेश के नाननिंग में उद्घाटित हुआ।

इस मौके पर राष्ट्रीय साइबरस्पेस प्रशासन के प्रमुख च्वांग रोंगवन ने कहा कि 20वीं सीपीसी केंद्रीय समिति के तीसरे पूर्णाधिवेशन में मुख्यधारा मीडिया में व्यवस्थागत परिवर्तन बढ़ाने पर जोर दिया गया। इससे इंटरनेट मीडिया के सुधार

और विकास की दिशा फिर से स्पष्ट की गई। हमें मजबूत इंटरनेट देश के निर्माण के बारे में राष्ट्रपति शी चिनफिंग की विचारधारा के अनुसार डिजिटलीकरण, नेटवर्किंग और इंटेलिजेंस की प्रवृत्ति के अनुकूल होने में इंटरनेट मीडिया का मार्गदर्शन करना होगा।

वहीं, सीएमजी के उप महानिदेशक वांग श्याओचन ने कहा कि दुनिया में सबसे बड़ी मीडिया संस्था होने के नाते सीएमजी हमेशा राष्ट्रपति शी चिनफिंग की नए युग में चीनी विशेषता वाले समाजवाद की विचारधारा के अनुसार प्रयास करता है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

दक्षिण कोरिया : राष्ट्रपति यून के महाभियोग पर 4 अप्रैल को फैसला सुनाएगा संवैधानिक न्यायालय

सोल। दक्षिण कोरियाई संवैधानिक न्यायालय ने कहा कि वह शुक्रवार (4 अप्रैल) सुबह 11 बजे राष्ट्रपति यून सूक योल के महाभियोग पर अपना फैसला सुनाएगा। उम्मीद है कि इस फैसले से दिसंबर में मार्शल लॉ लागू होने के बाद से पैदा हुई राजनीतिक उथल-पुथल समाप्त होने की उम्मीद बढ़ गई है। अदालत ने मंगलवार को प्रेस को जारी नोटिस में कहा कि फैसला अदालत से सुनाया जाएगा और इसका सीधा प्रसारण किया जाएगा, साथ ही आम जनता की उपस्थिति की भी अनुमति होगी।

यून के खिलाफ नेशनल असेंबली की ओर से महाभियोग पारित करने के लगभग चार महीने बाद आएगा यह फैसला आ

यून पर मार्शल लॉ लागू करके संविधान का उल्लंघन करने के आरोप में महाभियोग प्रस्ताव लाया गया था। अन्य आरोपों में नेशनल असेंबली में सेना भेजने और प्रमुख राजनेताओं की गिरफ्तारी का आदेश देना।

यून ने कोई भी गलत काम करने से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि यह आदेश मुख्य विपक्षी दल को विधायी शक्ति के दुरुपयोग के लिए चेतावनी देने के लिए था।

संविधान के तहत, महाभियोग प्रस्ताव को बरकरार रखने के लिए कम से कम छह न्यायाधीशों की सहमति की आवश्यकता होती है। वर्तमान में बेंच पर आठ न्यायाधीश हैं।

योनहाप समाचार एजेंसी के मुताबिक न्यायालय यदि महाभियोग प्रस्ताव को बरकरार रखता है, तो यून को पद से हटा दिया जाएगा। अगर इसे खारिज कर दिया जाता है, तो उन्हें मई 2027 तक अपने शेष कार्यकाल को पूरा करने के लिए बहाल कर दिया जाएगा। यून की कानूनी टीम ने कहा कि फैसले के लिए अदालत में उनकी उपस्थिति अभी भी अनिश्चित है।

सत्तारूढ़ पीपुल पावर पार्टी और मुख्य विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी दोनों ने अदालत की घोषणा का स्वागत किया।

बता दें राष्ट्रपति यून ने 03 दिसंबर की रात को दक्षिण कोरिया में आपातकालीन मार्शल लॉ की घोषणा की, लेकिन संसद द्वारा इसके खिलाफ मतदान किए जाने के बाद इसे निरस्त कर दिया गया। मार्शल लॉ कुछ घंटों के लिए ही लागू रहा लेकिन इसने देश की राजनीति को हिला कर रख दिया।

नेशनल असेंबली ने राष्ट्रपति यून सुक-योल के महाभियोग प्रस्ताव पारित किया। प्रधानमंत्री हान डक-सू ने उनकी जगह ली लेकिन नेशनल असेंबली ने उनके खिलाफ भी महाभियोग पारित कर दिया।

पहली बार अंतरिक्ष में पहुंची एक जर्मन महिला

जर्मन
रबिया रोगे, स्पेसएक्स रॉकेट पर सवार होकर अंतरिक्ष में जाने वाली पहली जर्मन महिला बनी हैं. स्पेसएक्स ने बताया कि रोगे समेत चार अंतरिक्ष यात्रियों ने सोमवार (31 मार्च) को उड़ान भरी. यह लॉन्च अमेरिका के फ्लोरिडा स्थित केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन से हुआ और स्पेसएक्स ने इसे लाइव प्रसारित किया.

जर्मन एयरोस्पेस सेंटर के अनुसार, अब तक कोई जर्मन महिला अंतरिक्ष में नहीं गई थी. बर्लिन की रहने वाली रोगे ने ईटीएच ज्यूरिख में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और आईटी की पढ़ाई की है. इसके बाद अपनी डॉक्टरेट थीसिस के लिए वह नॉर्वेजियन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी में आ गईं.

स्पेसएक्स के ड्रैगन कैप्सूल में तीन से पांच दिन लंबे मिशन के दौरान यह टीम पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों का अध्ययन करेगी. इसके अलावा पृथ्वी से 425 से लेकर 450 किलोमीटर की ऊंचाई पर नॉर्दन लाइट्स जैसी "स्टीव" नाम की बैंगनी रोशनी को जांचेगी. स्पेसएक्स ने कहा कि फ्रैम2 नाम के इस मिशन में अंतरिक्ष में इंसानों की पहली एक्स-रे तस्वीरें भी ली जाएंगी और माइक्रोग्रैविटी में मशरूम उगाने की कोशिश भी होगी.

मिशन की कमान एक बिटकॉइन निवेशक के हाथ

इलॉन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स से यह फ्लाइट चीनी मूल के एक बिटकॉइन निवेशक चुन वांग ने बुक की थी. सोमवार को पहली यात्रा पर निकले इस क्रू में वांग के अलावा नॉर्वे की फिल्म निमार्ता यानिके मिकेलसन, जर्मन रोबोटिक्स रिसर्चर राबिया रोगे और ऑस्ट्रेलिया के ध्रुवीय खोजकर्ता एरिक फिलिप्स शामिल हैं.

इस यात्रा में स्पेसएक्स का फैल्कन-9 रॉकेट अटलांटिक महासागर के ऊपर दक्षिण की ओर बढ़ा, जिससे इन अंतरिक्ष यात्रियों को एक ऐसे मार्ग पर ले जाया गया जिस पर 64 वर्षों के मानवीय अंतरिक्ष यात्रा के इतिहास में पहले कभी उड़ान नहीं भरी गई थी.

फ्लोरिडा से दक्षिणी ध्रुव तक उनकी उड़ान का पहला चरण मुश्किल से आधे घंटे का था. उड़ान से पहले इस टीम ने करीब आठ महीने तक तैयारी की है, जिसमें अलास्का के मुश्किल हालात में कम जगह में जीने का अनुभव जुटाना शामिल है.

पढ़ें:अंतरिक्ष यात्रियों को होता है कैंसर और दिल की बीमारी का खतरा

क्रिप्टो कंपनियों- एफ2पूल और स्केटफिश के सह-संस्थापक वांग, व्यक्तिगत रूप से पहले ही ध्रुवीय क्षेत्रों का दौरा कर चुके हैं और अब इन्हें अंतरिक्ष से देखना चाहते हैं. हालांकि, वह इस बात का खुलासा नहीं करेंगे कि करीब साढ़े तीन दिन के इस चरम ध्रुवीय अनुभव के लिए उन्होंने इलॉन मस्क की स्पेसएक्स को कितना भुगतान किया है. यूरोपीय देश माल्टा के नागरिक बन चुके वांग ने उड़ान से पहले कहा कि यह यात्रा "सीमाओं को आगे बढ़ाने और ज्ञान साझा करने" के बारे में भी है.

फ्रैम2 मिशन का लक्ष्य

इस मिशन को "फ्रैम2" नाम, 19वीं सदी में आर्कटिक और अंटार्कटिक अभियानों के लिए बनाए गए प्रसिद्ध नॉर्वेजियन जहाज से मिला है. एक्स-रे और माइक्रोग्रैविटी में मशरूम उगाने जैसी गतिविधियों के अलावा वैज्ञानिकों को

उम्मीद है कि यह शोध भविष्य में मंगल ग्रह तक लंबी अवधि की अंतरिक्ष यात्रा के लिए जरूरी अनुभव जुटाएगा.

जब क्रू पृथ्वी पर वापस लौटेगा तो अतिरिक्त चिकित्सा सहायता के बिना अंतरिक्ष यान से बाहर निकलने की कोशिश करेगा. यह चरण एक अध्ययन का हिस्सा है ताकि रिसर्चरों को यह समझने में मदद मिल सके कि अंतरिक्ष यात्री, स्पेस फ्लाइट के बाद बुनियादी कामों को कितनी अच्छी तरह कर सकते हैं.अपोलो चंद्र मिशनों को छोड़कर, पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्र अंतरिक्ष यात्रियों की नजर से दूर रहे हैं. इनमें अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र (आईएसएस) पर जाने वाले अंतरिक्ष यात्री भी शामिल हैं. यहां तक कि अपोलो मिशनों पर भी उन्होंने पृथ्वी के ध्रुवों पर सीधे उड़ान नहीं भरी थी।